॥ श्रीजिनेश्वरदेवाय नमः ॥

जैनश्वेताम्बर तेरापंथी कृत

जिनज्ञान दर्पण।

प्रथम भाग।

लेखक—

लाडणु निवासी श्रावक

महालचन्द बयद।

प्रकाशक—

ईसरचन्द चोपड़ा,

गंगाशहर (बीकानेर)।

कलकत्ता,

२०१, हरीसन रोडके "नरसिंह प्रेस" में

बाबू रामप्रताप भार्गव

द्वारा मुद्रित।

प्रथम वार २००० — विना मूल्य

पुस्तक मिलने के पते

(१) भैरुँदान ईसरचन्द चोपड़ा,

मु० गंगाशहर,

जि० बीकानेर।

(२) भैरुँदान ईसरचन्द चोपड़ा,

२ पोर्चुगीज चर्च ष्ट्रीट,

कलकत्ता।

विषय-सूची

निवेदन

प्रिय पाठको ! मैंने यह "जिन ज्ञानदर्पण" नामक पुस्तक, अपनी अल्पबुद्धिके अनुसार, भव्य जीवोंके पठनार्थ, प्राचीन महर्षियों कृत चरचाके बोलोंके थोकड़ा, श्रीजिनेश्वर देव व पूज्य गणीराजके गुणोंके स्तवन, सझाय, ढाल, छन्द, सवैया गज़ल, और आषाढ़ मुनिको व्याख्यान सामायकरा बत्तीस दोष, चौंतीस अतिशय, पैंतीस वाणी, पञ्च मण्डलेका दोष, दशविधि, यति-धर्म, सतरह भेद-संयम, बयालीस दोष, बावन अणाचार, बहु श्रुति की सोलह उपमा, अष्ट सम्पदा, चौदह स्थानक समुर्छिम मनुष्य उपजे तथा एकलको चौढालियो इत्यादि संग्रह कर तैयार की है।

इस पुस्तकके तैयार करनेमें, भरसक सावधानी से काम लिया गया है; तथापि भूल करना मनुष्यका

स्वभाव है अतः थोड़ी या बहुत भूलें प्रायः प्रत्येक मनुष्यसे हो ही जाती हैं। जिसमें मैं न तो कोई सुलेखक हूँ और न लेखक ही हूँ और यह मेरा प्रथम साहस है फिर मुझसे ग़लती होना क्या आश्चर्य है? यदि प्रमादवश या मेरी अल्पज्ञताके कारण कुछ भूल चूक या त्रुटियाँ रह गई हों तो उदारहृदय पाठक मुझे क्षमा करें। मैंने यथावकाश इस पुस्तकको छपने बाद पढ़ लिया है। मेरी नज़रमें जहां जहां भूल दिखाई पड़ीं वहीं वहींसे उनको चुन चुनकर शुद्धाशुद्ध पत्र छपा दिया है। विज्ञ पाठक शुद्धाशुद्ध पत्रसे मिलाकर अपनी अपनी पुस्तकोंको शुद्ध करलें और इस कष्टके लिये मुझे अवश्य क्षमा करें। भूलें रहनेका कारण यह है कि यह पुस्तक बहुतही जल्दी छपी है इससे प्रूफ देखने का समय कम मिला। सम्भव है कि छपते समय कुछ अक्षर और मात्राएँ टूट गई हों। जो भूलें पाठकोंकी नज़र तले आवें उनसे मुझे सूचित कर दें। इस कृपाके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ रहूंगा और दूसरी आवृत्तिमें हठ त्यागकर उन भूलोंको सुधार दूँगा।

यदि जिन-धर्म प्रेमी पाठक इस पुस्तकसे कुछ भी लाभान्वित होंगे तो मैं अपने परिश्रमको सार्थक

समभूंगा। यदि जिनेश्वर देवके वचनोंके विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कडं।

आपका हितेच्छु

श्रावक महालचन्द बयद।
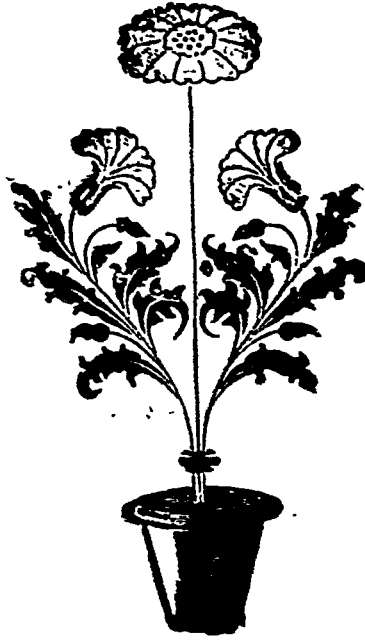
॥ गजल ॥

जिनेश्वर धर्म सारा है।

मेरे प्राणों से प्यारा है॥

जिनका ध्यान धर भाई।

श्रीजिनराज फरमाई॥

जिससे होत सुखदाई।

इसीसे दिल हमारा है॥ जिने॥१॥

जिनेश्वर नाम जो गावे।

कि भव से पार होजावे॥

जनम वो फेर ना पावे।

होय भवसिन्धु पारा है॥ जिने॥ २॥

ऐसे जिनराज प्यारे हैं।

जिन्होंने भक्त त्यारे हैं॥

जिन्होंने कर्म मारे हैं।

उन्हींका मो आधारा है॥ जिने॥ ३॥

विमुख जो धर्म से होवे।

पकड़ सिर अन्तमें रोवे॥

जिनेश्वर धर्म वो खोवे।

जिन्होंको नर्क प्यारा है॥ जिने॥ ४॥

नहीं नर भव जनम हारे ।
जिनेश्वर धर्म जो धारे ॥
वोही यम फांसको टारे ।
महालचंद दास थारा है ॥ जिने ॥ ५ ॥

—

दोहा । चौवीस जिन प्रणमी करी । वली भिक्षु गणीराज ॥ प्रणम्यांथी शिव सुख लहै । पामे भवोदधि पाज ॥ १ ॥ पंचम आरे अवतर्या । दान दया दिपाय ॥ सांसण नन्दण वन समो । दिन २ तेज सवाय ॥ २ ॥ वसु पट स्वाम कालुगणी । साहश जेम जिणन्द ॥ षटमत षट खण्ड साझवा । नवलज नाह नरिन्द ॥ ३ ॥ तेरो सर्ण लइ प्रभु । "जिन ज्ञान दर्पण" ताज ॥ करी प्रगट पढ़वा भणी । भव्य जीवों हित काज ॥ ४ ॥ पामें गुरु पसायथी । समकित रत्न सुजोय ॥ महालु कहै नित सेवियां । मनवांछित फल होय ॥ ५ ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥

अथ

॥ श्रीचउवीसजिनस्तुतिप्रारभः ॥

प्रथम ऋषभजिनस्तवनं

रागप्रभाति ।

बेकरजोडीप्रणमुंसदा ॥ युगआदेआदिजिणंदा ॥ कारमरिपुगजउपरे ॥ मृगराजमुणंदा ॥ प्रणमुंप्रथमजिणंदने ॥ जयजयजिणचंदा ॥१॥ एआंकणी ॥ अनुकूलप्रतिकूलसमसही ॥ तपविविधतपंदा ॥ चेतनतनभिन्नलेखवी ॥ ध्यानसुक्लध्यावंदा ॥ प्र० ॥२॥ पुद्गलसुखअरिपेखिया ॥ दुःखहेतुभयाला ॥ विरक्तचित्तविगयोडस्यो ॥ जाण्याप्रत्यक्षजाला ॥ प्र० ॥ ३ ॥ संवेगसरोवरजूलतां ॥ उपशमरसलीनो ॥ निंदास्तुतिसुखदुःख ॥ समभावसुचीनो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वांसीचंदनसमपणे ॥ समचित्तजिनध्याया ॥ इमतनसारतजीकरी ॥ प्रभुकेवलपाया ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हुंबलीहारीयाहरी ॥ वाहावाहाजिनराया ॥ वाइदशाकदआवसि ॥

मुझमनउमाया ॥ प्र० ॥ ६ ॥ संवतउगणीसेंभाद्रवे ॥ दशमीदित्यवार ॥ ऋषभजिनंदरटवेकरी ॥ हुउहर्ष- अपार ॥ प्र० ॥ ७ ॥

अथ अजितजिनस्तवन ।

अहोप्रभुअजितजिणेसरआपरो ॥ ध्यावुंध्यानहमेस हो ॥ अहोप्रभुअसरणसरणतुंहीसही ॥ मिटेशकल- कलेसहो ॥ अहोप्रभुतुमहीदायकशिवपंथना ॥ १ ॥ अहोप्रभुउपशमरसभरीआपरो ॥ वाणीसरसरसालहो ॥ अहोप्रभुतिनिसरणीमहामनोहरु ॥ सुण्यामिटेभ्रमजा लहो ॥ अ० ॥ २ ॥ अहोप्रभुउभयवंधणआपआखि या ॥ रागद्वेषविकरालहो ॥ अहोप्रभुहेतुएनरकनि- गोदना ॥ राच्यामुरखवालहो ॥ अ० ॥ ३ ॥ अहोप्रभु रमणीराखशणीसमीकही ॥ विषयवेलमोहंजालहो ॥ अहोप्रभुकामनेभोगकिंपाकशा ॥ दाख्यादीनदयाल- हो ॥ अ० ॥ ४ ॥ अहोप्रभुविविधउपदेशदेइकरी ॥ तंताख्यानरनारहो ॥ अहोप्रभुभवसिंधुपोततुंहीसही तुंहोजगतआधारहो ॥ अ० ॥ ५ ॥ अहोप्रभुसरणेआयो तुजसाहेवा ॥ वसीरह्याहीयामांयहो ॥ अहोप्रभुआगम वयणअंगीकरो ॥ रह्योध्यांनतुजध्यायहो ॥ अ० ॥ ६ ॥ अहोप्रभुसंवतओगणीसेंनेभाद्रवे ॥ दसमीआदित्यवार-

हो ॥ अहोप्रभुआपतणागुणगावीया ॥ वर्त्तीजयजय कारहो ॥ अ० ॥ ७ ॥

अथ संभवजिनस्तवन ।

संभवसाहिबसमरीये ॥ ध्यायोहोजिननिर्मलध्यानकें ॥ एकपुद्गलदृष्टथापीने ॥ कीधोहेमनमेरुसमानकेंसंभव साहिबसमरिये ॥ १ ॥ एआंकणी ॥ तनचंचलतामेटने हुआहेजगथीउदासीनकें ॥ ध्यानसुक्लथिरचित्तकरी ॥ उपशमसुखमेंहोइरह्यालीनकें ॥ सं० ॥२॥ सुखइंद्रादिकनांसहु ॥ जाणयाहोप्रभुअनीतअसारकें ॥ भोग भयंकरकटुकफल ॥ पेख्याहेंदुरगतदातारकें ॥ सं० ॥ ॥ ३ ॥ सुधासंवेगरसेंकरी ॥ पेख्याहेंपुद्गलमोहपासकें अरुचअनादरआणीने ॥ आत्मध्यानेकरतांविलासकें ॥ सं० ॥ ४ ॥ संगछांडीमनवशकरी ॥ इंद्रियदमनकहो दुरदंतकें ॥ विविधतपेकरीस्वामीजीं ॥ घातीकर्मनो कीधोअंतकें ॥ सं० ॥ ५ ॥ हुंतुजसरणेआवियो ॥ कर्मविदारणतुंप्रभुवीरकें ॥ तेंतनमनवचनवशकिया ॥ दुःकरकरणीकरणमहाधीरकें ॥ सं० ॥ ६ ॥ संवतओ गणीसनेभाद्रवे ॥ सुदिइग्यारसआणविनोदकें ॥ संभव साहिबसमरिया ॥ पामेहेमनअधिकप्रमोदकें ॥ सं० ॥ ७ ॥

अथ अभिनंदनजिस्तवन ।

तीर्थंकरहोचोथाजगभाणछांडियग्रहवासकरीमतिनिर्मली ॥ विषयविटंबनाहोतजियाविषफलजाण ॥ अभिनंदनवंदुंनितमनरली ॥१॥ एआंकणी ॥ दुःकरकरणीहोकोधीआपदयाल ॥ ध्यानशुधारससमदमनगली ॥ संगछांड्योहोजाणीमायाजालकी ॥ अ० ॥२॥ वीररसेकरीहोकीधीतपस्योविशाल ॥ अनित्यअशरणअसुभभावें अगदली ॥ जगभूठोहोजाण्योआपकृपाल ॥ अ० ॥३॥ आत्ममंत्रीहोसुखदातासमपरिणाम ॥ एहीजअमित्र अशुभभावेंकलकली ॥ एहवीभावनाहोभायांजिनगुणधाम ॥ अ० ॥४॥ लीनसंवेगेंहोध्यायांशुक्लध्यान ॥ चायकश्रेणीचढीहुआकेवली ॥ प्रभुपायाहोनिरावरणसुनाण ॥ अ० ॥५॥ उपशमरसनीहोबागरीप्रभुवाण ॥ तनमनप्रेमपायाजनसांभली ॥ तुमवचधारीहोपाम्यापरमकल्याण ॥ अ० ॥६॥ जिनअभिनंदनहोगायातनमनधार ॥ संवतओगणीसेंनेभाद्रवे अगदली ॥ सुदिइग्यारसहोहुओहर्षअपार ॥ अ० ॥७॥

॥ अथ सुमतिजिनस्तवन ॥

सुमतिजिणेसरसाहिबसोभता ॥ सुमतिकरणसंसार ॥ सुमतिजप्यांथीसुमतिवधेघणी ॥ सुमतिसुमतदातार ॥

सु० ॥ १॥ एआंकणी ॥ ध्यानसुधारसनिर्मलध्यायने ॥ पायाकेवलनाण ॥ वाणसरसवरजनबहुताख्या ॥ तिमरहरणजगभाण ॥ सु० ॥२॥ फिटिकसिंहासणजिन जीफावता ॥ तरुआशोकउदार ॥ छत्रचामरभामंडल भलकता ॥ सुरदुंदुभिभणकार ॥ सु० ॥३॥ पुष्पविष्टिवरसुरध्वनीदीपतां ॥ साहिबजगसिणगार ॥ अनंतज्ञानदर्शनसुखबलघणुं ॥ एदुवादशगुणश्रीकार॥ सु० ॥४॥ वाणीशुधारसउपशमरसभरी ॥ दुर्गतिमूलखपाय ॥ शिवसुखनाअरिशब्दादिककह्या ॥ जगतारकजिनराय ॥ सु० ॥५॥ अंतरजामीरेसरणेआपरे ॥ हुंआयोअवधार ॥ ध्यानतुमारोनिशदिनसांभरे ॥ सरणागतसुखकार ॥ सु० ॥६॥ संवतओगणीसेरेसुदपखभाद्रबे ॥ बारसमंगलवार॥ सुमतिजिणेसरसाहिबसमरिया ॥ आणंदहर्षअपार ॥सु०॥७॥

अथ पद्मजिनस्तवन ।

निर्लेपपद्मजिसाप्रभु ॥ पद्मप्रभुपीछाण ॥ संयमलीधोतिणसमें ॥ पायाचोथोनाण ॥ पद्मप्रभुनितसमरिये ॥१॥ एआंकणी ॥ ध्यानशुक्लप्रभुध्यायने ॥ पायाकेवलसोय ॥ दीनदयालतणीदिशा ॥ कहणीनआवेकोय ॥ पद्म०॥२॥ समदमउपशमरसभरी ॥ प्रभुतुमतणीवाणि ॥ त्रिभु-

वनतिलकतुंहीसही ॥ तुंहीजनकसमान ॥ पद्म० ॥३
तुंप्रभुकल्पतरुसमो ॥ तुंचिंतामणीसोय ॥ समरण
करताआपरो ॥ मनवांछितहोय ॥ पद्म० ॥४॥ सुखदा
इसहुजगभणी ॥ तुंहीदीनदयाल ॥ सरणेआयोतुज
साहिबा ॥ तुंहीपरमकृपाल ॥ पद्म० ॥५॥ गुणगातां
मनगहगहे ॥ सुखसंपतजाण ॥ विघ्नमिटेसमरण
कियां ॥ पामेपरमकल्याण ॥ पद्म०॥५॥ संवतओगणी
सैनेभाद्रवे ॥ सुदिबारसदेख॥ पद्मप्रभुरटाालाडणुं ॥
हूओहर्षविशेष ॥ पद्म०॥७॥

अथ सुपार्श्वजिनस्तवन।

सुपारससातमांजिणं दए ॥ त्यांनेसेवेसुरनरवृंदए ॥
सेवकपूरणआसए ॥ भजियेंनित्यस्वामिसुपासए ॥१॥
एआंकणी ॥ जनप्रतिबोधणकामए ॥ प्रभुवागरिवाण
अमामए ॥ संसारथीहुआउदाशए ॥भ०॥२॥ पाम्या
कामभोगथी उद्वेगए ॥ वलीउपजेपर्मसंवेगए ॥ एह
वातुमवचनसरसविलासए ॥भ० ॥३॥ घणीमीठीचक्री
नीखीरए ॥ वलीखीरसमुद्रनोनीरए ॥ एहथीतुम
वचनअधिकविमासए ॥भ०॥४॥ सांभलनेजनवृंदए॥
रोमरोममेंपामेंआनंदए॥जियांरीमिटेनरकादिकवासए
॥भ० ॥५॥ तुंप्रभुदीनदयालए ॥ तुंहीअसरणसरण

निहालए ।। हुंछुंतुमारोदासए ॥भ० ॥६॥ संवतओ गणीसिसोयए ॥ भाद्रवासुदितेरसजोयए ।। पोचौम ननीआसए ।।भ०।।७।।

अथ चंद्रप्रभुजिनस्तवन ।

होप्रभुचंदजिनेसरचंदजिस्या ।। वाणीशीतलचंदसी निहालहो ।। प्रभुउपशमरसजिनसांभले ।। मिटेकर्म भ्रममोहजालहो ॥ प्रभु० ।।१।। एआंकणी ।। हो प्रभु सूरतमुद्रासोभती ॥ वारूरूपअनूपविशालहो ॥ प्रभु इंद्रसुचिजिननिरखतां ॥ तेतोटप्तनहुवेनिहालहो ॥ प्रभु०॥२॥ अहोवीतरागप्रभुतुंहीसही ॥ तुमध्यानध्या वेचित्तरोकहो ॥ प्रभुतुमतुल्यतेहुवेध्यानथी॥ मनपाया पर्मसंतोषहो ॥ प्रभु०॥३॥ होप्रभुलीनपणेतुमेध्याविया ॥ पामेइंद्रादिकनीऋद्धिहो ॥ वलेविविधभांतसुखसं- पदा ।। लहेआंमोसहीयादिलब्धिहो ।। प्रभु० ॥ ४ ॥ नरेंद्रपदपामेसहो ॥ चरणसहीतध्यानतनमनहो ॥ वलेअहमिंद्रपदपावेसही ॥ निश्चलकियांथारोभजनहो॥ प्रभु० ॥५॥ होप्रभुसरणेआयोतुजसाहेबा ॥ तुमध्यान धरुंदिनरयणहो ।। प्रभुतुममिलवामुझमनउमह्यो ।। तुमसरणाथीसुखचेनहो ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ संवतओगणी सेनेभाद्रवे ॥ सुदितेरसबुधवार हो ॥ प्रभुचंद्रजिने श्वरसमरिया ॥ हुओआनंदहर्षअपारहो ॥ प्रभु० ॥७॥

अथ सुबुद्धिजिनस्तवन ।

सुबुद्धिकरीभजियसदा ॥ सुबुद्धिजिनेसरस्वामीहो ॥ पुष्पदंत्तनामेदुसरो ॥ जगअंतरजामीहो ॥ सुबुद्धिभजियेंसिरनामीहो ॥१॥ ऐआंकणी ॥ इंद्रनरिंद्रचंद्रते इंद्राणीअभिरामीहो॥ निरख निरख धापेनही ॥ ऐहवोरूपअमामीहो सुः ॥ २ ॥ स्वेतवरणप्रभुसोभतां वारूवाणअमामीहो ॥ उपशमरसजनसांभल्यां ॥ मिटेभवभवखामीहो सुः ॥३॥ समोसरणविचफावतां ॥ त्रिभुवनतिलकतमामीहो ॥ इंद्रथकीउपेघणां ॥ शिवदायकस्वामीहो सुः ॥४॥ मधुमकरंदतणीपरें ॥ सुरनरकरतसलामीहो ॥ तोपणरागव्यापेनही ॥ जीत्योमोहहरामीहो सुः ॥५॥ जेजोधाजगमेंघणा ॥ सिंघसाथेसगरामीहो ॥ तेमनइंद्रियवसकरी ॥ जोडीकेवलपामीहो ॥ सुः॥६॥ ओगणीसेंपुनमभाद्रवे ॥ प्रणमीसिरनामीहो ॥ मनचिंततवस्तुमिलें ॥ रटियाजिनस्वामीहो सुः ॥७॥

अथ शीतलजिनस्तवन ।

शीतलजिनशिवदायका ॥साहिबजी॥ शीतलचंदसमानहो ॥ निस्नेही ॥ शीतलअमृतसारिखा ॥ साहिबजी ॥ तप्तमिटेतुजध्यानहो ॥ निस्नेही ॥ सूरतथारीमनवसी

साहेबजी ॥१॥ निंदेवंदेतोभणीसहेवजी ॥ रागद्वेषनही तामहो ॥ निस्नेहो ॥ मोहदावानलतेंमेटियो ॥साहेब-जी ॥ गुणनीपनतुजनामहो निस्नेही ॥सु०॥२॥ नृत्य करेतुजआगलेंसाहेबजी ॥ इंद्राणीसुरनारहो ॥ नि-स्नेहो ॥ रागभावनहीउपजे ॥ साहेबजी ॥ अंतरतप्त निवारहो ॥ निस्नेही ॥ सु० ॥३॥ क्रोधमानमायालो-भनो ॥ साहेबजी ॥ अगनसुंअधिकीआगहो ॥ निस्ने-ही ॥ शुक्लध्यानरूपजलकरी ॥ साहेबजी ॥ थयाशी-तलिभूतमाहाभाग्यहो॥ निस्नेही ॥ सु०॥४॥ इंद्रीनो इंद्रीआकरा ॥ साहेबजी ॥ दुरजयनेदुरदंतहो ॥ नि-स्नेहो ॥ तेंजीत्यामनथिरकरी ॥ साहेबजी ॥ थरिउप-शमचितसंतहो ॥ निस्नेही ॥ सु० ॥५॥ अंतरजामी आपरो ॥ साहेबजी ॥ ध्यानधरूंदिनरयणहो ॥ नि-स्नेही ॥ वाहोदिशाकदआवशे ॥ साहेबजी ॥ होसि उत्कृष्टचेनहो ॥ निस्नेही ॥ सु० ॥६॥ उगणीसेपुनम भाद्रवे ॥ साहेबजी ॥ शीतलमोलवाकाजहो ॥ नि-स्नेही ॥ शीतलजिनजीनेसमरिया ॥ साहेबजी ॥ थि योशीतलहुवोआजहो ॥ निस्नेही ॥ सु० ॥ ७ ॥

अथ श्रीश्रेयांसजिनस्तवन ।

मोक्षमार्गश्रेयेसोभता॥ गिरवास्वामश्रेयांसउदाररे॥ जेजेश्रेयवस्तुसंसारमें॥ तेतेआपकरीअंगीकाररे २॥

श्रेयांसजिनेश्वरप्रणमुनितवेकरजोडरे॥ १॥ समितगु
प्तिदुधरगणा ॥ धर्मसुक्लध्यानउदाररे ॥ एश्रेयवस्तुभि
वद्दायनी ॥ आपआदरीहर्षअपाररे ॥ श्रे० ॥२॥ तन
चंचलतामेटने ॥ पद्मासनआपबिराजरे॥ उत्कृष्टोध्या
नतिणाकियो ॥ अतंतश्रीजिनराजरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥
इंद्रीयविषयविकारथी ॥ नरकादिकेरुलियोजीवरे ॥
कामनेभोगकिंपाकसा ॥ रहियेदुरथीदुरसदीवरे ॥श्रे०
॥४॥ संयमतपजपशीलए॥ शिवसाधनमहासुखकाररे॥
अनित्यअसरणअनंतए ॥ धरोनिर्मलध्यानउदाररे ॥
श्रे०॥ ॥५॥ स्त्रीयादिकनासंगते ॥ आलिंबनदुःखदा
ताररे ॥ अशुभआलिंबनछांडने ॥ धरोध्यानआलंबन
साररे ॥ श्रे०॥६॥ सरणेआयोतुजसाहिबा ॥ वारं
वारकरुंनमस्काररे ॥ उगणीसेपुनमभाद्रवे ॥ मुजव
र्त्याजयजयकाररे ॥श्रे०॥७॥

अथ श्रीवासुपुज्यजिनस्तवन ।

द्वादशमाजिनवरभजिये ॥ रागद्वेगमच्छरमायात
जिये ॥ लालवरणतनछविजाणी ॥ प्रभुवासपुज्यभजले
प्राणी ॥ १ ॥ बनीताजाणीवेतरणी ॥ शिवसुंदरवर
वाहुंसघणी ॥ कामभोगतज्याकिंपाकजाणी ॥ प्र०
॥ २ ॥ अंजनमंजणसुअलगा ॥ वलीपुष्फविलेपननही
वलगा ॥ कर्मकाष्ठाध्यानमुद्राधारी ॥ प्र० ॥३॥ इंद्र

थकीअधिकाओपे ॥ कारणागरकदेहिनहीकोपे ॥ वर
साकरदुधजिसीवाणी ॥ प्र० ॥४॥ स्त्रीस्नेहपासादुरदं
ता ॥ कह्यानरकनिगोदतणापंथा ॥ इहभवपरभव
दु.खदाणी ॥ प्र० ॥५॥ गजकुंभदलमृगराजहणी ॥ पण
दोहलीनिजआत्मादमणी ॥ इमसुणीबहुजीवचेत्याजा
णी ॥प्र०॥६॥ भाद्रवापुनमओगणीसो ॥ करजोड़नसु
वासुपुज्यइसो ॥ प्रभुगातारोमरायहुलसाणी॥ प्र०॥७॥

अथ श्री विमलजिनस्तवन ।

सरणेतिहारेहोविमलप्रभु ॥ सेवकनीअरदास ॥ आ
योसरणतिहारेहो ॥ विमलकरणप्रभुविमलनाथजी ॥
विमलआपमलरहीत ॥ विमलध्यानधरताहुवेनिर्मल ॥
तनमनलागोप्रीत॥ साहिबसरणेतिहारेहो ॥१॥ विम
लध्यानप्रभुआपध्याया ॥ तिणसुंहुआविमलजगदीस ॥
विमलध्यानवलीजेकोइध्यासी ॥ होसीविमलसरीस ॥
सा० ॥ २ ॥ विमलथइवासेद्रव्यजिनंद्रथा ॥ दिक्षालि
यांभावेंसाध ॥ केवलउपनाभावेजिनेस्वर ॥ भावेविम
लआराध ॥सा० ॥ ३ ॥ नामस्थापनाद्रव्यविमलथी ॥
कार्यनसरेकोय ॥ भावविमलथीकार्यसुधरे ॥भावजप्यां
शिवहोय ॥ सा० ॥ ४ ॥ गुणगीरवागंभीरधीरतुंम॥
तुंसेटणजमत्रास ॥ मेंतुमवयणआगमसिरधाख्या॥ तुं

मुजपूरणआस ॥सा०॥५॥ परमदयालकृपालसाहेब ॥ शिवदायकतुंमजगनाथ ॥ निश्चलध्यानकरेतुमओल खि ॥ तोमिलेतुमसंघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अंतरजामी आपउजागर ॥ मेंतुमसरणोलीध ॥ संवतओगणीसें भाद्रवेपुंनमवंबीतकार्यसिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अथ श्री अनंतजिनस्तवन ।

अनंतनाथजिनचउदमा ॥ जिनरायारे ॥ द्रव्यचो थेगुणस्थान ॥ स्वामिसुखदायारे ॥ भावेजिनहुआते रमे ॥ जिन० ॥ एटलेद्रव्यजिनजाण ॥ स्वामि० ॥ १ ॥ जिनचक्रिसुरजुगलिया ॥ जि० ॥ वासुदेवबलदेव ॥ स्वामि० ॥ पंचमगुणपावेनही ॥जि०॥ यांरीरीतअनादि खमेव ॥ स्वा०॥२॥ दीक्षालीधीतिणसमे ॥जि०॥ आ यासातमेंगुंणस्थान ॥स्वा०॥ अंतरमुहूर्त्त तिहांरही ॥ जि०॥ छठेबहुस्थितिजाण ॥ स्वा०॥३॥ आठमांथीदो यश्रेणीछे ॥ जि० ॥ उपशमखपकपिछाण ॥स्वा०॥ उप शमजायइग्यारमे ॥जि०॥ मोहदबावतोजाण ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ श्रेणीउपशमजिननवीलहे ॥ जि० ॥ खपकश्रे णीधरिखंत ॥स्वा०॥ चारित्रमोहखपावतां ॥ जि० ॥ चडीयाध्यानअत्यंत ॥स्वा०॥५॥ नवमेंआदिसंजलचि हुं ॥जि०॥ अंतसमेएकलोभ ॥ दसमेसुक्ष्ममातते ॥

जि० ॥ सागारउपयोगसोभ ॥ स्वा० ॥६॥ एकादश मोश्रोलंघीने ॥ जि० ॥ बारमेंमोहखपाय ॥ स्वा०॥ त्रिकर्मएकसमयहण्या ॥जि०॥ तेरमेंकेवलपाय ॥स्वा० ॥७॥ तीर्थथापीयोगरुंधीने ॥ जि० ॥ चउदमांथीसि द्धथाय ॥स्वा०॥ भोगणीसपुनमभाद्रवे ॥ जि०॥ अनंत स्याहरखाय ॥स्वा० ॥८॥

अथ श्रीधर्मजिनस्तवन ।

धर्मजिनधर्मतणाधोरी ॥ लकटमोहपासनाख्यातो डो ॥ तोरणधर्मआत्मसुंजोड़ी होप्रभुधर्मदेवप्यारा ॥१॥ सुक्लध्यानअमृतरसलीना ॥ संवेगरसेकरीजिनभीना ॥ ध्यालाप्रभुउपशमनापीना ॥ हो० ॥२॥ पुद्गलसुखअरि जाणयास्वामी ध्यानथिरचित्तआत्मधामी॥ जोडीजुगके- वल नोपामी ॥हो०॥३॥ जाण्याशब्दादिकमोहजाला ॥ रमणीसुखकिंपाकसमकाला ॥ हेतुनरकादिकदुःखमा ला ॥हो०॥४॥ थाप्याप्रभुच्यारतीरथतायो ॥ भाख्यो धर्मजिनआज्ञामांयो ॥ आज्ञाबाहिरअधर्मदुःखदा यो ॥ हो० ॥५॥ व्रतधर्मधंर्मजिनअख्याता ॥ इव्रत कहोअधर्मदुखदाता ॥ सावद्यनिरवद्यजूदाजूदाकह्या खाता ॥ हो० ॥६॥ बहुजनतारीमुक्तिध्याया ॥ भोग णीसेंआसोजधुरदिनआया ॥ धर्मजिनरटवेसुखपाया ॥ हो० ॥ ७ ॥

अथ श्रीसांतिजिनस्तवन ।

शांतिकरणप्रभुशांतिनाथजी ॥ सुखदायकशिवकं दकी ॥ बलिहारीहोसांतिजिणंदकी ॥ १ ॥ उपशमवाणीसुधारसअनुपम ॥ मेटणमिथ्यात्वमंदकी ॥ ब० ॥ ॥२॥ कामभोगरागद्वेषकंटुकफल ॥ विषवेलमोहअंधकी ॥ ब० ॥३॥ रात्तणीरमणीवितरणी ॥ पापपुतलीअसुचदुरगंधकी ॥ ब० ॥४॥ विविधउपदेशदेइजनताखां ॥ हुंबलिहारीजाउंविश्वानंदकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ परमदयालगुबालकृपानिधि ॥ तुजजयमालाआनंदकी ॥ब०॥६॥ उंगणीसेंआसोजविदिएकम ॥ सांभलतासुखकंदकी ॥ ब० ॥ ७ ॥

अथ श्रीकुंथुजिनस्तवन ।

॥ रागप्रभाती ॥

कुंथुजिनेसरकरुणासागर ॥ त्रिभुवनसिरटीकोरे ॥ प्रभुजीकोसमरणकरनीकोरे ॥१॥ अद्भुतरूपअनूपमकुंथुजिन ॥ दर्शनजगप्रीयकोरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ उपशमवाणीसुधारसअनूपम ॥ वालहोजिनवरवेकोरे ॥प्र०॥३॥ अनुकंपादोयश्रीजिनभाषी ॥ मर्मएसमदृष्टीकोरे॥प्र०॥४॥ असंयतीरोजीवणोवंछे ॥ तेसावद्यतहतीकोरे ॥प्र०॥५॥ निरवद्यकरुणाकरीजिनताखां ॥ धर्मवेजिनजीकोरे ॥

प्र०॥६॥ उंगणीसेआसोजवदिएकम ॥ सरणोसाहेब जीकोरे ॥ प्र०॥ ७ ॥

अथ श्रीअरहजिनस्तवन ।

॥ रागसोरठ ॥

अरीजिनकर्मअरीनांहंता॥ जगतउधारणजिहाज ॥ म्हांनेप्यारालागोछोजीअरिजिनराज॥ म्हांनेवाला लागोछोजी॥ अरिमहाराज ॥१॥ वारूंरेजिनेस्वररूप अनूपम॥ तुंसुगुणासीरताज ॥म्हां०॥ २ ॥ परिसह उपसर्गरूपअरिहण्या ॥ पायाछोकेवलआज ॥ म्हां० ॥३॥ नयणनधापेनिरखतांजी ॥ इंद्राणीसुरराज ॥ म्हां० ॥४॥ वाणीविशालदयालपुरुषनी ॥ भूषटपाजा विभाज॥ म्हां०॥५॥ सरणेआयोस्वामरेजी ॥ अविचल सुखरेकाज ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ ओगणीसेआसोजवदी एकम ॥ आनंदउपनुंआज ॥ म्हां० ॥७॥

अथ श्रीमल्लीजिनस्तवन ।

रागप्रभाती ।

नीलवरणमल्लीजिनेस्वर ॥ ध्याननिर्मलध्यायो ॥ अल्पकालमां हेप्रभु ॥ परमज्ञानपायो ॥ मल्लीजिनेस्वर समरनाम ॥ असर्णसरणआयो ॥१॥ कल्पपुष्फमाला जेम ॥ सुंगधतनसुहायो ॥ सुरवधुवरनयणभ्रमर ॥

अधिकहिलपटायो ॥म०॥२॥ स्वपरचक्रविविधविघने ॥ मिटततुजपसायो ॥ सिंहनादथकीगजेंद्रजेमदुरजा यो ॥ म०॥ ३ ॥ वाणीविमलनिर्मलसुधा ॥ रससंवे गछायो ॥ नरसुरासुरतिय समजसुणतहरखायो ॥ म० ॥४॥ जगदयालतुंहीक्रपाल ॥ जनकज्युंसुखदायो ॥ वत्सलनाथस्वामसाहिव ॥ सुजशतिलकमायो ॥ म० ॥ ५ ॥ जपतजापखपतपाप ॥ तपतहिमिटायो ॥ मल्लीदे वविविधसेव ॥ जगअक्रेरोपायो ॥म० ॥६॥ श्रीगणीसे आसोजक्रस्न ॥ तिजसुदिनआयो ॥ कुंभनंदनकर आनंद ॥ हरषथीमेंगायो ॥म०॥७॥

अथ श्रीमुनीसुब्रतजिनस्तवन ।

शोरठ ।

सुमित्रानंदनश्रीमुनिसुब्रत॥ तीरथनाथजिनजाणी ॥ चारित्रलेइकेवलउपजायो ॥ उपशमरसनीवाणीरा ॥ प्रभुजीआपप्रबलवडभागी ॥ १ ॥ त्रिभुवनदायकसागि रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ एआंकणी ॥ चोतीसअतिशयपेंत्री सवाणी ॥ निरखतसुरइंद्राणी ॥ उपशमरसनीवाणी सांभली ॥ हरखसुंआंखभराणीरा ॥प्र०॥आ०॥२॥ शब्द रूपरसगंधनेफरस ॥ तेप्रतिकूंलनेहुवेतुमआगे ॥ पां चदरशनथासुंपगनहीमंडे ॥ तिमअशुभशब्दादिकभा गेरा ॥ प्र० ॥आ०॥३॥ सुरक्रतजलस्थलपुष्फपुंजवर ॥

तेछांडीचितदीनो ॥ तुजनिश्वाससुगंधमुखपरिमल ॥ मनभमररसलीनोरा ॥ प्रः ॥ आः ॥४॥ पंचेंद्रीयनरसु रलीय, तुमसुंतेकिमहुएदुखदायो ॥ एकेंद्रीअनलतजे प्रतिकूलपणुं ॥ वाजेगमतोवायोरा ॥प्रः आः ॥ ५ ॥ रागद्वेषदुरदंततेदम्या ॥ जीत्याविषयविकारो ॥ दीन दयालआयोतुजसरणे ॥ तुंगतिमतिदातारोरा ॥ प्रः आः ॥६॥ ओगणीसेंआसोजलीजकुस्न ॥ श्रीमुनिसुव्रत गाया ॥ सहेरलाडणुंरुडीरीतें ॥ आनंदअधिकोपा यारा ॥ प्रः ॥ आः ॥७॥

अथ श्रीनमिजिनस्तवन ।

नमिनाथअनाथांरोनाथोरे ॥ नित्यनमणकरुंजोडी हाथोरे ॥ कर्मकाटणवीरविख्यातो ॥ प्रभुनमिनाथजी मुजप्यारारे ॥१॥ प्रभुध्यानसुधारसध्यायारे ॥ पदकेव ल जोडोपाया रे ॥ गुणउत्तमउत्तम आया ॥प्र०॥२॥ वागरीप्रभुवाणविशालोरे ॥ खीरसमुद्रथीअधिकरसा लोरे ॥ जगतारकदिनदयालो ॥ प्र० ॥३॥ थाप्यातीरथ च्यारजिणंदारे ॥ मिथ्यातिमिरहरणनेमुणंदारे ॥ त्याने सेवेसुरनरवृंदा ॥प्र०॥४ ॥ सुरअनुत्तरविमाननासेवेरे प्रश्नपूछ्यांउत्तरजिनदेवेरे ॥ अवधिग्यांनकरीजाण लेवे ॥ प्रः ॥५॥ तिहांबेठातेतुमध्यानध्यावेरे ॥ तुमेयो गमुद्राचित्तचावेरे ॥ तेपणआपरीभावनाभावे ॥ प्रः ॥

॥ ६ ॥ श्रीगणीसिआसोजउदारोरे ॥ क्ररनतीजगायागुण स्रागेरे ॥ ह्रओआनंदहरषअपारो ॥प्र:॥७॥

अथ श्रीनेमजिनस्तवन ।

रिठनेमिस्वामितुंजगतार ॥ अंतरजामी ॥ तुं तो रणस्युफिर्योजिनस्वाम ॥ अद्भूतवातकरीतेंअमाम ॥रि: ॥१ ॥ राजमतीछाड़ीनेजिनराय ॥ शिवसुंदरस्युंप्रीत लगाय ॥ रि: ॥२॥ केवलपायाध्यानवरध्याय ॥ इंद्र सुचौनिरखतहरषाय ॥ रि: ॥३॥ नेरियापणपामेसन मोद ॥ तुजकल्याणसुरकरतविनोद ॥रि: ॥ ४ ॥ राग रहीतशिवसुखस्युंप्रीत ॥ कर्महणेवलीद्वेषरहीत ॥रि:॥ ॥५॥ अचरिजकारोप्रभुथारोरेचरित्र ॥ हुंप्रणमुंकरजो डीनित ॥ रि:॥६॥ श्रीगणीसेवदिचोथकुमार ॥ नेमज प्यांपायोसुखसार ॥ रि:॥७॥

अथ श्रीपार्श्वजिनस्तवन ।

लोहकंचनकरेपारसकाचो ॥तेकरकहोकुणलेवे हो:॥ पारसतुंप्रभुसाचोपारस॥आपसमोकरदेवे हो:॥२॥पार सदेवतुमारादर्शन ॥ भागभलासोइपावे २ हुंवारीजा उं ॥ जीवमगनहुइजावे हो:॥१॥ तुजमुखकमलपारस चमरावल॥कनकक्रांततनसोहे हो:॥हंससेणजाणेपंकज सेवे ॥ देखतजनमनमोहे ॥हो:॥२॥ फिटकसिंघासण सिंघआकारे ॥बेठदेशनादेवेहो: ॥वनम्रगआवेवाणीसुण

वा ॥ जाणकसिंहनेसेवे ॥ हो: ॥३॥ चंदसमोतुजमुख महासीतल॥नयणचकोरहरखावेहो:॥ इंद्रनरेंद्रसुरासुर रमणी ॥ निरखततपतनैपावें ॥ हो:॥४॥ आपनिरागी पाखंडीसरागी ॥ आपसमुद्रमगेहरीहो:॥ वैरभावपाखं डीराखे ॥ पिणआपर्आंरानहीवैरी ॥हो:॥५॥ जिमसू रजखुद्योतउपरें ॥ वैरभावनहीआणे हो: ॥ तिमतुंपिण प्रभुपाखंडीयाने ॥ खुद्योतसरिखाजाणे ॥हो:॥६॥ पर मदयालकृपालपारसप्रभु ॥ सवंतओगणीसेंगायाहो: ॥ आसोजकृश्नतिथचोथलाडणु ॥ आनंदअधिकोपाया ॥हो: ॥७ ॥

अथ श्रीमहावीरजिनस्तवन ।

॥ रागशोरठ ॥

चरम जिणंदचोवीसमारे ॥ अगहणामहावीर ॥ विकटतप वरध्यानकर ॥ प्रभु॥ पायाभवजलतीर ॥ नहीएसोदुसरोमहावीर ॥ १ ॥ परिसहउपसर्गजीतवा प्रभु ॥ सूर वीरजिमसधीर ॥ नही० ॥ संगमेंदुखदि- याआंकरारे ॥ पणसुप्रसनजरदयाल ॥ जगउद्धार- हुवेमोथकीरे ॥ एडूवेडूणकाल ॥ नहीं० ॥२॥ लोक- अनार्यजिनसह्यारे ॥ उपसर्गविविधप्रकार ॥ ध्यान- सुधारसलीनतारे ॥ मनमें हर्षअपार ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ इणीपरेकर्मखपायने प्रभु ॥ पायाकेवलनांण ॥ उपश-

मरसमांहिवागरीप्रभु ॥ अधिकअनोपमवाण ॥नहीं०॥
॥ ४ ॥ पुद्गलसुखअरिशिवतणारे ॥ नरकतणादातार
छांडिरमणीकिंपाकवेल ॥ संवेगसंयमधार ॥ नहीं० ॥
॥ ५ ॥ निंदास्तुतिसुखदुःखेरे ॥ मानअनेअपमान ॥
हर्षशोकमोहपरहर्‌यारे ॥ पामें पदनिरवाण ॥नहीं०॥
॥ ६ ॥ इणिपरेबहुजनत्यारियाप्रभु ॥ प्रणमुं चरमजि-
णंद ॥ ओगणीसेआसोजचोथकृष्ण॥ पायोपरमानन्द ॥
नहीं० ॥ ७ ॥

इति श्रीभीषनजी स्वामी तस्यसीष्यभारीमालजी स्वामी,तस्यसीष्य रिषरायचंदजी,स्वामि तस्यसीष्यजीत मलजी स्वामी कृत चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमुं देव अरिहंत नित जिनाधीपती जिणराय ॥
द्वादशगुण सहितजें बंदुमनबच काय ॥ १ ॥
नमु सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनीराज ॥
गुंण षट तीस संयुक्तजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमुं फुन उवझाय प्रति गुण पण बीस उदार ॥
नमुं सर्व साधु निर्मल सप्त बीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन बली पण वीस प्रगट ॥
सप्त वीस ए सर्व ही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥

नोकार वाली ना जिवी मिणि यां जगत मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमोअरिहंताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत किहवा छै १२ बारे गुणे करी सहित छै ते कहै छै अनन्तो ग्यांन १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ आशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवीजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमोसिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंतकि हवा छै आठ गुणे करीसहित छै ते कहै छै केवल ग्यांन १ केवल दर्शण २ आत्मीक सुख ३ षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्ति भाव ६ अग्र लघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज किहवा छै ३६ षट वीस गुणेकरी सहित छै ते कहै छै आरजदेस ना उपनां

१ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयैण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दुसरा पासि कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वरणांन नेंकरे ८ कपटी नें होवे ९ सब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देस ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवे १३ तीखण बुद्धी होवे १४ घणां देशांरी भाषा जाणे १५ पांच आचार सहित १६ सुत्रांरा जांण होवे १७ अर्थरा जांण होवे १८ सुत्र अर्थ दोनों राजाण होवे १९ कपटकारी पुछे तो छलावे नहीं २० हेतुनां जाण होवे २१ कारणरा जांण होवे २२ दिष्टान्त नां जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीषणे समर्थ २५ पिराछितनां जाण होवे २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोले २८ परीसह जीते २९ समय पर समय नां जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोमचन्द्रमांजीसा ३४ सूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुनः

५ पांच इंद्री जीते ४ च्यार कषाय टाले नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ग्यांन १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४ विर्य ५ ५

पंच सुमती पाले इर्या १ भाषा २ एषणा ३ इयांग भंडमत नषेवणा ४ उचारपासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट तीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमोउवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराजकी कवा छे २५ पचवीस गुणे कारी सहित छे ते कहे छे १४ चवदे पूरव ११ इग्यारे अंग भणे भणावे ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपंग भणे भणावे ।

॥ णमोलोएसव्वसाहुणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषे सर्व साधु मुनीराजीने ।

ते साधु मुनी राजकेवाछे सतवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे ५ पंच महाव्रत पाले ५ इंद्री जीते ४ च्यारकषायटाले भाव संचेय १५ कारण संचेय १६ जोग संचेय १७ चम्यांवंत १८ वैराग्यवंत १९ मनसमांधारणीया २० वचन समांधारणी या २१ कायसमांधारणीया २२ नांणसंपना २३ दर्श

न संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयांसमो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमि भन्ते सामाइयं सावजं जोगं ।

पच्चखामी जाव नियम (महुरत एक) पजवासामी दुविहेणं तिविहेणं नकरेमी नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पडिक्कमामि निंदामी गरिहामी अप्पाणं वो सरामि ॥

सामायेक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायक विहरमाण व्रतके विषें ज्यो कोई अतीचार दोष लागोहुवे ते आलोउं सामायक में सुमता नेकीधि विकथाकीधि हुवे अणपूरी पारी होय पारतां विसार्यो होय मन वचन कायाका जोग माठा परिवरताया होय सामायकमें राज कथा देश कथा स्त्री कथा भत्त कथा करी होय तस्स मिच्छामि दोक्कडं ।

॥ अथा तिख्खुताकी पाटी ॥

तिख्खुतो अयाहीणं पयाहीणं वंदामि नमंसामि

सक्कारेमि सम्माणेमी कल्लाणं मंगलं देवूयं चेवूयं पज्जु वासामी मत्थे ण वंदामी ।

॥ अथः पंचपद बन्दणा ॥

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीसं) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (यकसहसाठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंचमाहाविदेह खेतांके विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनन्त दरिशनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त बल का धणी एक हजार आठ लच्छनाका धारणहार चौसट इन्द्राका पूजनीक चौतीस अतिसय पैतीस बाणी द्वादस गुन सहित बिराजमान छै ज्यां अरि-हन्ता सें मांहरी बंदना तिक्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पंनरा भेदे अनन्ती चोबीसी आठ कर्म खपायसिध भगवान मोच्च पहुँता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संजोग नहीं विजोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भ वासमें आवे नहीं सदा काल सास्वता सुखासें बिराजमानछे इसा उत्तम सिद्ध भगवंतासें मांहरी ब न्दना तिक्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह खेत्रामें विचरेछे केवल ज्ञान केवल दरिशनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्यखेत्र कालभाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी सें मांहरी बन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो ॥

चौथे पदेगणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी थविरजी तेगणधरजी महाराजकेवाछे अनेक गुणां विराजमान छै आचार्यजी महाराज केवाछै षट तीस गुणां विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केवाछै पचवीसगुणां विराजमान छै थविरजी माहाराज केवा छै धर्मसें डिगता हुया प्राणी नें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्यां उत्तम पुरुषां सें मांहरी बन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालुम होज्यो।

पञ्चमें पदे माहारा धर्म आचारज गुरु पुज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्तमान आचारजको नांव लेणो.) आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधू साधवी जाझेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड साधू साधवी अढ़ाई द्वीप पन्दरे खेत्रांमें विचरे छै ते माहा उत्तम पुरुष केवाछै पञ्च महाव्रतका पालणाहार छव कायानां पीहर पञ्च सुमति सुमता तीन

गुप्ती गुप्ता नवबाडसहितब्रह्मचर्य्यका पालक-दसवि-
धी यतीधर्मका धारक बारे भेदे तपस्याका करणहार
सतरे भेदे संजमका पालणहार बावीस परीसहका
जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष
टाल आहार पांणीका लेवणहार बावन अनाचारका
टालणहार निरलोभी निरलालची संसार नांत्यागी
मोक्षनां अभीलाषी संसारसें पूठा मोक्षसे सामा
सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी अस्वादी त्यागी
बेरागी तेडीया आवै नही नोंतीया जीमें नहि मोलकी
वस्तु लेवे नही कनककामणीसें न्यारा वायरानी
परे अप्रतिबन्ध विहारी इसा माहापुरुषासें माहरी
वन्दना तिख्खुत्ताका पाठसें मालूम होज्यो ॥

॥ पच्चीस बोल ॥

॥ अथ: पचवीस बोलको थोकडो ॥

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देव-
गति ४

२ दूजेबोले जातिपांच ५

एकेन्द्री बेइन्द्री तेइन्द्री चोरेन्द्री पचेन्द्री

३ तीजे बोले काया छव ६

पृथ्विकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चोथे बोले इन्द्री पांच ५

श्रोतेइन्द्री १ चक्षूइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रस-इन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय छव ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रीय पर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठै बोले प्राण दस १०

श्रोतेंद्री बलप्राण १ चक्षूइन्द्रीबलप्रांण २ घ्राण इन्द्रीबलप्रांण ३ रसेन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्री बलप्राण ५ मनबलप्राण ६ वचनबलप्राण ७ काया बलप्राण ८ श्वासोश्वासबलप्राण ९ आउषोबलप्राण १०

७ सातमें बोले शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवे बोले जोग पंदरा १५

४ च्यारमनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारवचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यव हार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मणजोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारे १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्ज्जवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ बिभंगअज्ञान ३

४ च्यार दरिशन

चक्षुदर्शण १ अचक्षुदर्शण २ अवधिदर्शण ३ केवल दर्शण ४

१० दसमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावरणी कर्म १ दर्शणावरणी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहणी कर्म ४ आयुष्यकर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ इग्यारामें बोले गुण स्थान चौदा १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान ।

१ दूजो साहस्वादान समदृष्टि गुणस्थान ।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान ।

४ चौथो अव्रती समदृष्टी गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छट्ठो प्रमादी साधू गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधू गुणस्थान

८ आठवों नियट बादर गुणस्थान

९ नवमो अनियट बादर गुणस्थान

१० दसवों सुच्चम संप्राय गुणस्थान

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान

१२ बारमूं चीणमोहनी गुणस्थान

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रीयांका तेवीस विषय

श्रोतइन्द्रीका तीन विषय

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चच्चु इन्द्रीका पांच विषय

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इंद्रीका दोय विषय

सुगंध १ दुर्गंध २

रस इन्द्रीका पांच विषय

खट्टो १ मीठो २ कडवो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीका आठ विषय

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५ चोपड्यो ६ ठंडो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोले दस प्रकारका मिथ्याती

१ जीवनें अजीव सरदै ते मिथ्याती

२ अजीवनें जीव सरदै ते मिथ्याती

३ धर्मनें अधर्म सरदै ते मिथ्याती

४ अधर्मनें धर्म सरदै ते मिथ्याती

५ साधूनें असाधू सरदै तें मिथ्याती

६ असाधूनें साधू सरदै तें मिथ्याती

७ मार्गनें कुमार्ग सरदै ते मिथ्याती

८ कुमार्गनें मार्ग सरदै ते मिथ्याती

९ मोक्षगयानें अमोक्षगयो सरदै ते मिथ्याती

१० अमोक्षगयानें मोक्षगयो सरदै ते मिथ्याती

१४ चोदमें बोले नवतत्वको जांण पणों तींका

११५ एकसो पंदरा बोल

१४ चोदेजीवका—

सुक्ष्म एकिंद्रीका दोयभेद :—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकिन्द्रीका दोय भेद :—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बे इन्द्रीका दोयभेद :—

५ पांचमूँ अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

ते इन्द्रीका दोय भेद :—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चो इन्द्रीका दोय भेद :—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दसमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेद :—

११ इग्यारमूँ अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दो भेद :—

१३ तेरमूँ अपर्याप्तो १४ चोदमूँ पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवाका भेद :—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

आकास्ति कायका ३ तीन भेद :—

खंध, देस, प्रदेस,

कालको दसमूँ भेद (ये दस भेद अरूपीछे)

पुद्गलास्ति कायक ४ च्यार भेद :—

खंध, देस, प्रदेस, प्रमाणू

९ पुन्य नव प्रकारे

अन्नपुन्ने १ पाणपुन्ने २ लेणपुन्ने* ३ सयणपुन्ने* ४ वत्थपुन्ने ५ मनपुन्ने ६ वचनपुन्ने ७ कायापुन्ने ८ नमस्कारपुन्ने ६

१८ पाप अठारे प्रकार :—

प्राणातिपात १ मृखावाद* २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ६ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अबाख्यान १३ पैसुन्य* १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मित्थ्यादर्शन सल्य १८

२०. बीस आश्रवका :—

मित्थ्यात्व आश्रव १ अव्रत आश्रव २ प्रमाद आश्रव ३ कषाय आश्रव ४ जोग आश्रव ५ प्राणातिपात आश्रव ६ मृषावाद आश्रव ७ अदत्तादान आश्रव ८ मैथुन आश्रव ६ परिग्रह आश्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलेते आव ११ चक्षुइंद्री मोकली मेले ते आश्रव १२ घ्राण इंद्री मोकली मेले ते आश्रव १३ रस इंद्री मोकली मेले ते आश्रव १४ स्पर्शइन्द्री मोकली मेले ते आश्रव १५ मनप्रवर्तावि ते आश्रव १६ वचनप्रवर्तावि-ते आश्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते आश्रव १८

---

*लेण = जगां जमीनांदिक * सयण = पाट बाजोटा दिक
* वाद = बोलना *पैसुन्य = चुगली

भण्डोपकरणमेलताअजयणाकरै * ते आश्रव १९
सुई कुसाग्रमात्र सेवे ते आश्रव २०

२० बीस संवरका :—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर २ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करे ते संवर ६ मृषावाद न वोले ते संवर ७ चोरी न करे ते संवर ८ मैथुन न सेवे ते संवर ९ परिग्रह न राखे ते संवर १० श्रुत इन्द्री वसकरे ते संवर ११ चक्षुइन्द्री वसकरे ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वसकरे ते संवर १३ रसेन्द्री वसकरे ते संवर १४ स्पर्शइन्द्री वसकरे ते संवर १५ मन वसकरे ते संवर १६ वचन वसकरे ते संवर १७ काया वसकरे ते संवर १८ भण्डउपगरणमेलतां अजयणानकरे ते संवर १९ सुई कुसाग्र न सेवे ते संवर २०

१२ निरजरा बारे प्रकारे :—

अणसण * १ उणोदरी * २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित

---

* अजयणा = यत्न नीं।

* अणसण = उपवासादिक।

* उणोदरी = कमखाना।

७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान
११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारे :—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभागबन्ध ३
प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारे :—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंद्रमें बोले आत्मा आठ :—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३
उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण
आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दंडक चोवीस १२ :—

१ सोतनारकीयांको येक दंडक

१० दसदंडक भवनपतिका :—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार ३
बिद्युत कुमार ४ अग्निकुमार ५ दीप कुमार ६
उदधि कुमार ७ दिसा कुमार ८ वायुकुमार ९
स्तनित कुमार १०

५ पांचथावरका पंच दंडक :—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय
४ बनस्पतिकाय ५

---

* विउसग्ग = निवर्तबो ।

१ वे इन्द्री को सतरमों
१ ते इन्द्री को अठारमों
१ चौ इन्द्री को उगणीसमों
१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को वीसमों
१ मनुष्य पंचेन्द्री को इकवीसमों
१ वानव्यंतर देवतांको वावीसमों
१ जोतषी देवतांको तेवीसमों
१ वैमानिक देवतांको चौवीसमों

१७ सतरवें वोलें लेस्या छव ६ :—
कृष्णलेस्या १ नील लेस्या २ कापोत लेस्या ३ तेजुलेस्या ४ पद्म लेस्या ५ शुक्ल लेस्या ६

१८ अठारमें वोलें दृष्टी ३ तीन :—
सम्यक् दृष्टी १ मित्थ्या दृष्टी १ समिथ्या दृष्टी ३

१९ उगणीससें वोलें ध्यान ४ च्यार :—
आर्तध्यान१रौद्र ध्यान २ धर्मध्यान३सुक्लध्यान ४

२० वीसमें बोले षट द्रव्यको जांण पणो
धर्मास्तिकायनैं पांचां बोला ओलखीजे :—
द्रव्यथकी येक द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहीत भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुदलगने हालवा चालवाको साभ,

अधर्मास्तिकायने पांचा बोलां ओलखीजे :—द्रव्यथी येक द्रव्य खेत्रथी लोकप्रमाणे कालथकी आदि अन्तराहित भावथी अरूपी गुणथी थिररहवानों साभ, आकासास्तीकायनैं पांच बोलकरी ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालनें पांचां बोलां ओलखीजे :—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमानगुण पूदगलास्तिकायने पांच बोलकरी ओलखीजे: – द्व्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपीगुणथी गले* मले, जीवास्तिकायने पांच बोल करी ओलखीजे:-द्रव्य थी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाण कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ एक बीसमें बोले रासि २ दोय :—
जीवरासि १ अजीवरासि २

२२ बाविसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत :–

---

* गले मले: गठे बधे: अथवा: जुदा येकत्र होय।

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करे और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका से उपयोग त्याग करे।

२ दूजा व्रतमें मोटकी झूँट बोलवाकासें उपयोग त्याग करे।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करे।

४ चौथा व्रतमें श्रावक मरियाद उपरांति मैथुन सेवाका त्याग करे।

५ पांचमो व्रतमें श्रावक मरियाद उपरांति परिग्रह राखवाका त्याग करे।

६ छट्टा व्रतके विखेश्रावक दसों दिसिमें मरियाद उपरान्ति जावाका त्याग करे।

७ सातवा व्रतके बिखे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छावीस के जिणारी मरियाद उपरांति त्याग करे तथा पंदरे कर्मादानकी मरियाद उपरांति त्याग करे।

८ आठमा व्रतके विखे श्रावक मरियाद उपरांति अनर्थ दण्डका त्याग करे।

९ नवमां व्रतके विखे श्रावक सामायककी मरियाद करे।

१० दसमां व्रतके विखे श्रावक देसावगासी संवरकी मरियाद करे।

११ इगारमूँ व्रत श्रावक पोसह करे।

१२ बारमूँ व्रत श्रावक सुध साधू निग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चवदे प्रकार दान देवे।

२३ तेबीसमें बोले साधूजीका पंच महाव्रत :—

१. पहिला महाव्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे जीव हिन्सा करे नहीं करावे नहीं करतानें भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें।

२ दूसरा महा व्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकार झूँठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें।

३ तीजा महा वृतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतां प्रते भलोजाणे नहीं मनमें वचनसें कायासें।

४ चौथा महा व्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें बचनसें कायासें।

५ पंचमां महाव्रतमें साधूजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलोजाणे नहीं मनसें वचनसें कायासें।

२४ चौवीसमें बोले भांगा ४९ गुणचास :–

कर्ण ३ तीन जोग ३ तीनसें हुवे।

कर्ण ३ तीनका नाम–करू' नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं, नहीं जोग ३ तीनका नाम— मनसा, वायसा कायसा।

आंक ११ इगाराको भांगा १२ :—

एक कर्ण एक जोगसें कहणां; करु नहीं मनसा, करु नहीं वयसा, करु नहीं कायसा, कराऊं नही मनसा, कराऊं नही वयसा, कराऊं नहीं कायसा; अनुमोदू नहीं मनसा, अनुमोदूं नही वयसा, अनुमोदूं नही कायसा।

आंक १२ बाराको भांगा ९ :—

एक कर्ण दोय जोगसे, करूँ नहीं मनसा वायसा, करु नहीं मनसा कायसा, करूँ नहीं वायसा कायसा, कराऊँ नहीं मनसावायसा, कराउं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं वायसा कायसा, अणमोदू नहीं मनसावायसा, अनुमोदूँ नहीं मनसाकायसा, अनुमोदूँ नहीं वायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन :—
एक करण तीन जोगसें; करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक २१ को भांगा ९ :
दोय करण एक जोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक २२ बावीसको भांगा ९ नव :—
दोय करण दोयजोगसें, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं

बायसा कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं बायसा कायसा।

आंक २३ तेबीसको भांगा ३ तीन :—
दोय करण तीन जोगसें करूँ; नहीं कराऊं नहीं मनसा बायस कायसा, करूँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा कायसा, कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा कायसा।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन :—
तीन करणएक जोगसें; करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं बायसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं कायसा।

आंक ३२ बतीसको भांगा ३ तीन :—
तीन करण दोयजोगसें: करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा कायसा, करूँ नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं बायसा कायसा।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक :—

तीन करण तीन जोगसें: करूं नहीं कराऊँ नहीं अनुमोदूँ नहीं मनसा बायसा कायसा ।

२५ पच्चीसमें बोलि चारित्र ५ पांच :—

सामायक चारित्र १ छेदो स्थापनीय चारित्र २ पडिहार बिशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म संपराय चारित्र ४ यथाख्याति चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी; अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय।

२ अजीव रूपीकि अरूपी; रूपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकास्तिकाय काल ये च्यारूँ तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपीते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल, पुद्गल ते रूपी ही छै।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रुपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गलते रूपी ही छै

५ आश्रव रूपीकि अरूपी, अरूपीते किणन्याय आश्रव जीवका परिणामछै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

६ संवर रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

८ बंध रुपीके अरुपी; रुपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभ कर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै, पुद्गल ते रुपी छै ।

९ मोक्षरूपी के अरुपी अरूपी छै ते किणन्याय समस्त कर्मसें मुकावे ते मोक्ष अरुपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय ।

॥ लडी दूजी सावद्य निर्वधकी ॥

१ जीव सावद्यके निर्वद्य दोनूँ ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छै ।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूँ नहीं अजीव छै ।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य; दोनूं नही अजीव छै ।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ आश्रव सावद्यके निर्वद्य; दोनूं ही छै ते किण-न्याय मित्थ्यात्व आश्रव अव्रत आश्रव प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, ये च्यार तो येकान्ति सावद्य छै, शुभ जोगां सें निरजरा होय जिण आंसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै ।

६ संवर सावद्यके निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मा नें रोके ते निर्वद्य छै ।

७ निरजरा सावद्यकै निर्वद्य निर्वद्य छै ते किण-
न्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै ।

८ बंध सावद्यकै निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय
अजीव छै दूण न्याय ।

९ मोक्ष सावद्यकै निर्वद्य; निर्वद्य छै, सकल कर्म
मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै ।

॥ लडी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कै बारे, दोनूं छै ते किण-
न्याय, जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि
छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै ।

२ अजीव आज्ञा मांहि बाहिर; दोनूं नहीं, अजीव
छै ।

३ पुन्य आज्ञा मांहि कै बाहिर दोनूं नहीं अजीव
छै दूण न्याय ।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं, अजीव छै ।

५ आश्रव आज्ञा मांहिकै बारे, दोनूं माहि छै, ते
किणन्याय, आश्रवा नां पांच भेद छै तिणमें
मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो
आज्ञा बाहिर छै अनै जोग नां दोय भेद शुभ
जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा
बाहिर छै ।

६ संवर आज्ञा मांहि के बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

७ निर्जरा आज्ञा माहिके बाहर, आज्ञा माहि छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

८ बंध आज्ञा मांहिके बाहर; दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष आज्ञा माहिके बाहर; आज्ञा माहि छै ते किणन्याय, कर्म मूंकाय सिद्ध थया ते आज्ञा में छै ।

॥ लडी चौथी जीव अजीव की ॥

१ जीव ते जीव छै के अजीव; जीवते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहेसे अजीव कदे हुवे नहीं

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै; अजीव छै अ-जीवको जीव किण ही कालमें हुवे नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै; अजीव छै ते किण-न्याय पुन्यतेसुभकर्म शुभ कर्म पुदगल छै पुदगल ते अजीव छै।

४ पाप जीव छै कि अजीव छै; अजीव छै किण-
 न्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते
 अजीव छै ।

५ आश्रव जीव छै कि अजीव छै जीव; छै ते किण-
 न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहै ते आश्रव छै कर्म
 ग्रहै ते जीव ही छै ।

६ संवर जीवकि अजीव, जीव छै ते किणन्याय
 कर्म रोकै ते जीव ही छै ।

७ निर्जरा जीवकि अजीव, जीव छै किणन्याय कर्म
 तोडे ते जीव छै ।

८ बंध जीवकि अजीव छे, अजीव छै ते किणन्याय
 शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छै ।

९ मोक्ष जीवकि अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त
 कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै ।

॥ लडी पांचवी जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरकि साहूकार, दोनूं छै किणन्याय
 चोखा परिणामां साहूकार छै मांठा परिणामां
 चोर छे ।

२ अजीव चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय
 चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै ।

३ पुन्य चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ पाप चोरकि साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आश्रव चोरकि साहूकार, दोनूं छै किणन्याय च्यार आश्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोरकि साहूकार; साहूकारछै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरकि साहूकार, साहूकारछै किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोरकि साहूकार साहूकार किणन्याय कर्मनूं क्षायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

लडी छटी जीव छांडवा जोगके आदरवा योगकी।

१ जीव छांडवा जोगकि आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भांजन करे अनेरा जीव पर मिमत भाव न करे।

२ अजीव छांड वा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय अजीव छै।

३ पुन्य छांडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा

जोग छै ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै कर्म तै छांडवा ही जोग छै ।

४ पाप छांडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छै जीवनें दुखदाई छै ते छांडवा जोग छै।

५ आश्रव छांडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय आश्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छै आश्रव कर्म आवानां वारणा छै ते छांडवा जोग छै ।

६ संवर छांडवा जोग आदरवा जोग ; आदरवा जोग छै किणन्याय कर्म रोके ते संवर छै ते आदरवा जोग छै ।

७ निर्जरा छांडवा जोगकि आदरवा जोग; आदरवा जोग छै किणन्याय देसथी कर्म तोडे देसथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छै ते आदरवा जोग छै।

८ बन्ध छांडवा जोगकि आदरवा जोग ; छांडवा जोग, छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नों बन्ध छांडवा जोगही छै।

९ मोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जोव

निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छै।

॥ छद्रव्यपरलडो सातमो रूपी अरुपी की ॥

१ धर्मास्ति काय रूपीकि अरूपी, अरुपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्ति काय रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीकि अरूपी, अरूपी, किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीकि अरूपी, रूपी, किणन्याय पांच बर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीकि अरूपी अरूपी किणन्याय पांच बर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥छव द्रव्यपर लडी आठमो जीव अजीवकी॥

१ धर्मास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

३ आकास्ति काय जीवकि अजीव, अजीव छै।

४ काल जीवकि अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय जीवके अजीव, अजीव, छै।

६ जीवास्ति काय जीवके अजीव, जीव छै।

॥छव द्रव्यपर लडी नवमी सावद्य निर्वद्य की॥

१ धर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ आकास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं, अजीव छै।

५ पुद्गलास्ति काय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्य छै।

॥ छव द्रव्यपर लडी दशमी एक अनेक की ॥

१ धर्मास्ति काय एक छैके अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्ति काय एक छैके अनेक छै: एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकास्ति काय एकके अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छैके अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै दूणन्याय।

५ पुद्गल एक छैके अनेक छै, अनेक छै, द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य छै दूणन्याय।

६ जीव एक छै के अनेक छै, अनेक छै अनंता द्रव्य छै दूणन्याय।

छवद्रव्यपर लडी इग्यारमी आज्ञामांहिबाहेरकी

१ धर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके बाहर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा मांहि बाहर तो जीव छै अने ए अजीव छै।

२ अधर्मास्ति काय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

३ आकास्ति काय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

४ काल आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै।

६ जीव आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूँ छै किणन्याय

निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी आज्ञा बाहर छै इणन्याय ।

छव द्रव्यपर लडो बारमीं चोर साहूकारको

१ धर्मास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्ति काय अजीव छै इणन्याय ।

२ अधर्मास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ आकास्ति काय चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ काल चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरके साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, मांठा परिणाम आंसरी चोर छै चोखा परिणांमां आंसरी साहूकार छै ।

॥ छवमे नवमें की चरचा ॥

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमें कोंण नव तत्वमें कोंण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमें कोंण नवमें कोंण उ: छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

३ कर्मांको लगावता छवमें कोंण नवमें कोण उ:
छवमें जीव नवमें जीव आश्रव ।

४ कर्मांको रोंकता छवमें कोंण नवमें कोंण उत्तर
छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ कर्मांको तोडता छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें
जीव नवमें जीव निर्जरा ।

६ कर्मांको बान्धता छवमें कोण नवमें कोण छवमें
जीव नवमें जीव आश्रव ।

७ कर्मांको छूकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें
जीव नवमें जीव मोक्ष ।

८ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें
जीव नवमें जीव आश्रव ।

९ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण
नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

१० सामायक छवमें कोंण नवमें कोण छवमें जीव
नवमें जीव संवर ।

४ व्रत छवमें कोंण नवमें कोंण छवमें जीव नवमें
जीव संवर ।

५ अव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें
जीव आश्रव ।

६ अठारे पापको वहरमण छवमें कोंण नवमें
कोंण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर ।

७ पंच माहा ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर।

८ पंच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर।

९ पांच सुमति छवमें कोण नवमें कोण छवमे जीव नवमें जीव निर्जरा।

१० तीन गुप्ती छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर।

११ बारे ब्रत छवमें कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव सम्बर।

१ धर्म छवमे कोण नवमे कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर निर्जरा।

२ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आश्रव।

३ दया छवमें कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव सम्बर निर्जरा।

४ हिंस्या छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव आश्रव।

५ जीव छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव आश्रव सम्वर निर्जरा मोक्ष।

६ अजीव छवमे कोण नवमे कोण छवमे पांच नवमे अजीव पुन्य पाप वन्ध।

७ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नववें अजीव पुन्य बन्ध।

८ पाप छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव पाप बन्ध।

९ आश्रव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आश्रव।

१० सम्बर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सम्बर।

११ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा।

१२ बंध छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव पुन्य पाप बंध।

१३ मोच छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोच।

१ धर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण, छवमें धर्मास्ति नवमें अजीव।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण, छवमें अ-धर्मास्ति नवमें अजीव।

३ आकास्ती छवमें कोण नवमें कोण, छवमें आ-कास्ती नवमें अजीव।

४ काल छवमें कोण नवमें कौन, छवमें काल नवमें अजीव ।

५ पुद्गल छवमें कोंण नवमें कोण, छवमें पुद्गल नवमें अजीव पुन्य पाप वंध ।

६ जीव छवमें कोण नवमें कोण, छवमें जीव नवमें जीव आश्रव संवर निर्जरा मोक्ष ।

७ कागद को पानों छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

८ लकडी की पाटी छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

९ पातो छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

१० रजोहरण छवमें कोण नवमें कोण; छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

११ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण; छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

१ पुन्य और धर्म एक को दोय; दोय, किणन्याय पुन्य तो अजीव छै धर्म जीव छै ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एक के दोय; दोय, किणन्याय पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी ।

३ धर्म और धर्मास्ति एक कि दोय; दोय, किण-न्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक कि दोय दोय किण-न्याय अधर्म तो जीव छै अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक कि दोय; दोय, किण-न्याय पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एक कि दोय; दोय, किणन्याय पाप तो अजीव छै पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मांको करता एक कि दोय; दोय, किणन्याय कर्म तो अजीव छै कर्मांरो करता जीव छै।

८ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना; ज्ञानावरणी दर्शणा वरणी, मोहनी, अंतराय; ये च्यार कर्म तो एकान्ति पाप छै, वेदनी, नांम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूँ ही छै।

६ कर्म जीवकि अजीव; अजीव।

१ कर्म रूपीकि अरूपी, रूपी छै।

२ कर्म सावद्य कि निर्वद्य, दोनूँ नहीं अजीव छै।

३ कर्म आज्ञा मांहिकि बारे दोनूँ नहीं अजीव छै।

४ कर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग; छांडवा जोग छै।

५ पुन्य धर्म कि अधर्म, दोनूं नहीं किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै, पुन्य अजीव छै।

६ पाप धर्म कि अधर्म; दोनूं नहीं किणन्याय, धर्म अधर्म, तो जीव छै पाप अजीव छै।

७ बंध धर्म कि अधर्म, दोनूं नहीं किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

८ धर्म जीव कि अजीव, जीव छै।

९ धर्म सावद्य कि निर्वद्य, निर्वद्य छै।

१० धर्म रूपी कि अरूपी, अरूपी छै।

११ धर्म पुन्य कि पाप, दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

१२ धर्म चोर कि साहूकार साहूकार छै।

१३ धर्म आज्ञा मांहि कि बाहिर, श्री बीतराग देव की आज्ञा मांहि छै।

१४ धर्म छांडवा जोग कि आदरवा जोग, आदरवा जोग छै।

१५ अधर्म जीव कि अजीव, जीव छै।

१६ अधर्म रूपी कि अरूपी, अरूपी छै।

१७ अधर्म आज्ञा मांहिकि बाहर, बाहर छै।

१८ अधर्म चोर के साहूकार, चोर छै।

१६ अधर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग, छांडवा जोग।

२० कर्म अने धर्म एक के दोय; दोय छै किण-न्याय कर्म तो अजीव छै धर्म जीव छै।

२१ पाप अने धर्म एक के दोय; दोय छै किण-न्याय पाप तो अजीव छै धर्म जीव छै।

१ सामायक जीव के अजीव, जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निर्वद्य, निर्वद्य छै।

३ सामायक रूपी के अरूपी, अरूपी छै।

४ सामायक आज्ञा मांहि के बाहर, आज्ञा मांहि छै।

५ सामायक चोर के साहूकार, साहूकार छै।

६ सामायक छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सावद्य जीव के अजीव; जीव छै।

८ सावद्य सावद्य छै के निर्वद्य; सावद्य छै।

६ सावद्य आज्ञा मांहि के बाहर; बाहर छै।

१० सावद्य चोर के साहूकार; चोर छै।

११ सावद्य रूपी के अरूपी; अरूपी छै।

१२ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग; छांडवा जोग छै।

१३ निर्वद्य जीव के अजीव; जीव छै ।

१४ निर्वद्य सावद्य के निर्वद्य; निर्वद्य छै ।

१५ निर्वद्य चोर के साहूकार साहूकार छै ।

१६ निर्वद्य रूपीके अरूपी; अरूपी छै ।

१७ निर्वद्य आज्ञा मांहि के बाहिर; मांहि छै ।

१८ निर्वद्य पुन्य के पाप; पुन्य पाप दोनूं नहीं किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै निर्वद्य जीव छै।

१९ सावद्य पुन्य के पाप; पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै सावद्य जीव छै ।

२० निर्वद्य धर्म के अधर्म; धर्म छै।

२१ निर्वद्य छांडवा जोगके आदरवा जोग; आदरवा जोग छै ।

२२ अधर्म अने अधर्मास्ति येक के दोय; दोय किणन्याय, अधर्म तो जीव छै अधर्मास्ति अजीव छै ।

२३ धर्मास्ति अने अधर्मास्ति येक के दोय; दोय, किणन्याय, धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अने अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै ।

२४ धर्म अने धर्मी येक के दोय; येक छै, किण-

न्याय धर्म जीवका चोखा परिणाम छे ।
२५ अधर्म अने अधर्मो येक के दोय; येकछै किण-
न्याय अधर्म जीवका खोटा परिणाम छै।

॥ नवपदार्थ की चरचा ॥

१ नव पदार्थमें जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ; जीव, आश्रव, संबर बिर्जरा, मोच्च, ये पांच तो जीव छै अनें अजीव पुन्य पाप बंध येच्यार पदार्थ अजीव छै।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निर्वद्य कितना; जीव अनें आश्रव ये दोय तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, संबर, निर्जरा, मोच्च ये तीन पदार्थ निर्वद्य छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहर कितना; जीव, आश्रव, ये दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहर पण छै, अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ये च्यार आज्ञा मांह बाहर दोनूं नहीं संबर, निर्जरा, मोच्च, ए आज्ञा मांह छै।

४ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना; जीव, आश्रव, संबर, निर्जरा, मोच्च, ए पांच तो

अरूपी छै; अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य पाप बंध रूपी छै।

५ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना; जीव, आश्रव, तो चोर साहूकार दोनूंही छै अजीव पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं; संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छै।

६ नव पदार्थमें छांडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना; जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, बंध, ए छव तो छोड़वा जोग छै संवर निर्जरा, मोक्ष, ए तीन आदरवा जोग छै।

७ छव द्रव्यमें जीव कितना अजीव कितना; येक जीव पांच अजीव।

८ छव द्रव्यमें रूपी कितना अरूपी कितना; जीव, धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकास्ति, काल, ये पांच तो अरूपी छै पुद्गल रूपी छै।

९ छव द्रव्य में आज्ञा मांह कितना आज्ञा बाहर कितना; जीवतो आज्ञा मांह बाहर दोनू छै बाकी पांच आज्ञा मांह बाहर दोनू नहीं।

१० छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना; जीवतो चोर साहूकार दोनू छै; बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनू नहीं अजीव छै।

११ छव द्रव्य में येक कितना अनेक कितना; धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकास्ती, ये तीनों तो येकही द्रव्यछै काल, जीव, पुद्गलास्ति ए तीन अनेक छै इणांका अनन्ताद्रव्य छै।

१२ छव द्रव्यमें सावद्य कितना निर्वद्य कितना; येक जीव द्रव्य तो सावद्य निर्वद्य दोनू छै: बाकी पांच द्रव्य सावद्य निर्वध दोनू नहीं।

१३ छव द्रव्यमें सपरदेशी कितना अपरदेशी कितना; येक काल तो अपरदेशी छै बाकी पांच सपरदेशी छै।

॥ प्रश्नोत्तर ॥

१ थारी गति कांई:—मनुष्य गति।

२ थारी जाति कांई:—पचेन्द्री।

३ थारी काय कांई:—त्रस काय।

४ इन्द्रीयां कितनीपावे:—५ पांच

५ पर्याय कितनापावे:—६ छव

६ प्राण कितना पावे:—१० दसपावे

७ शरीर कितने पावै:—३ तीन ओदारिक, तेजस, कार्मण।

८ जोग कितना पावै! ९ नव पावै च्यार मनका

च्यार वचनका येक काया को ओदारिक ।

९ तूमें उपयोग कितना पावे:—४ च्यार पावै मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षुदर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४

१० थारे कर्म कितना:—८ आठ

११ गुणस्थान किसो पावे:—व्यवहारथी पांच मूं साधू नें पूछै तो छटो

१२ विषय कितनी पावै:—२३ तेवीस

१३ मिथ्यात्वनां दस बोल पावै कै नहीं, व्यवहारथी नहीं पावै

१४ जीवका चौदां भेदांमें सें किसो भेदपावै १ येक चोदमूं पर्याप्तो सन्नी पंचेन्द्री को

१५ आतमां कितनी पावै: श्रावकमें तो ७ सात पावै अने साधूमें आठ पावै

१६ दंडक किसोपावै: येक इकबीसमु

१७ लेस्या कितनी पावै:—६ छव

१८ द्दष्टी कितनी पावै:—व्यवहारथी ऐक सम्यक् द्दष्टी पावै

१९ ध्यान कितना पावै:—३ तीन सुक्ल ध्यान टाल

२० छवद्रव्यमें किसा द्रव्य पावै:—१ एक जीवद्रव्य

२१ रास कौसी पावै:—१ एक जीव रास

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावै कै साधु में:—श्रावक में

२३ साधू का पंच माहा व्रत पावै कै नहीं:—साधू मैं पावें श्रावक में पावै नहीं

२४ पाच चारित्र श्रावक में पावै कै नहीं: — येक देश चारित्र पावै

१ येकेन्द्री की गति काई: तिर्यंचगति

२ येकेन्द्री की जाति कांई: — येकेन्द्री

३ येकेन्द्रीमें काया कौसी पावै:—५ पांच थावरकी

४ येकेन्द्रीमें इन्द्रियां कितनी पावै:—येक स्पर्श इन्द्री

५ येकेन्द्रीमें पर्याय कितनी पावै:—४ च्यारमन भाषा एटोयटली

६ येकेन्द्रीमें प्राण कितना पावै:—४ च्यार, पावै स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ कायबलप्राण २ श्वासो श्वासबलप्राण ३ आयुषाबलप्राणं ४

७ मूरड माटी मुलतानी पथर सोनूं चांदी रत-नादिक की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंचगति
जाति कांई	येकेन्द्री
काय कीसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	येकस्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मनभाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार पावै स्पर्श इन्द्री- १ काय २ साश्वोस ३ आयुषो४

८ पांणी ओसादि अपकायनीं

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	येकेंद्री
काय कीसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	येक स्पर्श इंद्री
पर्याय कितनी	४ च्यार मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

९ अगनी तेउकायनी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेंद्री
काय कोसी	तेउकाय
इंद्रीयां कितनी	एक स्पर्श इंद्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषाटली
प्राण कितना	४ च्यार, उपर प्रमाणे

१० वायु कायकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेंद्री
काय कांई	वायु काय
इंद्रियां कितनी	एक स्पर्श इंद्री
पर्याय कितनी	४ च्यार उपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार उपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण फूलण आदि बनस्पतिकाय नीं,

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेंद्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इंद्रियां कितनी	एक स्पर्श इंद्री
पर्याय कितनी	चार उपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार उपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेइन्द्री की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	बेइंद्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	२ दोय स्पर्श रस इंद्री
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली
प्राण कितना	६ छव रस इंद्री बलप्राण १ स्पर्श इंद्री बल प्राण २ काय बल प्राण ३

श्वासोश्वासबल प्राण ४
आउषो बल प्राण ५
भाषा बल प्राण ६

१३ कीडी मकोडा आदि तेइन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेइंद्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	३तीन,स्पर्श १रस२प्राण३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात,छवतोउपरप्रमाणे प्राण इंद्री बल प्राणबध्यो

१४ मांखी मच्छर टीडी पतंगीया विच्छु आदि चौ इन्द्री की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चो इन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	४ चार,श्रुत इंद्री टली

पर्याय कितनी	५ पांच, मन टल्यो
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इंद्री बल प्राण और बध्यो

१५ पंचेन्द्रीकी

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ चारूँ ही पावै
जाति कांई	पंचेंद्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावै सन्नीमें, और असन्नी में ५ पांच, मनटल्यो,
प्राण कितना पावै	सन्नीमें तो १० दसूँही पावै, असन्नी में ९ पावै मनटल्यो

१६ नारकी की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नर्क गति
जाति कांई	पंचेंद्री
काय कांई	त्रस काय

इन्द्रियां कितनी	५ पांचोही
पर्याय कितनी	५ पांच, मन भाषाभेली लेखवी
प्राण कितना	१० दसों ही

१७ देवताकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रीयां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दसोंही

१८ मनुष्यकी पूछा असन्नी की

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥
प्राण कितना	७॥श्वासलेवेतोउश्वासनहीं

१९ सनी मनुष्य की पूछा

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१० दस

१ तुमे सन्नीके असन्नीः—सन्नी, किणन्याय मनछै

२ तुमे सुक्षमके बादरः—बादर, किण० दीखू छूं

३ तुमे त्रसके स्थावरः—त्रस, किण० हालू चालू छूं

४ येकेन्द्री सन्नीके असन्नीः--असन्नी, किणन्याय मन नहीं

५ येकेन्द्री सुक्ष्मके बादरः--दोनूं हीं छै, किण० येकेन्द्री दोय प्रकार की छै दीखे छै ते बादर छै, नहीं दीखे ते सुक्ष्म छै

६ येकेन्द्री त्रस के स्थावरः--स्थावर छै, हालै चालै नहीं

७ येकेन्द्री सन्नीके असन्नीः--असन्नी किण० मन नहीं

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय वायुकाय तेउकाय बनस्पतिकाय

प्रश्न	उत्तर
सन्नीकि असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सुक्ष्म कि बादर	दोनूं ही प्रकार की छै
त्रस कि स्थावर	स्थावर छै

९ बेइन्द्री तेइन्द्री चौ इन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	असन्नी छै मन नही
सुक्ष्म कि बादर	बादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यंच पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	दोनूं हीं छै
सुक्ष्म कि बादर	बादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चउदै स्थानकमें निपजे

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	असन्नी छै
सुच्म कि बादर	बादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भमें उपजै जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	सन्नी छै
त्रसकि स्थावर	त्रस छै
सुच्म कि बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरीयाकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी कि असन्नी	सन्नी छै
सुच्म के बादर	बादर छै
त्रस कि स्थावर	त्रस छै

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सुच्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय भैंस हाथी घोड़ा बलद पंखो आदि पसू ज्यानवरकी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नो के असन्नी	दोनूंही प्रकारका छै छमो छमके मन नहीं, गर्भजके मन छै
सुच्म के बादर	बादर छै, नेत्रसें देखवा में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हालै चालैछै

१ येकेन्द्रीमें वेद कितना पावै:—ऐक नपुसग वेद पावै

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति बायरो अगनी यां पांचां में वेद कितनां पावै:—१ एक नपूंसगही छै

३ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्रीमें वेद कितना पावै:— ऐक नपूसग वेदही पावै छै

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावै:—सन्नीमें तो तीनों ही वेद पावैछै, असन्नी में ऐक नपूंसग वेदहीछै

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै:—असन्नी मनुष्य चौदे थानक में उपजै जीगां में तो वेद ऐक नपूंसग ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजै जिणांमें वेद तीनों ही पावैछै

६ नारकी में वेद कितना पावै:—ऐक नपूंसग वेदही पावै छै

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर यां पांच प्रकारका तिर्यंचामें वेद कितना पावै:—छमोछम उपजे ते असन्नीछै जिणांमें तो वेद नपूंसग ही पावैछै, अनें गर्भमें उपजै ते सन्नीछै जीणांमें वेद तीनोंही पावैछै

८ देवतामें वेद कितना पावै:—उत्तर, भवन पती वाणव्यन्तर जोतषी पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद दोय, स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देवलोकसें स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुष ही छै

९ चोवीस दंडक का जीवांकि कर्म कितना:— उगणीस दंडकका जीवांमें तो कर्म आठही पावैछै, अने मनुष्यमें सात आठ तथा च्यार

१ धर्म व्रतमें के अव्रतमें :-व्रतमें

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहर:--श्री वीतरागदेव की आज्ञा मांह छै

३ धर्म हिन्सामें के दया में :-दया में

४ धर्म मोलमिलै के नहीं मिलै:-नहीं मिलै धर्म तो अमूल्य छै

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै:--नहीं मिलै अमूल्य छै

६ गुरू मोललीयां मिलै के नहीं मिलै:--नहीं मिलै अमूल्य छै

७ साधूजी तपस्या करैते व्रतमें के अव्रत में:--व्रतमें ते निर्जरा अधिक धर्म छै

८ साधूजी पारणो करै ते व्रतमें के अव्रत में :--व्रत में किणन्याय साधू के कोई प्रकार अव्रतही नहीं सर्व सावद्य जोगका त्याग छै

९ श्रावक उपवास आदि तपकरै ते व्रतमें के अव्रतमें :-व्रत में

१० श्रावक पारणूं करै ते व्रतमें के अव्रत में:-अव्रत में किणन्याय श्रावक को खाणों पीणों पहरणों ए सर्व अव्रतमें श्रीउवाई तथा सुयगडांग सूत्रमें विसतार छै

११ साधूजी ने सूज तो निर्दोष आहार पाणी दीयां कांई होवे व्रतमें के अव्रत में:-अशुभ कर्म खयथाय तथा पुन्यबंध छै और १२ बारमूं व्रत निपजै

१२ साधूजीनें असूज तो दोषसहित आहार पाणी दीयां कांई होवै तथा व्रतमें के अव्रत में:-श्री-भगवती सूत्र में कह्यो छै तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजै ठाणें कह्यो छै अल्प आयुषबंधै अ-कल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूज तो दीधो ते व्रत में नहीं

१३ अरिहंतदेव देवता के मनुष्य :-मनुष्य छै

१४ साधू देवता के मनुष्य:-मनुष्य छै

१५ देवता साधूनीं वंछा करै के नहीं करै:-करै साधू तो सबका पूजनीक छै

१६ साधू देवताकी बांछा करै के नहीं करै:- नहीं करै

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य:-दोनूं नहीं

१८ सिद्ध भगवान सुक्ष्मके बादर:-दोनूं नहीं

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर:-दोनूं नहीं

२० सिद्ध भगवन सन्नीके असन्नी :-दोनूं नहीं

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता :-दोनूं नहीं

॥ इति पानाकी चरचा ॥

१ असंयति अव्रतीने दीयां कांई होवै:-श्रीभगवती सूत्र कि आठमें सतक छटे उदेसे कह्यो असंयति अव्रती नें सूजतो असूजतो सचित अचित च्यार प्रकार को आहारदीयां येकान्ति पाप होय निर्जरा नहीं होय

२ असंजति अव्रती जीवको जीवणो बंछणो कि कि मरणो बंछणो:-असंजतिको जीवणो बंछणो नहीं मरणो बंछणो नहीं, संसार समुद्र सें तिरणो बंछणो ते श्रीबीतरागदेव को धर्म छै

३ कसाई जीवोंने मारै तिणबेल्यां साधू कसाई नें उपदेश देवे कि नहीं देवे:-अवसर देखे तो उपदेश देवे कि नहीं देवे :-अवसर देखे तो उपदेश देवे हिन्साका खोटाफल कहै।

प्रश्न:--जीवोंको जीवणो बांछ कर उपदेश देवे की कसाईनें तारवा निमित्त-उपदेश देवे:-

उत्तर--कसाई नें तारवा निमित्त उपदेश देवे ते बीतराग को धर्म छै

४ कोई बाडासें पसू ज्यांनवर दुखिया छै अने साधू जिणारसते जाय रह्या छै तो जीवां की अनूकंपा आणी छोडे कि नहीं छोड़:-नहीं छोड़े, किणन्याय उ० श्रीनिसीत सूत्रके १२ वारमें

उद्देसे कह्यो छै अनूकम्पा करिवस जीव वांधै वंधावै अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित् आवै, तथा वंध्या जीवां नें अनुकम्पा आणी छोड़े छुड़ावै अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित् आवै तथा साधू संसारी जीवांकी सार संभार करै नहीं साधू तो संसारिक कर्तव्य त्यागदिया ।

॥ अथ तेरा द्वार ॥

❋ प्रथम मूल द्वार ❋

१ मूल १ दृष्टान्ति २ कुण ३ आतमा ४ जीव ५ अरूपी ६ निर्वद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण प्रजाय ९ द्रव्या दिक १० आज्ञा ११ निनय १२ तलाव १३ ए तेराद्वार जांणवा: प्रथम मूलद्वार कहै छै जीव ते चेतना लक्षण, अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहते आश्रव, कर्म, रोके ते संवर, देशथ की कर्म, तोडी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा जीव संघाते शुभाशुभ कर्म वंध्या ते वंध समस्त कर्मां सें मूकावै ते मोक्ष, ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ दूसरो दृष्टान्ति द्वार ॥

२ जीव चेतन का २ दोय भेदः---

एक सिद्ध, दूजो संसारी सिद्ध करमां रहित छै; संसारी करमां सहित छै, तिणारा अनेक भेद छै सुक्ष्म अने बादर त्रसने स्थावर सन्नी अने असन्नी तीन बेद चार गति पांच जाति छव काय चोदे भेद जीवनां चौबीस दंडक इत्यादिक अनेक भेद जाणवा ते चेतन गुण ओलखवानें सोनांरो दृष्टान्ति कहै छै, जिम सोनांनों गहणों भांजी भांजीनें ओर ओर आकारे घडावे तो आकार नों विनासथाय पण सोनानों बिनाश नथी, जिमकर्मों नां उदय थी जीव की पर्याय पलटे पण मूल चेतन गुण नों बिनास नहीं।

अजीव अचेतन तिणारा पांच भेदः।

धर्मास्ति अधर्मास्ति आकास्ति काल पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारांकी पर्याय पलटे नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटे ते ओलखवानें सोनानों दृष्टान्ति कहै छै जिम कोई सोनानों गहणो भांजी भांजी ओर ओर आकारे घडावे

तो आकारनों विनास पण सोनानों विनास नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटे पण पुद्गल गुण को विनास नहीं।

पुन्य ते शुभ कर्म पाप ते अशुभ कर्म, ते पुन्य पाप ओलखवानें पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्ति कहै छै, कदेक जीवके पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार वधै तो जीवकै निरोगपणो घटै अनें सरोगपणों वधै, कदे जीवरे पथ्य आहार वधै अपथ्य घटै तब जीवरै सरोगपणो घटै अनें निरोगपणों वधै पथ्य अपथ्य दोनूं घटजाय तो प्राणी मर्ण पामें, ज्यों जीवकै पुन्य घटै अरुपाप वधै तो सुख घटै अने दुख वधै, कदे जीव के पाप घटै और पुन्य वधै तो सुख वधै अने दुख घटै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रहते आश्रव ते ओलखवानें तीन दृष्टान्ति पांच कहण कहै छै

१ प्रथम कहण।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आश्रव

२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आश्रव

३ नावांके छिद्र ज्यों जीवरे आश्रव इमकह्याथकां

कोइ जीवने आश्रव दोय सरधे तिणने एक सरधावा ने

२ दूजो कहण कहै छै ।

१ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आश्रव एक
२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आश्रव एक
३ नावां अनें छिद्र एक, ज्यूं जीव आश्रव एक

३ कर्म आवे ते आश्रव ते ओलखवानैं

३ तीजो कहण कहै छै

१ पांणी आवे ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।
२ मनुष्य आवै ते बारणों ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।
३ पांणी आवै ते छिद्र ज्यों कर्म आवै ते आश्रव ।

४ इम कह्या थकां कोई कर्म अनें आश्रव येक सरधै तेंहनैं दोय सरधावानैं

चोथों कहण कहै छै ।

१ पांणी अनें नालो दोय ज्यों कर्म अनें आश्रव दोय ।
२ मनुष्य अनें बारणों दोय ज्यों कर्म अनें आश्रव दोय ।
३ पांणी छिद्र दोय ज्यों कर्म अने आश्रव दोय ।

५ विशेष ओलखवाने पांचमूं कहण कहेछै

१ पांणी आवे ते नालो पण पांणी नालो नहीं ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं।

३ पांणी आवै ते छिद्र पण पांणी छिद्र नहीं ज्यों कर्म आवे ते आश्रव पण कर्म आश्रव नहीं।

कर्म रोके तें संवर तें ओलखवानें तीन दृष्टान्ति कहै छै।

१ तलाव रो नालो रूंधै ज्यों जीवै रे आश्रव रूंधे ते संवर।

२ हवेलीरो बारणों रूंधे ज्यों जीवरै आश्रव रूंधे ते संवर।

३ नावांरे छेद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आश्रव रूंधै ते संवर।

देसथकी कर्म तोड़ी जीव देसथी उज्जल थायते निर्जरा ओलखवाने तीन दृष्टान्ति कहै छै।

१ तलवारो पांणी मोरीयादिक करी नें काढ़ै ज्यों

जीव भला भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पांणी काढ़े ते निर्जरा।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी नें काडे ज्यों भला भाव प्रावर्तावी नें जीव रूपणी हवेलीरो जीव कर्म रूपीयो कचरो काडे ते निरजरा।

३ नावां को पांणी उलेची २ नें काडे ज्यूं जीव भलो भाव प्रवर्तावी नें जीव रूपणी नावांका कर्म रूपीयो पांणी काडे तै निर्जरा।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुयाते बंध ते ओलखवानै छत्र बोल कहे छै।

१ पहिले बोले कह्यो स्वामीजी जीव अने कर्म नौं आदि छै ये बात मिलै अथवा न मिले। गुरू बोल्या न मिलै (प्रश्न) क्यूं नें मिले गुरू बोल्या ए उपनों नहीं।

२ दूजै बोले कह्यो स्वामीजी पहिली जीव और पाछै कर्म ये बात मिलै। गुरू बोल्या नहीं मिलै: प्रश्न—क्यो न मिलै: उ०—कर्म बिनाजीव रह्यो किहां मोच गयो पाछो आवै नहीं यों न मिलै।

३ तीजे बोलै कह्यो स्वामीजी पहली कर्म अनैं पछै जीव ये मिलै गुरू कहै नहीं मिलैं ।

प्र०—क्यों न मिलै । गुरू कहै कर्म कीयां बिना हुवै नहीं तो जीव बिना कर्म कुण किया

४ चौथे बोले कह्यो स्वामीजी जीव कर्म येक साथ उपना ये मिले गुरू कहै न मिले ।

प्र०—किणन्याय । उ०—जीव कर्म यां दोयां में उपजावण वालो कुण ।

५ पांच में बोले जीव कर्म रहीत छै ये बात मिलै गुरू कहै न मिले । प्र०—किणन्याय । उ०—ये जीव कर्म रहीत होवै तो करणी करवारी खप (चूंप) कुणकरै मुक्ति गयो पाछो आवे नहीं ।

६ छठे बोलै कह्यो स्वामीजी जीव अने कर्म नों मिलाप किण विधि थाय छैं गुरू कहै अपच्छा न पूर्व पणे अनादि कालसें जीव कर्म मिलाप चल्यौ जाय छे ।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छै ।

प्रकृति बंध कर्म सभावरे न्याय १ स्थिति बंध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग बंध रस विपाकरैं न्याय ३ प्रदेश बंध जीव कर्म लोली भूतरे न्याय ४

ते ओलखवानै तीन दृष्टांत कहैछै ।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

२ घृत दूध लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

३ धातू माटी लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

समस्त कर्मासें मूकावे ते मोक्ष तें ओलख वानै तीन दृष्टांत कहै छै ।

१ घांणीयांदिकनूं उपायकरी तेल खल रहित होवे ज्यों तप संजमादि करी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

२ झेरणादिक को उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्यूं तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

३ अग्नियांदिकनूं उपायकरी धातू माटी अलग होवे ज्यों तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष ।

॥ तीजो कोण द्वार कहै छै ॥

जीव चेतन छवद्रव्यांमें कोंण नव पदार्थों में कोंण:

छवद्रवां में तो एक जीव नव पदार्थों में पांच। जीव १ आश्रव २ संवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छवमें कोंण नवमें कोंण:- छवमें ५ पांच, नवमें ४ च्यार, छवद्रवां में तो धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कोंण नवमें कोंण: छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बंध ३

पाप ते अशुभ कर्म छवमें कोंण नवमें कोण: छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन अजीव१ पाप२ बंध ३

कर्म ग्रह ते आश्रव छवमें कोंण नवमें कोण:— छवमें जीव, नवमें जीव १ आश्रव २

कर्म रोके ते संवर छवमें कोंण नवमें कोंण:— छवमें जीव नवमें जीव संवर

देशथी कर्म तोडी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छवमें कोंण नवमें कोंण:—छवमें जीव, नव में जीव १ निर्जरा २

बंध छवमें कोंण नवमें कोंण:—छवमें पुद्गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४

मोक्ष छवमें कोंण नवमें कोंण:—छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष

चालै ते कोंण चालवानों साझ किणरो:—चालै ते जीव पुद्गल, अनें साझ धर्मास्तिकायनों

थिर रहै ते कोंण थिर रहवानों साझ किणरो:—थिर रहै जीव पुद्गल, साझ अधर्मास्तिकाय नो

वस्तु ते कोंण भाजन किणरो:—वस्तु तो जीव पुद्गल, भाजन आकास्तिकायनों

वरतै ते कोंण वर्तै किण ऊपर:—बरते तो काल अने बरतै जीव अजीव उपर

भोगवै ते कोंण अने भोगमें आवै ते कोण:—भोगवै ते जीव, भोगमें आवे ते पुद्गल दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणें दूजो कर्म पणे

कर्मां री करता कोण कीधाहोवे ते कोंण:—करता तो जीव कीधाहुवा कर्म

कर्मांरो उपाय ते कोंण उपनां ते कोंण:—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मांने लगावे ते कोंण लाग्या हुवा ते कोंण:—लगावै ते जीव, लागै ते कर्म

कर्म रोकै ते कोंण रूक्या ते कोंण:—रोकै तो जीव, रूक्या ते कर्म

कर्मां नैं तोडै ते कोण तूट्या ते कोण:—तोडै तै जीव अने तूट्या ते कर्म

कर्मां नें बांधै ते कोंण बंध्या ते कोंण बांधै ते जीव बंध्या ते कर्म

कर्मां नैं खपावै ते कोंण अने क्षयथया ते कोंण खपावै ते जीव क्षयथया ते कर्म

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चोथो आतमा द्वार कहै छै ॥

जीवचेतन ते आतमा छै अनेरो नहीं।

अजीव अचेतन आतमा नहीं अनेरो छै।

आतमारे काम आवै छै पण आतमा नहीं कोंण कोंण काम आवै ते कहै छै।

धर्मास्तिकाय अवलम्ब नैं चालै छै।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नैं स्थिर रहै छै

आकास्तिकाय अवलम्ब नैं बसै छै।

काल अवलम्बनैं कार्य करै छै।

पुद्गल खाय छै, पीवे छे, पहरे छे, ओडे छे इत्यादि अनेक प्रकारे आतमारे काम आवे छे पण आतमा नहीं। पुन्यते शुभ कर्म आतमारे शुभ पणें उदय आवे छे पण आतमां नहीं

पापते अशुभ कर्म आतमारे अशुभ पणें उदय आवे छे पण आतमां नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रह ते आश्रव आतमां छे अनेरो नहीं ।

कर्म रोके ते सम्बर आतमा छे अनेरो नहीं देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जलथाय ते निर्जरा आतमां छे अनेरो नहीं

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आतमां नहीं अनेरो छे आतमां नैं बांध राखीछे पण आतमां नहीं ।

समस्त कर्मां सें मूकावे ते मोक्ष आतमां छे अनेरो नहीं ।

इति चतुर्थ द्वारम् ।

॥ अथः पांचमूं जीव द्वार कहे छे ॥

जीव ते चेतन तिण जीवनैं जीव कहिजे जीवेने आश्रव कहिजे जीवनें संबर कहिजे जीव नें निर्जरा कहिजे जीव नें मोक्ष कहिजे ।

अजीव अचेतन नें अजीव कहिजे पुन्य कहिजे पाप कहिजे बंध कहिजे ।

पुन्यते शुभ कर्म तेहनैं पुन्य कहिजे तेहनें अजीव कहिजे तेहनें बंध कहिजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहनें पाप कहिजे अजीव कहिजे बंध कहिजे ।

कर्म ग्रहै ते आश्रव कहिजे तेहनें जीव कहिजे कर्म रोके ते संवर कहिजे जीव कहिजे ।

देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जलथाय तेहनें निर्जरा कहिजे जीव कहिजे ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहिजे अजीव कहिजे । पुन्य कहिजे । पाप कहिजे ।

समस्त कर्म मुकावे ते मोक्ष कहिजे जीव कहिजे हिवे येहनों ओलखणा न्याय सहित कहै छै ।

जीवनें जीव किणन्याय कहिजे, गये काल जीव छो वर्तमान काल जीव छै आगमें काल जीव को जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव नें अजीव किणन्याय कहिजे, गये काल अजीव छो वर्तमानकाल अजीव छै आगमें काल अजीव को अजीव रहै छै ।

पुन्य नें अजीव किणन्याय कहिजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छे पुदगल ते अजीव छे।

पाप नैं अजीव किणन्याय कहिजे, पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुदगल छे पुदगल ते अजीव छै ।

आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे:—आश्रव तो

कर्म ग्रह छे कर्मांरो करता छे कर्मांरो उपाय छे उपाय ते जीव हो छे।

१ मिथ्यात आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे विपरीत सरधान ते मिथ्यात आश्रव विपरीत सरधान जीवरा परिणाम छे।

२ अव्रत आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे अत्याग भाव ते जीवरी आसा बांछा अव्रत आश्रव छै ते जीवरा परिणाम छे।

३ परमाद आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे अण उत्साहपणों ते पर्माद आश्रव छे ते जीवरा परिणाम छे।

४ कषाय आश्रव नें जीव किणन्याय कहिजे कषाय आतमा कही छे कषाय ते जीवरा परिणाम छे ते जीव छें।

जोग आश्रवानें जीव किणन्याय कहिजे जोग आतमा कही छे जोग ते जीवरा परिणाम छे जोग नाम व्यापार तीनूं ही जोगांरो व्यापार जीवरो छे।

संवर नें जीव किणन्याय कहिजे समाई पच्च खाण संयम संवर विवेक विउसग ये छउँ आतमां कही छे वलि चारित्र आतमां कहीछे चारित्र जीवरा परिणाम छे इणन्याय।

निर्जरा नें जीव किणन्याय कहिजे भला भाव प्रवर्तावी नें जीव देसथी उजलो हुवे ते जीव छे।

बंधने अजीव किणन्याय कहिजे बंध तो शुभ अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे, पुद्गल ते अजीव छे।

मोक्षनें जीव किणन्याय कहिजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहिजे निर्वांण कहिजे सिद्ध भगवांन कहिजे सिद्ध भगवांन ते जीव छे इणन्याय मोक्षनें जीव कहिजे।

॥ इति पंचमूँ द्वारम् ॥

॥ अथः छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहै छै ॥

जीव अरूपी छे अजीव रूपी अरूपी दोनूं छे पुन्य रूपी छे पाप रूपी छे आश्रव अरूपी छे संवर अरूपी छे निर्जरा अरूपी छे बंध रूपी छे मोक्ष अरूपी छे हवे एहनी ओलखना कहै छे।

जीवनें अरूपी किणन्याय कहिजे छव द्रवांमें जीवनें अरूपी कह्यो छे पांच वर्ण पावे नहीं।

अजीव नें अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहिजे अजीवका पांच भेद धर्मास्ति अधर्मास्ति. आकास्ति काल, पुद्गल इणामें च्यार तो अरूपी छे यामें पांच वर्ण पावे नहीं एक पुद्गल रूपी छे।

पुन्य नें रूपी किगान्याय कहिजे पुन्य तो शुभ कर्म छै कर्म ते पुदगल छै पुदगल ते रूपी छै

पापनें रूपी किगान्याय कहिजे पाप ते अशुभ कर्म छै कर्म ते पुदगल छै पुदगल ते रूपी छै।

आश्रव नें अरूपीं किगान्याय कहिजे क्रृषाादिक छऊँ भाव लेस्या अरूपी कही छै।

मित्थ्यात आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे मित्थ्या दृष्टी अरूपी कही छै।

अवर्त आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे अत्याग भाव परिगाम जीवरा अरूपी कह्या छै।

प्रमाद आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे अगाउछाहपगों ते प्रमाद आश्रव छै जीवरा परिगाम छै ते जीव छै जीवते अरूपी छै।

कषाय आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे श्रीठागांग दसमें ठागों जीव परिगामींरा दस भेदां में कषाय, परिगामी कह्यो छै अनें ज्ञान दर्शन चारित परिगामी कह्या छै ये जीव छै तिम कषाय परिगामी जीव छै कषायपगों परिगामें ते कषाय परिगामी आश्रव छै जीव छै जीव ते अरूपी छै

जोग आश्रव नें अरूपी किगान्याय कहिजे तीनों

हीं जोगांरो उठाण कर्म बल वीर्य पुर्षाकार पराक्रम अरुपी छै ।

संबर ने अरुपी किणन्याय कहिजे अठारे पाप ठाणांरो बिरमण अरुपी कह्यो छै ।

निर्जरा नें अरुपी किणन्याय कहिजे कर्म तोड़-वारो उठांण कर्म बल वीर्य पुरषाकार प्राक्रम अरुपी छै ।

बंधनें रुपी किणन्याय कहिजे बंधते शुभाशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रुपी छै ।

मोक्ष नें अरुपी किणन्याय कहीजे समस्त कर्मां नें मूकावे ते जीव छै तेहने मोक्ष कहीजे सिद्ध भग-वांन कहीजे सिद्धभगवांन ते अरुपी छै ।

॥ इति छठो द्वारम् ॥

॥ अथः सातमूं सावद्यनिवद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं । पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै । आश्रव का पांच भेद, मिथ्यात आश्रव, अव्रत आश्रव, प्रमाद आश्रव, कषाय आश्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै । इणन्याय आश्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै । संबर निर्वद्य छै । निर्जरा निर्वद्य छै

बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथः आठमूं भावद्वार कहै छै ॥

भाव ५ पांच:—उदय भाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनों अनें उदय निपन्नरा दोय भेद:—जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न२ तिणमें जीव उदय निपन्नरा३३ तेतीस भेद ते कहै छै ४ च्यार गति ६ छव काय ६ छव लेस्या ४ च्यार कषाय ३ तीन बेद एवं २३ मिथ्याती २४ अव्रती २५ असन्नी २६ अनाणी २७ आहारता २८ संसारता २९ असिद्ध ३० अकेवली ३१ छद्मस्त ३२ संजोगी ३३

हिवे जीवरे अजीव उदय निप्पन्नरा ३० तीस भेद ते कहै छै ५ पांच सरीर ५ पांच सरीररे प्रयोग परणिम्यां द्रब ५ पांच वर्ण २ दोय गंध ५ पांच रस ८ आठ स्पर्स एवं तीस।

उपशमरादोय भेद एकतो उपशम १ दूजो उपशम निप्पन्न भाव उपशम तो एक मोहणी कर्मनों

होय उपशम निष्पन्नरा दोय भेद, उपशम समकित १ उपशम चारित्र २

क्षायकरा दोय भेद एक तो क्षायक दूजो क्षायक निष्पन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को क्षय अने क्षायक निष्पन्नरा १३ तेरा भेद ते कहै छै।

केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आतमिक सुख ३ क्षायक समकित ४ क्षायक चारित्र ५ अटल अवगाहना ६ अमुर्तिक पणों ७ अगुरु लघूपणों ८ दान लब्धि ९ लाभ लब्धि १० भोगलब्धि ११ उपभोग लब्धि १२ वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद, येक तो क्षयोपशम १ दूजो क्षयोपशम निष्पन्न भाव २ क्षयोपशम तो च्यार कर्म को ज्ञाना वर्णी दरशनावरणी मोहनी अंतराय, अने क्षयोपशम निष्पन्न भावरा ३२ बत्तीस बोल ते कहै छै।

ज्ञानावरणी कर्मरो क्षयोपशम होवतो ८ आठ बोलपामें, केवल वरजो ४ च्यार ज्ञान ३ तीन अज्ञान १ एक भणवो गुणवो।

दरशनावरणी कर्मरो क्षयोपशम होयतो आठ बोलपामें ५ पांच इन्द्री ३ तीन दरशन केवल वरजी।

मोहनी कर्मरो क्षयोपशम होयतो आठ बोलपामें ४ च्यार चारित्र १ एक देसवरत ३ दृष्टी

अंतराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामें ५ पांच लब्धि ३ तीन बीर्य।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामि १ अनादिया परिणामी २ अनादिया परिणामिकरा १० दस भेद, तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ७ सातमूं लोक ८ आठमूँ अलोक ९ नवमूँ भवी १० दसमूँ अभवी। अने सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा। गांम नगर गडा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जांणवा।

जीव आंश्री जीव परिणामीरा १० दस भेद ते कहै छै।

गति परिणामी १ इन्द्रीय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेस्या परिणामी ४ जोग परिणामी ५ उपयोग परिणामि ६ ज्ञान परिणामी ७ दरशन परिणामी ८ चारित्र परिणामी ९ वेदपरिणामी १०

होवे जीव आंश्री अजीव परिणामीरा १० दस भेद कहै छै।

बन्धन परिणामी १ गई परिणामी २ संठाण

परिणामी ३ भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्परस परिणामी ८ अगुरु लघू परिणामी ९ शब्द परिणामी १० ॥ जीव में भाव पावै ५ पांचूं ही, अजीव पुन्य पाप वन्धमें भाव एक परिणामिक।

आश्रव भाव दोय:—उदय, परिणामिक।

संवर भाव ४ च्यार उदय वरजी नैं।

निर्जरा भाव ३ तीन क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक, परिणामिक।

इति अष्टम द्वारम्।

॥ अथः नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्यात प्रदेशी गुण८आठ ज्ञान, दरशन, चारित्र, तप, वीर्य, उपयोग, सुख, दुख, ए एक एक गुणारी अनन्ती अनन्ती पर्याय।

ज्ञानें करी अनन्ता पदार्थ जाणें तिणसूं अनन्ती पर्याय।

दरशनें करी अनन्ता पदारथं सरधे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय।

तपकरी अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

वीर्यनीं अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणें देखे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूँ अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूँ अनन्ती पर्याय वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्मीक सुख प्रगटे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

दुख अनन्त पाप प्रदेश सूँ अनन्त दुख वेदे तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

अजीव नां पांच भेदः—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकास्ति; काल, पुद्गलास्ति यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानों साझ पर्याय अनन्त पदार्थ नें चालवानों साझ तिणसूँ अनन्त पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति गुण थिर रहैवानोसाज पर्याय अनन्ता पदार्थ ने थिर रहवानोसाझ तिणसू अनंन्ती पर्याय।

द्रव्य तो एक आकास्ति गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो काल, गुण वर्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर बरते तिणसूँ अनन्ती पर्याय।

द्रव तो पुदगल, गुण अनन्त गलै अनन्त मिलै, तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो पुन्य, गुण जीवकै शुभ पणै उदय आवै पर्याय अनन्त प्रदेश सुभ पणै उदय आवै सुख करै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो पाप, गुण जीवरै अनन्त प्रदेश अशुभ पणै उदय आवै, अनन्त दुख करै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो आश्रव गुण कर्म ग्रहवानों पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रह तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो संबर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोकै तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो निर्जरा, गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोडी देश थी जीव उजलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोडे तिणसूँ अनन्ती पर्याय ।

द्रव तो वंध, गुण जीवनें बांधराखवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधै तिणसूँ अनन्ती पर्याय

द्रव्य तो मोच, गुण आतमिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश खयहुयां अनन्त सुख प्रगटे तिणसूं अनन्तो पर्याय ।

इति नवमूँ द्वारम् ।

॥ अथः दसमूँद्रव्यादिकरी ओलखनाद्वार ॥

जीवनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी अरूपी, गुणथी चेतन गुण

अजीव नें पांचा बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनन्ताद्रव्य खेतथी लोकालोक परमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण

पुन्य नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथकी जीवांकनें, कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी गुणथकी जीव कै शुभ पणैं उदय आवे

पाप नैं पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्य थकी अनंता द्रव्य खेतथी जीवांकनैं कालं-

थकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी, गुण-
थकी जीवरै अशुभ पणै उदय आवै

आश्रव नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रकी जीवांकनैं, काल-
थकीरा ३ तीन भेदः—एकेक आश्रवरी आदि
नहीं अंत नहीं ते अभोइ आसरी एकेक आश्रवरी
आदि नहीं पण अंत छै ते भोइ आंसरी, एकेक
आश्रवरी आदि छै अंत छै ते पडवाई समदृष्टी
आंसरी तेहनीस्थिति जघन्य अंतर महूर्त उतकृष्टी
देस उणी अर्ध पुदगल प्रावर्तन, भावथकी अरूपी,
गुणथकी कर्म ग्रहवानो गुण

संवर नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकनैं,
कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी,
गुणथकी कर्म रोकवारो गुण

निर्जरा नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य
सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी
जीवाकनैं, कालथकी आदि अंत सहित, भाव-
थकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोडवारो गुण

बंधनें पांचां बोलां ओलखीजे

द्रव्यथी अनंता द्रव्य। खेत्रथकी जीवांकने

कालथकी आदि अंत सहित भावथकी रूपी।

गुणथकी कर्म बंध रखवारो

मोक्षनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे:। द्रव्यथकी

अनंता द्रव्य। खेत्रथी जीवांकनें। कालथकी

येकेक सिद्धांरी आदि अंत नहीं तेघणां काल-

सिद्धांरे न्याय येकेक सिद्धांरी आदि छै पण अंत

नहीं। ते थोडाकाल सिद्धांरे न्याय भावथकी

अरूपी। गुणथकी आत्मिकसुख॥

धर्मास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे। द्रव्य-

थकी येक द्रव्य। खेत्र थी लोक प्रमाणे। काल-

थकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी।

गुणथकी जीव पुद्गल नें चालवारो साझ॥

अधर्मास्तिकाय नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।

द्रव्यथकी येक द्रव्य। खेत्रथी लोक प्रमाणे। काल-

थकी आदि अंतरहित। भावथकी अरूपी। गुण

थकी जीवपुद्गलनें थिर रहवानों साझ॥

आकास्ति कायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे।

द्रव्यथकी येक द्रव्य। खेत्रथकी लोक अलोक

प्रमाणे।

कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी भाजनगुण

काल नें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य । खेतथी अढाई द्वीप प्रमाणे । कालथकी आदि अन्त रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी वर्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे ।

द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य । खेतथी लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अन्त सहित । भावथकी रूपी । गुणथकी गलै मलै ।

इति दसं द्वारम् ।

॥ अथः येकादसं आज्ञा द्वार कहै छै

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूंछै, ते किणन्याय सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै । अने निर्वद्य कार्तव्य आसरी आज्ञा मांहछै ॥ अजीव आज्ञा मांह के बाहर, अजीव आज्ञा मांह बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीवछै अचेतन छै जडछै ।

पुन्य पाप बंध येतीनूं आज्ञा मांही बाहर नहीं अजीवछै ।

आश्रव आज्ञा मांह बाहर दोनूंछै, किणन्याय आश्रवना पांच भेद मिथ्याति १ अव्रती २ प्रमादी ३

कषाय ४ ए च्यार तो आज्ञा बाहरछै, जोग आश्रव का दोय भेद सुभ जोग वर्तता निर्जराहुवे तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहछै। असुभ जोग आज्ञा बाहर

संवर आज्ञा मांहछै, ते किणन्याय संवरथी कर्म रुकै ते श्री वीतरागको आज्ञा मांहछै

निर्जरा आज्ञा मांहछै ते किणन्याय कर्म तोडवारा उपाय श्रीवीतराग की आज्ञा में छै

मोक्ष आज्ञा मांह छै ते किणन्याय सकल कर्म खपावारी करणी श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहछै

इति एकादसम् द्वारं।

॥ अथः बारमूं ज्ञिनय द्वार कहै छे ॥

जीवनें जीव जांणवो॥ अजीवनें अजीव जाणवो। पुन्यनें पुन्य जाणवो। पापनें पाप जाणवो। आश्रव नें आश्रव जांणवो संवर नें संवर जांणवो। निर्जरा नें निर्जरा जाणवो। बंधनें बंध जाणवो। मोक्ष नें मोक्ष जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवां योग कह्या छै। इणां में आदरवाजोग ३ तीन, संवर १ निर्जरा २ मोक्ष ३ बाकी ६ छव छांडवा जोगछै।

जीवनें छांडवा जोग किणन्याय कहीजेः— आपरा जीवको भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजे, किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजे सुभ असुभ कर्म छांडवा जोगछै

आश्रव नें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे आश्रव कर्म ग्रहछै। कर्मांरो उपायछै। सुभासुभ कर्म आवाना बारणांछै ते छांडवा जोगछै

कर्मरोके ते संबर आदरवा जोगछै

देसथकी कर्म तोडी देसथकी जीव उज्जल थायते निर्जरा आदरावा जोगछै

बंधनें छांडवा जोग किणन्याय कहीजे। शुभा शुभ कर्म जीव के बंध रह्याछै ते बंध तो छोडवा-जोगछै

मोच्च नैं आदरवा जोग किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावि ते मोच्च आनरवा जोगछै।

इति द्वादस्म द्वार।

॥ अथः तेरमूं तलाव द्वार कहे छे ॥

तलावरूपी जीव जांणवो। अतलाव ते तलाव रूपी अजीव जाणवो। निकलता पांणी रूप पुन्य पाप जांणवो। नालारूप आश्रव जांणवो। नाला बंध

रूप संवर जाणवो। मांहिंला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वारतंत किया श्रीभीखनजीसंत

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्ण ॥

अथ लघुदंडक लिख्यते।

पहिलो शरीर द्वार।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारिक ३ तैजस ४ कार्मण ५"।

सातों ही नारकी और सर्व देवतामें शरीर पावै तीनः—वैक्रिय १ तेजस २ कार्मण ३

च्यार थावर, तीन विकलेंद्रीमें, तथा असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, सर्व युगलियामें शरीर पावै ३-औदारिक १ तैजस २ कार्मण ३।

वाउकाय, सन्नीतिर्यंचपंचेंद्रीमें, शरीर पावै ४ औदारिक १ वक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४।

गर्भज मनुष्यामें शरीर पावै पांचूंही॥"

सिद्धांमें शरीर पावै नहीं॥"

इति प्रथम शरीर द्वारम्।

२ दूसरो अवगाहना द्वार।

जघन्य अवगाहना आंगुलको असंख्यात् मं भाग उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरो।

उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुलको सं-ख्यात उं भाग, उत्कृष्टी लाखजोजनजाजेरी।

पहली नारकी की अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥ धनुष्य ६ आंगुलकी।

दूजी नारकी की अवगाहनां साढ़ी पंदरा १५॥ धनुष और १२ आंगुलकी।

तीजी नारकी की अवगाहनां ३१। धनुषकी।

चौथी नारकी की अवगाहनां ६२॥ धनुषकी।

पांचवीं नारकी की अवगाहनां १२५ धनुषकी।

छट्ठी नारकी की अवगाहनां २५० धनुषकी।

सातवीं नारकी की अवगाहनां ५०० धनुषकी।

जघन्य सातूंही नारकीकी आंगुलको असंख्यात उं भाग, उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुल को संख्यात उं भाग, उत्कृष्टी आप आपसूं दूणी।

देवतांकी अवगाहनां।

१५ परमाधामी १० भुवनपती, वानव्यंतरा, त्रिभूमखा, ज्योतषी, पहला, तथा दूजा देवलोककी अवगाहनां ७ सात हाथकी।

तीसरा तथा चौथा देवलोक की ६ छव हाथकी

पांचवां तथा छठा देवलोक की अवगाहनां ५ पांच हाथकी।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार हाथकी। नवमां, दशमां, ग्यारवां, तथा बारवां की ३ तीन हाथकी अवगाहनां होय। ९ नवग्रैवेग का देवांकी २ दोय हाथकी।

च्यार अनुत्तर विमानका देवांकी अवगा० १ एक हाथकी।

स्वार्थ सिद्धकी अवगाह० एक हाथ मठेरी होय।

देवता उत्तर वैक्रियकरै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यात ज भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन जाझेरी अवगाहनां जाणो।

बारवां देवलोक के ऊपरका देव वैक्रियकरै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नीमनुष्यकी जघन्य, उत्कृष्टी आंगलकी असंख्यात वों भाग।

वनस्पतिकायकी अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यात मों भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरी तेकमल फूलकी अपेक्षा।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजनकी, उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगाहनां ३ कोसकी उत्कृष्टी।

चौउरिन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी।

अनें जघन्य सगले आंगल के असंख्यात वें भाग कहणों। तिर्यंच पंचेन्द्री की अवगाहनां जगनतो आंगुलनों असंख्यातमें भाग उतकृष्टी।

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी की ६ कोसकी, असन्नीकी प्रत्येक कोसकी।

३ उरपर सन्नी की १००० जोजनकी, असन्नी प्रत्येक जोजन की।

४ भुजपुर सन्नी की प्रत्येक कोसकी, असन्नीकी प्रत्येक धनुषकी।

५ खेचर सन्नी असनी की प्रत्येक धनुषकी तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य आंगुलकै संख्यात में भाग उत्कृष्टी ६०० जोजनकी करै, मोटी अवगाहनां वालो उत्तर वैक्रिय करै नहीं। असन्नी मनुष्यनी अवगाहना जगन उतकृष्टी आंगुलकै असंख्यातमे भाग।

॥ सन्नी मनुष्यकी अवगाहनां ॥

५ भर्थ ५ ऐरभर्थ का मनुष्यांकी, अवसर्पणीकै पहिले आरै लागतां ३ कोसकी उतरतां २ कोसकी, दूजे आरै लागतां २ कोसकी उतरतां १ कोसकी ३ तीजे आरै लागतां १ कोसकी उतरतां ५०० धनुषकी, चौथे आरै लागतां ५०० धनुष की उतरतां ७ हाथकी पाचवें आरै लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथकी,

छट्ठे आरे लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी ।

इसीतरें उत्सर्पणी में चढ़ती कहणी । वैक्रे लाख जोजन की करें । ५ हेमवय ५ अरणवयका युगलियां की १ कोसकी, ५ हरिवास ५ रम्यक वास कांकी २ कोसकी, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरूकांकी ३ कोसकी, महा विदेह खेत्रका मनुष्यांकी ५०० धनुषकी,

सिद्धांकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष १ हाथ ८ आगुल की ।

इति अवगाहनां द्वारं ।

३ तीसरो संघयण द्वार ।

संघयण ६ तेहनां नांव वज्र रिषभनाराच १ रिषभनाराच २ नाराच ३ अर्ध नाराच ४ कीलको ५ छेवटो ६ एवं ।

नारकी सर्व देवता में संघयण पावे नहीं, ५ थावर, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य, तिर्यंच में संघयण पावे, ६ छउं हीं ।

युगलिया तिर्यंच मनुष्य में संघयण १ वज्रऋषभ नाराछ सिद्धांमें संघयण पावे नहीं ।

इति संघयण द्वारम् ।

४ चोथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६ तेहनां नाम समचोरंस १, निगव परि-मंडल २ सादिज ३ वावन्य ४ कुब्ज ५ हुंडक ६

७ सात नारकी—

५ थावर, ३ विकिलेंद्री, असन्नी मनुष्य असंन्नी तिर्यंचमें संठाण हुंडक। तिणमें पांच थावरकी विगत। पृथ्वी काय को चंद मसूरकीदाल अप्प कायको बुद्बुद,

तेऊ कायको सूईको करनालो।

वाऊ कायको ध्वजा पताका।

बनस्पतिका नाना प्रकारका।

सर्व देवता सर्व युगलिया तथा त्रेसठ शलाका पुर्षांमें समचौरंस संस्थान,

गर्भज मनुष्य तिर्यंचमें ६ छउंही, सिद्धामें पावै नहीं,

इति संठाण द्वारम्।

५ पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ। २४ दंडकमें कषाय ४ पावै, मनुष्य अकषाईपणहोय सिद्धामें कषाय नहीं।

इति कषाय द्वारम्।

६ छट्ठो संज्ञा द्वार।

संज्ञा ४ आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४।२४ दंडकामें संज्ञा ४ पावै मनुष्य असंज्ञी बहुता पणाहोय, सिद्धामें संज्ञा नहीं।

इति संज्ञा द्वारम्।

७ सातमूं लेस्या द्वार।

सात नारकी में पावै ३ मांठी (द्रव्य लेस्या लेखवी) तेहनी विगत।

पहली दूसरी में पावै १ कापोत।

तीजीमें कापोत वाला घणा नील वाला थोड़ा।

चौथी में पावै १ नील।

पांचमी में नील वाला घणां कृष्ण वाला थोड़ा, छठी में पावै १ कृष्ण।

सातमी में पावै १ महाकृष्ण, भवनपति, वान-व्यंतर, देवतां में लेस्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकायमें तथा सर्व युगलिया में लेस्या पावै ४ प्रथम।

तेउ वाउकाय, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, तिर्यंच, में लेस्या पावै ३ माठी।

जोतषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेस्या पावै १ तेजू।

तीजा चोथा, पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक सें स्वार्थ सिद्धतांई पावै १ शुक्ल। केतलाइक मनुष्य अलेसी पणहोय सिद्धां में लेस्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेस्या पावै ६ छउंही।

इति लेस्या द्वारम्।

८ आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, फरस एवं ५ ७ नारकी—सर्व देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच असन्नी मनुष्य में इन्द्री ५ पावै। ५ थावरमें इन्द्री १ फरस पावै, बेइन्द्रिमें २ इन्द्री होय, फरस—रस, तेइन्द्रीमें ३ इन्द्री होय-- फरस, रस, घ्राण, चउरिन्द्रीमें ४ होय श्रोतेंद्री बिना,। मनुष्य नो इन्द्रिया पणहोय सिद्धाकै इन्द्री होय ही नहीं।

इति इन्द्रिय द्वारम्।

नवमूं समुद्घात द्वार।

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मारणान्त ३ वै-

क्रिय ४ तेजस ५ आहारिक ६ केवल ७।
७ सात नारकी वाऊकाय में ४ पहली समुद्घात पावै, भुवनपति वानव्यंतर जोतषी बारवां देवलोकतांईका देवता गर्भेज तिर्यंच में समुद्घात ५ आहारिक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच सर्व युगलिया बारवां सें ऊपरका देवतामें समुद्घात ३ पावै पहली। गर्भेज मनुष्यां में समुद्घात ७ सातों ही पावै। केवल्यां में १ केवल समुद्घात पावै, तीर्थंकर समुद्घात करै नहीं सिद्धांकै समुद्घात नहीं।

इति समुद्घात द्वारम्।

१० दसमूं सन्नी असन्नी द्वार।

सन्नी कै मन असन्नीकै मन होय नहीं।

७ नारकी सर्व देवतागर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यंच युगलिया सन्नी होय। ५ थावर ३ विकलेंद्री समुर्छिम मनुष्य समूर्छिम तिर्यंच ये असन्नी होय। मनुष्य नोसन्नी, नोअसन्नी पणाहोय, सिद्धसन्नी असन्नी नहीं होय।

इति सन्नी असन्नी द्वारम्।

११ इग्यारमूं वेद द्वार ।

३—वेद स्त्री १ पुर्ष २ नपुंसक ३ ।

७ नारकी—५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच में वेद १ नपुंसक होय। भवनपती वानव्यंतर जोतषी पहलो दूजो देवलोक पहला-किल्विषी, सर्वयुगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूँ स्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच, में वेद ३ तीनू होय, मनुष्य अवेदी पणहोय सिद्धांकें वेद नहीं।

इति वेद द्वारम्।

१२ बारमूं पर्याय द्वार ।

पर्याय ६। आहार १ शरीर २ इन्द्रीय ३ श्वासो-श्वास ४ भाषा ५ मन ६ पर्याय एवं ६।

७ नारकी देवता में पावै ५ पर्याय।

मनभाषा भेली लिखवी। ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली, असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥, तीन तो पहली आधी में श्वासलेवे तो उश्वास नहीं, उश्वास लेवे तो श्वास नहीं, ३ विकलेन्द्री—समूर्छिम तिर्यंच

पचेन्द्री में पर्याय ५ पावै मन टल्यो, सिद्धामें पर्याय पावै नहीं। सन्नी मनुष्य तिर्यंच में पावै ६।

इति पर्याय द्वारम्।

तेरमूं दृष्टीद्वार।

दृष्टी३ सम्यक्‌दृष्टी १ मिथ्यादृष्टी २ समामिथ्यादृष्टी३ एवं ३ होय।

७ नारकी १२ बारमां देवलोक तांई देवता गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यंच में दृष्टी ३ तीनूं ही होय, ५ थावरमें असन्नी मनुष्य, में ५६ अंतरद्वीप का युगलियामें दृष्टी १ मिथ्या दृष्टी पावै, ९ ग्रैवेकका देवतामें ३ विकलेंद्रीमें, असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री में ३० अकर्म भूमिका युगलियामें दृष्टी २ सम्यक् १ मिथ्या २ पावै,। ५ अनुत्तर विमानका देवता, सिद्धांमें दृष्टी १ सम्यक् पावै।

इति दृष्टि द्वारम्।

१४ चौदमूं दर्शन द्वार।

दर्शन ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ और केवल एवं दर्शन ४ जाणो।

७ नारकी सर्व देवता गर्भेज तिर्यंचमें दर्शन ३ पावै चक्षु १ अचक्षु अवधि ३। गर्भेज मनुष्यमें

दर्शन ४ होय ; ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री, समू-र्च्छिम मनुष्य, सर्व युगलियांमें दर्शन २ चक्षु १ अचक्षु २। सिद्धामें १ केवल दर्शन ही पावै।

इति दर्शन द्वार।

१५ पंदरमूं ज्ञान द्वार।

ज्ञान ५ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मन पर्यव ४ केवल ज्ञान एवं ५।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंच में ज्ञान ३ पावै पहला। गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै। ५ थावर असन्नी मनुष्य ५६ अंतरद्वीप का युगलियामें ज्ञान नहीं पावै। ३ विकलेंद्री असन्नी पंचेंद्री तिर्यंचमें, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावै। मति। श्रुति सिद्धामें १ केवल ज्ञान ही पावै।

इति ज्ञान द्वारम्।

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार।

अज्ञान ३ मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ विभंग अज्ञान एवं ३।

७ नारकी ९ ग्रैवेकतांई का देवता गर्भज तिर्यंच गर्भजमनुष्य में अज्ञान ३ ही पावै। ५ थावर ३

विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, पंचेंद्री, सर्व युगलियामें अज्ञान २ पावै मति अ० १ श्रुत अ० २॥ ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धामें अज्ञान पावे नहीं।

इति अज्ञान द्वारम्।

१७ योग द्वार।

योग १५ मनका ४ सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र-मन ३ व्यवहार मन एवं ४। वचनका जोग ४ सत्य बचन १ असत्य बचन २ मिश्र बचन ३ व्यवहार बचन एवं ४। कायाका जोग ७ ओदरिक १ औदा-रिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रियको मिश्र ४ आहा-रिक ५ आहारिकको मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५ ७ नारकी सर्व देवता में योग पावे ११ मनका ४ बचनका ४ वैक्रिय ९ वैक्रियको मिश्र १० कार्मण सर्व युगलिया में योग पावे ११ मनका ४ बचनका ४ ओदारिक ९ ओदारिकको मिश्र १० कार्मण।
वाऊकाय वरजीनें, ४ स्थावर असन्नी मनुष्यमें योग पावै ३ ओदारिक ओदारिकको मिश्र कार्मण बाउकायमें जोग पावे ५ ओदारिक १ ओदारिक को मिश्र २ बैक्रिय ३ बैक्रिय को मिश्र ४ कार्मण तीन

विक्लेंद्री असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री में पावै ४ ओदारिक १ ओदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। गर्भज तिर्यंच में पावै १३ आहारिक आहारिककी मिश्र टल्यो, गर्भज मनुष्यां में पावै १५ ही, चौदमें गुणठाणें अजोगी होय। सिद्धांमें जोग पावै नहीं।

इति योग द्वारम्।

१८ अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी ६ नवग्रैवेगतांई का देवता गर्भज तिर्यंचमें उपयोग पावै ९ ज्ञान तो ३ मति श्रुति अवधि, अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुति अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य तथा ५६ अंतरद्वीप का युगलिया में उपयोग पावे ४ मति श्रुति अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्रीमें उपयोग पावै ५ मति श्रुति ज्ञान मति श्रुति अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

चोरिन्द्री—असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री ३० अकर्म भूमि का युगलियामें उपयोग पावे ६ मति श्रुति ज्ञान मति श्रुति अज्ञान चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणूत्तर बिमांण में पावै ६ तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भज मनुष्यां में उपयोग पावै १२ सिद्धां में उपयोग पावै २ केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २।

इति उपयोग द्वारम्।

१९ उगणीसमूं आहार द्वार।

उन्नीस दंडक का जीव तो छउंही दिशाको आहार लेवे।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशिको आहार लेवे।

केतला मनुष्य अणआहारीक पण होय सिद्ध भगवंत आहार लेवे नहीं।

इति आहार द्वारम्।

२० बीसमूं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता तेउ, वाऊ काय ३ विकलेंद्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच

सर्वयुगलियां में उत्पत्ति पावै गति २ की मनुष्य तिर्यंच।

नवमां देवलोक से स्वार्थ सिद्धतांई का देवतामें उत्पत्ति पावे १ मनुष्य गतिकी।

पृथ्वी अप्प वनस्पति काय में उत्पत्ति पावे ३ गतिकी (नारकी टली)

गर्भजमनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति ४ च्यारूँ ही गतिकी।

सिद्धांमें १ मनुष्य गतिकी।

इति उत्पत्ति द्वारम्।

२१ इक्वीसमूं स्थिति द्वार।

नारकी स्थिति

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागरकी।

२ दूसरी नारकी को जघन्य १ सागरकी उत्कृष्टि ३ सागरकी।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर उत्कृष्टि ७ सात सागरकी।

४ चोथी नारकी की जघन्य ७ सागरकी उत्कृष्टि १० सागर की।

५ पांचमी की जघन्य १० उत्कृष्टि १७ सागरकी
६ छट्ठी नारकी को जघन्य १७ उत्कृष्टि २२ सागरकी ।
७ सातमी नारकी जघन्य २२ उत्कृष्टि ३३ सागर

भवन पति देवतांकी स्थिति—

दत्तण दिशिका असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागरकी, यांकी देव्यां की जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ३॥ पल्यो पमकी ।

दत्तिण दिशिका ९ नौ निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १॥ पल्योपम की, यांकी देव्याकी जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी ।॥ पौण पल्योपमकी ।

उत्तर दिशिका असुर कुमारकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ सागर जाभेरी यांकी देव्यां की जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ४॥ साडा च्यार पल्योपमकी ।

उत्तर दिशिका ९ नौ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि देस उणों दोय पल्योपमकी देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी । उत्कृष्टि देश उणां १ पल्य० ।

वानव्यंतर देवतांकी स्थिति ।

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दस हजार वर्षकी उत्कृष्टि ॥ आधा पल्योपमकी त्रिभूमका देवांकी भी इतनी हीं ।

जोतषी देवांकी स्थिति ।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पलयोपमकी उत्कृष्टि आधा पल्य ५० हजार वर्षकी, सूर्यकी जघन्य । पाव पलयोपमकी उत्कृष्टि १ ल्पयोपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य । पाव पल्यकी उत्कृष्टि ॥ आधी पल्य पांचसह वर्ष अधिक । ग्रहांकी ज० पाव पल्यकी उ० १ पल्यको यांकी देव्याकी ज० पाव पल्य उत्कृष्टि ॥ आधो पल्योपमकी ।

नक्षत्राकी ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य, उत्कृष्टि पाव पल्य जाभेरो ।

तारांकी ज० पल्यको आठमूँ भाग उ० पाव पल्यंकी यांकी देव्यांकी ज० अधपाव पल्य उत्कृष्टि अधपाव जाभेरी ।

वैमानिक देवतां की स्थिति ।

१ पहला देवलोक में ज० १ पल्योपम उत्कृष्टि २ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यांकी जं० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपमकी।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्य जाझेरी उ० परिग्रही को ६ पल्यकी अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की।

३ तीसरा देवलोकमें ज० २ सागर उ० ७ सागर की,

४ चोथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उत्कृष्टी ७ सागर जाझेरी।

५ पांचवांकी ज० ७ सागर उ० १० सागरकी।

६ छट्ठा देवलोक का देवतांकी ज० १० सागर उ० १४ सागर की।

७ सातवां की ज० १४ उ० १७ सागर की।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागरकी।

१० दसमां की ज० १९ उ० २० सागरकी।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागरकी।

१२ बारवां की ज० २१ उ० २२ सागरकी ।

१३ पहिला ग्रैवेग की ज० २२ उ० २३ ।

१४ दूसरा ग्रैवेग की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेग की ज० २४ उ० २५ ।

१६ चोथा ग्रैवेग की ज० २५ उ० २६ ।

१७ पांचमां ग्रैवेग की ज० २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेग की ज० २७ उ० २८ ।

१९ सातमां ग्रैवेग की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमां ग्रैवेग की ज० २९ उ० ३० ।

२१ नवमां ग्रैवेग की ज० ३० उ० ३१ ।

२२ विजय, १ विजयन्त, २ जयन्त ३ ।

२५ अपराजिता, ४ ए च्यार अनुत्तर बैमानकी ज० ३१ उ० ३३ सागर ।

२६ स्वार्थ सिद्धिका देवांकी ज० ३३ उ० ३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरकी, पांच स्थावरकी स्थिति ज० अंतर मुहूर्त्तकी उत्कृष्टि पृथ्वी कायकी २२ हजार वर्षकी, अप्पकाय की ७ हजार वर्षकी, तेउकायकी ३ दिन रातकी, वाउकायकी ३ हजार वर्षकी, बनस्पति कायकी १० हजार वर्षकी ।

तीन विकलेंद्री की ज० अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्टी बेइन्द्रीकी १२ वर्षकी, तेइन्द्रीकी ४९ दिन रातकी, चोइन्द्री की ६ महीनाकी। तिर्यंच पंचेन्द्री की ज० अंतर मुहूर्तकी उत्कृष्टी जलचर की १ क्रोड पूर्व की, थलचर सन्नीकी ३ पल्योपमकी असन्नीकी ८४ लाख वर्षकी, उरपुर सन्नीकी १ क्रोड पूर्वकी असन्नीकी ५३ हजार वर्षकी, भुजपुर सन्नीकी क्रोड पूर्वकी असन्नी की ४२ हजार वर्षकी, खेचर सन्नीकी पल्योपमके असंख्यात मूं भाग असन्नीकी७२ हजार वर्षकी। असन्नी मनुष्यकी ज०उ० अन्तर मुहूर्त की। सन्नी मनुष्य की स्थिति।

५ भर्थ ५ एरभर्थका मनुष्यां की पहिलो आरो लागतां ३ पल्यकी उतरतां २ पल्यकी, दूसरो लागतां २ पल्यकी उतरतां १ पल्यकी, तीसरो लागतां १ पल्यकी उतरतां क्रोड पूर्वकी, चौथो आरो लागतां क्रोड पूर्वकी उतरतां १२५ वर्षकी पांचमूं लागतां १२५ वर्षकी उतरतां २० वर्ष की छट्ठो लागतां २० वर्षकी उतरतां १६ वर्ष की। उतसर्पणी कालमें इमहिज चडती कहणी पांच महाविदेह खेत्रांकी जगन अन्तर मुहुरत उत्कृष्टि १ क्रोड पूर्वकी स्थिति।

युगलियां की स्थिति

५ हैमवय ५ अरुणवयकां की जगनदेश उंणी एक पल्यकी उतक्रुष्टी १ पल्यकी ।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां की जगन देशउंणी दोय पल्यकी उतक्रुष्टी २ पल्यकी ।

५ देवकुरु ५ उत्तकुरुकां की जगनदेशउंणी तीन पल्यकी उतक्रुष्टी ३ पल्यकी ।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाकी पल्योपम को असंख्यात मूं भागकी ।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं ।

इति स्थिति द्वारम् ।

२२ मूं समोंह्या असमोंह्या द्वार ।

समोयातो समुदघात फोडी ताणावेजो करी मरे, असमोह्या विना समुद्घाते गोलीका भडाकावत् मरे ।

२४ दंडकां का जीव दोनूं प्रकारका मर्ण करे । सिद्धामेमर्ण नहीं ।

इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ।

२३ मूं चवन द्वार ।

६ नारकी आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्प बनस्पति काय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य में चवन होय गतिकी मनुष्य तिर्यंच की।

नवमां देवलोक सें स्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में चवन १ मनुष्यकी सातमी नारकी में तथा तेऊ वाऊमें चवन १ तिर्यंच गतिकी।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच, असन्नी तिर्यंचपंचेन्द्रीमें चवन च्यारूं हीं गतिकी युगलियामें चवन १ देव गतिकी सिद्धां में चवन पावै नहीं।

इति चवन द्वारम्।

२४ मूं गतागति द्वार ।

पहिली सें छट्ठी नारकी तांई गति २ दंडका आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्री, ।

सातमीं नारकी की आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्यंच पंचेंद्री की, गत एक तियंचिकी जांणवी।

भवनपति वानव्यंतर जोतषी पहिला दूजा देवलोक तथा पहिला किलवेषी देवतांकी आगत २ दंडकां की (मनुष्य तिर्यंच की) गति ५ दंडकांकी (तिर्यंच मनुष्य पृथ्वी अप्प वनस्पतिकी)

तीजा देवलोक सें आठमां देवलोक तांई गता गत २ दंडका की (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देवलोकसें स्वार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की,

पृथ्वी अप्प वनस्पति कायकी आगत २३ दंडकांकी (नारकी टली) गति १० दंडकांकी ५ स्थावर ३ विकलेन्द्री मनुष्य ६ तिर्यंच एवं १० की,

तेउ वाउकायमें आगत १० दंडकांकी, उपरवत् गति ६ दंडकांकी मनुष्य टल्यो; ३ विक्लेंद्रीमें१० की आगत १० की गति उपर वत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री में आगति १० दंडकां की उपर वत् गति २२ दंडकांकी जोतषी वैमानिक टल्यो ।

सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रीमें आगति २४ की गति २४

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दंडकांकी, पृथ्वी अप्प वनस्पति तीन विक्लेंद्री मनुष्य तिर्यंच एवं ८ अनें गति १० दंडकांकी उपरवत् ।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दंडकांकी तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दंडकांकी, ३० अकर्म भूमिका युगलियां में आगति २ दंडकांकी मनुष्य तिर्यंच, गति १३ दंडकांकी १० तो भवनपति का वानव्यंतर ११ जोतषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अन्तर द्वीप का युगलिया में आगति २ दंडकां की उपरवत् गति ११ दंडकांकी १० तो भवनपति का १ वानव्यंतर को ११।

सिद्धांमें आगति मनुष्य की गति नहीं।

इति गतागत द्वारम्।

२५ मूं प्राण द्वार।

७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य तिर्यंचमें प्राण १० दसूंही पावै, ५ स्थावरमें प्राण ४ पावै सपर्श इन्द्रीबल १ काया २ श्वासोश्वास ३ आउषो ४ एवं।

बेइन्द्रीमें पावै ६ तेइन्द्री में पावै ७ चौरिन्द्री में पावै ८ प्राण।

असन्नी मनुष्य में पावै ७॥

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में ९ मन टल्यो।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियांका टल्या।

१४ में गुणठाणे पावै१ आउषोबलप्राण सिद्धांमें प्राण पावै नहीं।

इति प्राण द्वारम्।

२६ मूं योग द्वार।

नारकी देवता मनुष्य सन्नीतिर्यंच युगलिया में जोग पावै ३ मन वचन काय का।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया पावै ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्रीमें जोग पावै २ वचन काया ।

कितला मनुष्य अयोगी होय सिद्धांमें जोग पावै नहीं ।

इति लघु दंडकम् ।

अथ: प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो श्री अरि- नमस्कार थावो श्री नमस्कार
हन्त भगवन्त नें सिद्ध भगवांन नें थावो

आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज नमस्कार थावो श्री नमस्कार थावो
महाराज नें उपाध्याय महाराज नें लोक के विषे

सव्व साहुणं ।
सर्व साधू मुनिराजों नें ।

॥ अथ तिख्खुत्ता की पाटी ॥

* अर्थ सहित *

तिख्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमं
तीन बार दाहिणापा प्रदिक्षणा वंदना सत् नम
साथी देई कार करूं स्कार

सामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाणं मंगलं
करूं सत्कार देऊ सनमान करूं कल्याणकारी
मंगल कारी

देवयं चेईयं पज्जुवासामी मत्थएण बंदामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न सेवना करूं मस्तके करी वंदना
कारी ज्ञान नमस्कार
वंत करूं

इच्छामि पडिक्कमिउ इरिया वहीया ये
इच्छूं, वांच्छूं प्रतिक्रमवोते मार्ग नें विखे ज्यो
निवर्त्तवो

विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई जातां आतां प्राणी बेन्द्रीया दिनो
होय आक्रमण करणूं ते
बध्यणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे उसा उत्तिंग पणग
बीजको दावणूं हरि लीलीको ओसको कीडीका नीलण
दावणूं बिल फूलण

दग्ग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे
पाणी को मांटीका मकड़ी का जाला मईवो तो जो
दावलो जीव डयाहोय

मे जीवा विराहीया एगेंदिया बेईंदिया
में जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव

तेईंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभि
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया संघाइया संघ

आतांहणयां धूलसे रगड्यां घातन कस्या संघट्ट

करती करी ढक्यां

ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया

कीधा परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया

ठाणा उट्ठाणं संकामिया जीवियाउ वव

एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत सें

रोविया तस्समिच्छामि दुकडं ॥ १ ॥

नांसकिया तेहनो मिच्छामि दूकडं ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउतरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं

तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित् करवो

प्रधान

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं

विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए

पाप कर्म का नांस करवा निमित

ठामि करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ

स्थिर करूँ छूँ काय उत्सर्ग इण मुजब

हुई येतलो विसेस

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं

ऊँचास्वास नीचास्वास खांसी छींक

जंभाइएणं उड्डुःयेणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी डकार अधोवायु भंवल

पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकार मूर्छा सुक्षमपणे शरीरको हालवो

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
सुक्षमपणें श्लेषको संचाल सुक्षम दृष्टी चलावो

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहो
इत्यादिक यह आगार में ध्यान भांगे नहीं वीराधना

ऊ हुज्ज मे काउस्सगं जाव अरिहं
नहीं होज्यो मनें काउसगते ध्यान जिहां तक अरि

ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तनें नमस्कार करीने नहीं पारूं

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठाताई सरीरसें स्थानसें मोनकरी ध्यानकरी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति
आतमां नें पापथकी वोसराऊं

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विखे उध्योतकारी धर्म तिर्थ करता जिन

अरिहन्ते कित्तइस्सं चउवीसंपि केवली
अरिहन्ताको कीर्ति करूं चोबीस वे केवली

उसभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदू संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः

सुमइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं
सुमति पुनः पदम प्रभुः सुपार्श्व जिन पुनः चंदा प्रभू
नाथजी

वंदे सुविहिं च पुस्फदंतं सीयल सिज्जंस
वंदू सुविध पुनः दूसरो नाम सीतल श्रेयांस
पुष्फदंत

वासुपुज्जं च विमल मणं तंच जिणं धम्मं
वासुपुज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

शंतिं च वंदामि ३ कुंथु अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदू कुन्थु अरि पुनः मलिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुंणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदू

रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं
अरिठनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुनः वंदू यह

मये अभिथुया विहूय रयमला पहीणा जर
मैं स्तुति करी दूर किया कर्म रूप खीणभया जनम
रंजमैल

मरणा चऊ वीसंपि जिणवरा तित्थ, यरा मे
मर्णजीनाका एहवा चौबीस जिन राज तिर्थकर म्हारे पर

पसीयं तु ५ कित्तिय वंदिए महिया जे ये
प्रसनथावो कीर्तिकरी बंदू मोटा प्रते तेह ये
पुज्या ध्याया

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरोग्ग वोहिलाभं
लोकके विखे उत्तम सिद्ध छै रोग रहित समकित्
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चन्द्रमांथी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
घणां सूर्यथी अधिक प्रकास कारी समुद्र समान

गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७
गंभीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनें देवो

॥ अथः नमोत्थुणं ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवंत नें धर्म की आदि
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तिर्थ करता बिना गुरू पोते प्रति पुरुषामें उत्तम
बोध पाम्यां

पुरिष सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषांमें सिंह समान पुरुषां में पुंडरिक पुरषां
कमल समान में

सवर गंध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं
गंध हाथी समान लोक में उत्तम लोकका नाथ
लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय गराणं
लोकमें हित कारी लोकमें प्रदीप समान लोकमें उद्योत कारी
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
अभय दान दाता ज्ञान चक्षु दायक सुमार्ग दायक शरण दायक
जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेश
संजम जीव दायक बोध दायक धर्म दायक धर्म देशनां
याणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर
दायक धर्म का नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्मकर
चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगई पइठा
च्यार गतिका अंतकारी चक्र वर्ती समान द्वीपा समान शरणागत नैं
अप्पडिहय वरनाणं दंसणं धराणं विअट्टछउ
अप्रति हत प्रधानज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो
माणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं
छदमस्थ पणो जीत्या अने दूजाने जीतावे पोते तीस्या दूसरानें तारे
बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वनूणं
पोते प्रति बोध पाम्या दूजाने प्रति बोधे कर्मथी मुकाव्या दुजाने मुकावे सर्वज्ञान

सव्वदरिसीणं शिवमयल मरुअ मणंत
सर्व दर्शण कल्याणकारी अरुज अनन्त
अचल

मक्खय मव्वोवाह मप्पुणरावंती सिद्धिगई
अक्षय अव्याव्याधि फिर आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणोणं । इति ॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुवा ज्यां जिनेश्वराने
नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इछांमिणं भंते ।

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं में हे भगवांन तुम्हारी आज्ञासे

नायेसमाणो देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस प्रति क्रमण करूं में दिवस
संबन्धी संबन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित तप अतिचार चिन्तवना के
अरथे

करेमि काउस्सग्गं ॥
करूँ छूँ में काउसगते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्ग ।

इच्छामि ठामि काउसग्गं जोंमे देवसिउ अइ
इच्छूँ छूँ ठाऊँ काउसग ज्यो में दिवसमें अति

यार कउ काईउ वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो
चार कीनों शरीरसें वचन सें मनसे भूंडा सूत्र
उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुव्वी
उन मार्ग अकल्पनीक नहीं करवा जोग दुर ध्यान खोटी
चिंतिउ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग
असावगपावग्गो नाणे तहदंसणे चरिताचरिते
श्रावक वे नहीं कर ज्ञान दर्शन देश वर्त
वा जोग पाप तें
व्रत भंगादि
सुये सामाइये तिएहं गुत्तीणं चउएहं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ती च्यार कषाय
पंचएहं मणुव्वयाणं तिएहं गुण वयाणं चउएहं
पांच अणूव्रत तीन गुण व्रत च्यार
सिक्खावयाणं वारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
सिखा व्रत वारे विधि श्रावका धर्म को
जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खंडिनाकरी ज्यो विराधना करी तेहनों मिच्छामि
दुक्कडं ॥
दुकड

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छं छूं क्षमावंत साधू वंदवा सचितादिकांडी निपाप शरीरपणे हुई निर्जरा अर्थें

निसीहियाए अणु जाणह मेमि उग्गहं निस्सही

शरीर करी आज्ञा देवो मुजें मर्यादा, अशुभ जोग

मांही निवर्त्ततो

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो

चर्ण फर्सबाकी म्हांरी कायासें खपउयोहे भगवांन कीलामनां

आज्ञा देवो तुमारा चर्ण

फरसतां

अप्पकिलंताणं बहुशुभेण भे दिवसोवईक्कंतो

थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो

हुई हुवेति तुमारो

जत्ता भे जवणिज्जंचभे खामेमि खमासमणो

संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकूँ खमाऊँ हे क्षमावंत

यात्राथी तुमारा, उपशम थकी छूँ साधू

निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवसिआए पडिक्कमामि

दिवस सम्बंदी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिकमूँ छूँ

अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए

हे क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आसातना

तेतीसन्नयराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए

तेतीस मांहिलो ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसें दुक्रत

क्रियाकारी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाय माणाए
बचन से दुक्कत काया से दुक्कत क्रोधथी मानथी
मायाए लोभाए सवकालियाए सव्वमिच्छोवराए
माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप चारक्रिया
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिउ
सर्व धर्म क्रियाका उलंघन किया एहवी आसातनाज्यो में दिवस ने बिखे
अइआर कउ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अति चार किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तू छूँ
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
निन्दूं छूँ गरहुँ छूँ आतमांथो वोसराउ छूँ

अथः आगमें तिविहे पन्नत्ते ।

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्यो ते कहे छै सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम
विखे अतिचार दोष लाग्या होय ते आलोउ—
जंवाइधं वच्चामेलियं हिनक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं
जे कोई बचन मिलाया होय हीणअक्षर अधिक अक्षर पद होण

विणयहीणं जोगहिणं घोसहिणं सुट्ठुदिणं
विनय हिण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र
अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउ सिज्झाउ काले
खोटा सूत्रकी इच्छा विनाकाले सझाय करी सोझा
करी यनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सिझाय न असझाय में सिज्झाय सिज्झायमें
करी करी

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकी
सिज्झाय न करी

ज्ञानवंत की आशातनां करी होवे तस्समिच्छामिदुक्कडं
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं

अथः दंसणश्रीसमकित ।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावजीवं
सुधासरधना ते समकित, तेह अरिहन्त मांहिरे, जाव जीव-
दर्शन देव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधू गुरू जिन परूप्यो ते तत्व यह समिकत
धर्म्म

मए गहियं ।
मैं ग्रहणकियो

एहवासमकितने विषें जी कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोउं, जिन बचन सांचा न सरध्या होय, न प्रतित्याहोय, न रुच्या होय, पर दर्शणारी आकांषा वंछाकिधी होय, फल प्रतेसंसह संदेह आण्यो होय, पर पाखंडी की प्रसंशा करी हुवे सास्वतो परिचय कीधो होय। एहवाश्री समकित रूपी रत्न उपरे मिथ्यात्व रूप रंज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं।

अथः बारे ब्रत ॥

पहले अणुब्रत थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटको प्राणाति पात को

विरमणं, ब्रत पांच बोले करी उलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्तवो व्रत

त्रस जीव बेइंद्री तेइंद्री चउरिन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधी करीनें स उपयोग हणू नहीं हणाउ नहीं मनसा वायसा कायसा॥ द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां मांहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संबर निर्जरा, एहवा म्हारे

पहला ब्रतनें विखें जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोउं ।

त्रस जीवनें गाढे बंधन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामडी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहाकीनां होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दुजो अणुव्रत थूलाउ मूसावायाऊ विरमणं
बीजो अणु व्रत स्थूलथी झूंट बोलवा निवर्तवो

पांचें बोले करि ओलखीजे द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके तांई झूठ
गोवालिक २ गाय भैंसादि कारण झूंट
भौमालिक ३ भुंमि निमित झूंट
थापण मोसो ४ लेकर नटवो
कूडीसाख ५ झूठी साखी

इत्यादिक मोटको झूंट मर्याद उपरांत बोलूं नहीं बोलाउं नहीं मणसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एही ज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रमें कालथकी जाव जीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा ब्रतने विखें जे कोइ अतिचार दोष लागा होय ते आलाऊँ ।

किणी प्रते कूडो आलदियो होय १

रहस्य छानी बात प्रगट करी होय
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकास्या होय ३
मृषा उपदेश दिधो होय ४
कूडो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तीजे अणुव्रत थूलाउ अदिन्न दाणाउ विरमणं
तीजो अणू व्रत स्थूलथकी अणदीयो लेवो ते चोरीको निवर्तवो

पांचे बोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खातखणी गांठखोली तालो पडकूंचीकरी वाटपाडी पडीवस्तु मोटकी सधणियां सहित जांणी इत्यादिक मोटकीचोरी मर्याद उपरांत करू नहीं कराउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेत्रथकी सर्व खेत्रां में, कालथकी जाव जीवलगें, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी सम्बर निर्जरा एहवा म्हारे तीजाव्रतमें ज्यों कोई अतिचार लागी होय ते आलोउ

चोरकी चुराई वस्तु लीधि होय १ चोरनें सहाय दीधो होय २ राज विरुद्ध व्योपार किधो होय ३ कूडा तोला कूडामापा कियाहोय ४ वस्तु में भेलसभेल किधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं

इति ।

चौथे अणुव्रत थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चौथो अणू व्रत स्थूलथकी मैथुनथकी निवर्तवो
पांचा बोलांकरी उलखिजे द्रव्यथकी तो देवता देवां-
गनां सम्बन्धिया मैथुन सेवूँ नहीं सेवावूँ नहीं तिर्यंच
तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूँ नहीं सेवावूँ नहीं
मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूँ नहीं सेवावूँ नहीं, मनु-
ष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधि छै तिण
उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वायसा
कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य खेतथकी सर्व खेत्रमें
कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष
रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा
म्हारे चौथा व्रतमें ज्यों अतिचार दोष लागो होय ते
आलोउ

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुँ गमन कीधो होय १
अपरिग्रही सूगमन कीधो होय २ अनेक क्रिडा कीधो
होय ३ परायानाता बिवाह जोड्या होय ४ काम
भोग तिव्र अभिलाषासें सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति।

पंचमें अणुव्रत थूलाउ परिग्रहाउ विरमणं
पांचमूं अणूव्रत स्थूलथकी परिग्रहते धनको निवर्तवो
पांचां बोलां करी ऊलखिजे द्रव्यथकी खेतु
उघाड़ी जमीन
वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवर्ण यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चांदी सोनांको जे प्रमाण कीधो
धन धांन यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य नाजनों जेह प्रमाण कीधो दासदासो हाथी घोड़ा, जे प्रमाण
द्विक चोपद कीधो
कुंभो धातु यथा प्रमाण।
तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, खेतथकी सर्व खेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग संहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरा पांचवां अणुव्रतमें ज्यों अतिचार लागा होय ते आलोउं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अति क्रम्यू होय १ हिरन्य सुवर्णरो प्रमाण अति क्रम्यू होय २ धन धांनरो प्रमाण अतिक्रम्यु होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमांण अतिक्रम्युं होय तस्समिच्छामि दूकडं।

इति।

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखिजे द्रव्य थकी तो उंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण , तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधोतिह उपरान्ति जायकर पंच आश्रव द्वार सेऊँ नहीं सेवाउँ नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो येहिज द्रव्य खेतथी सर्व खेत्रां मैं कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथको संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे ते आलोउं ।

उंचो दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय १
नीचीं दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अति क्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
पंथमें आघो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्स मिच्छामि दूक्कडं ।

इति ।

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचा बोलांकरी ओल-खिजे, द्रव्यथकी छब्बीस बोलांकी मरयाद ते कहे छै

उलणीयां विहं १ दंतणविहं २ फल विहं ३
अंग पूछणादि विधि दांतण विधि फल विधि

अभिंगण विहं ४ उवट्टण विहं ५ मंजण विहं ६
तैलाभिंगादि उवटणादि को स्नानकी विधि
तेल मालिस विधि

वत्थ विहं ७ विलेवण विहं ८ पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि विलेपन विधि पुष्प विधि

आभरण विहं १० धूप विहं ११ पेज विहं १२
गहणां पहरवा विधि धूपकी विधि दूध आदि
पोवाकी विधि

भक्खण विहं १३ उदन विहं १४ सूप विहं १५
सूखडी आदि चावल को विधि दालकी विधि
भक्षण को विधि

विगय विहं १६ साग विहं १७ महुर विहं १८
विगयकी विधि सागकी विधि मधुर तथा वैलादि फल

जीमण विहं १९ पाणी विहं २० मुखवास विहं २१
जीमणकी विधि पाणींकी विधि मुखवास तांबूलादि
को विधि

वाहण विहं २२ सयण विहं २३ पन्नी विहं २४
गाडी प्रमुखकी सोवाकी विधि पगरखो को
विधि पाटा कुरसी आदिपर विधि

सचित्त विहं २५ द्रव विहं १६
सचित्त को विधि द्रव्यकी विधि

ए छाबीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्ति भोगऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी यहिज द्रव्य, खेतथकी सर्व खेत्रांमें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी सम्वर निर्जरा, ए हवा मांहरा सातमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार किनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरो आहार किनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिकापहस्या होय ॥ ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहस्या होय ॥ ४ ॥

पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोग्या होय। तस्स मिच्छामि दूक्कडं।

पंद्रेकरमां दान जांणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छे।

इंगालकम्मे १	वणकम्मे २	साडीकम्मे ३
अग्नि करी लुहारादि कर्म	वन कर्म ते बनमें घास, दरखतादि काटवो	सकट कर्म ते गाडीप्रमुखनो कर्म
भाडी कम्मे ४	फोडी कम्मे ५	दन्तवाणिज्जे ६
भाड़ा कर्म	लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो	दांतको विणज ते व्योपार
लक्खवाणिज्जे ७	रसवाणिज्जे ८	केसवाणिज्जे ९
लाखको वाणिज्य	रस व्यापार ते घी, तेल सेंतादि	वाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १० जन्तु पिलणियां कम्मे ११
जहरको व्यापार कल घाणी प्रमुखं व्यापार
निलछणियां कम्मे १२ दवगीदावणियां कम्मे १३
कसी वधियादि कर्म ते दावानलदेवो कर्म
ज्यानवरांने बाधी कर्म
सर द्रह तलाव सोषणियां कम्मे १४ असंजइ
सरोवर द्रह तलाव सोसाया ते कर्म असंजतीनें
पोषणीयां कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोखावा नों कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्ति सेया सेवाया होय तस्स मिच्छामि दूक्कडं ॥ ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दंड विरमण व्रत पांचा बोलांकरी उलखिजे, द्रव्यथकी अवज्जाणचरियं १
भुंडा ध्यान नों आचरवो
पम्माय चरियं २ हंसपयाणं ३ पावकम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो प्राण हिन्सा पाप कर्मको उपदेश
ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेउं नहीं ते कहै छे ।

आएहिउवा १ नाएहिउवा २ आघारिहिउवा ३
आपणी हित न्यातिके हित घरकी हित
परिवारहिउवा ४ मित्तहिउवा ५ नागहिउवा ६
परिवार के हित मित्रके हित नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जखवहिउवा ८
भूत देवता जच्च देवता
निमित्त निमित्त

द्रव्यथकी येहिज द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रामें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सम्बर निर्जरा, यहवा म्हारा आठमां व्रत के बिखे जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं ।

कंदर्प्पनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय२
काम क्रिडाकी कथा को करवो भांडनीपरे कुचेष्टाकरि होय
मुखसें अरि बचन बोल्या होय३ अधिकारण
मुखसे खोटा बचन बोल्या होय नाताजोडकर
जोड मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुडाया तथा स्त्री भरतार एकवार भोग, बार बार भोग
नो विरह कीयो में आवे ते में आवे ते
अधिका भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दूकडं
मर्याद उपरांत अधिक तो मिच्छामि दुकडं
भोग्या होय ते

इति ।

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलांकरी ओलखिजे
करेमि भन्ते सामाईयं सावज्ज जोगं पच्चखामी
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावध जोग पच्च खाण
जाव नियम (महुरत एक) पज्जवासामी दुविहेणं
यावत नियम एक महुर्त ते सेऊँ छूँ दोय कर्ण
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमी नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करूँ नहीं कराऊं मनसें वचन से

कायसा तसभंत्ते पडिक्कमामि निन्दामी गरिहामी
सरीरसें तिणसूँ हे भगवांन पडिकमूँ छूँ निन्दूं छूँ ग्रहणा ते निषेदूं छूँ

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप से आतमांनेवोसराऊँ छूँ

द्रव्यथकी कनैराख्या ते द्रव्य खेत्रथकी सर्व खेत्रामें कालथकी एक महुरत तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा नवमां व्रतकै विखे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं ।

मन वचन कायाका माठा जोग प्रवर्ताया होय१ पाडवा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक में समता नहीं करिहोय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दूकडं ।

इति ।

दसमों देशाविगासी व्रत पांचां बोलांकरी ओलखिजे द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पुर्वादि छव दिसिरी मर्याद करी तिण उपरान्ति जाई पांच आश्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाउं नहीं तथा जेतली भोमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिकरी मर्याद

करी जिण उपरान्ति सेउं नहीं सेवाउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी यहिज द्रव्य खेतथकी सर्व खेतांमें कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरै दसमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागोते आलोउं

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणाई होवे १ मुक लाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप-देखाड़ आपो जणायो होय ४ पुद्गल नाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दोकडं ।

इति ।

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरि ओलखिजे द्रव्यथकी ।

असण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखांण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पचखाण
अबम्भनां पच्चखाण उमकमणी सुवन्ननां पच्चखाण
मैथुन सेवाका त्याग बोसरायो हुयो रत्न सोनाका
माला वणग बिलेवन नां पच्चखान
पुष्पमाला गुलाल रंगादि चंदनादिक नो बिलेपनका त्याग
सस्थ मुसलादि सावज्झ जोगरा पच्चखाण
सस्त्र मूसलादिक सावद्य जोगका पचखान
इत्यादि पच्चखाण, करने द्रव्यराख्या जिणा उपरान्ति

पंच आश्रव द्वार सेउं नहीं सेवाउं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी यहिज द्रव्य खेत्रथी सर्व खेतामें कालथकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे इग्यारमां व्रतके विखे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं ।

सेज्जा संथारो अपडिलेहाहोय दुपडिलेहा
सोवाकी जगां विसतरो पडि लेहा नहीं होय आछीतरे नहीं
होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पडलेह नहीं प्रमार्ज्या आछीतरे नहीं प्रमार्ज्या
नाकरी
उच्चारपास वणरी भूमिका अपडि लेही होय दुपडि
छोटी बड़ी नितकी जमीन नहीं पडिलेही होय अथवा
लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४
पोसहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

इति ।

बारमूं अतिथि संविभाग व्रत पांचां बोलांकरी ओ-लखिजे द्रव्यथकी ।

समणे निगंथे फासू एषणीज्जेणं असाणं १
श्रमण निग्रथं नें फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
पांणी मेवो लोंग सूपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबलं ७ पाय पुच्छणं ८ पाडियारा ९ पीढ
कांवलो पग पूछणों जाचीनें पाछा पाट
मोलाव ते

फलग १० सिज्यो ११ संथारो १२ ओषद १३
वाजोटादि जमीन जगां त्रणादिक १ दवाई

भेषद १४ पडिलाभमांणे विहरामि ॥
चूर्णादि प्रतिलाभ तो थको विचरूं
घणीं मिली

इत्यादिक चौदे प्रकारनूं दांन शुद्ध साधूनें देउं देवाऊं देवतां प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथको यहिज कलपतो द्रव्य, खेत्रथकी कलपै तकि खेत्रमें, कालथको कलपै जिन कालमें, भावथको राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थको संवर निर्जरा, एहवा म्हारा वारमां व्रत के विखे जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोउं सूजती वस्तु सचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी वस्तु आपणी किधी होय ४ भाणें बेठ साधू साध्वीयांकी भावनां नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुक्कडं।

इति।

अथः संलेखणा की पाटी।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
यह लाककी जसकी तथा पर लोकमें सुखकी
द्रव्यादिक की इच्छा
पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णांउ संसह
वंछा जीवत की इच्छा मरण की
पउगो ४ काम भोगा संसहप्पउगो ५ मामु
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए मुजनें
ज्हुज्ज मरणान्तें।
मर्णान्त तक मत होज्यो। ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप।

प्राणातिपाप १ मृषावाद २ अदत्ता दान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अवाख्यान १३ पिसुन १४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मुसो १७ मित्थ्या दर्शन सल्य। इति

तस्स सव्वस देवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभाषियं
ते सर्व दिवसमें अतिचार खोटी चिन्तवनां खोटी भाषा
दूचिट्ठीयं आलो यंते पडिक्कमामि निंदामि
खोटी चेष्टा कायाकी आलोउ तेह पडिक्कमेंउ निन्दू
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
गरहणा करूं पाप कर्मथी आतमां नें वोसराउं

॥ इति ॥

अथः तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस केवली पन्नंत्तस्स अभुट्ठ एमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेने विषे उठ्यो छूं
आराहणाए विरओमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तूं छूं वीराधनाथी अतिचार सर्व
त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौवीसं ॥
पडिकमूं वांदूं छूं जिन चौवीस ।
छूं राज

इति ।

अथः मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारिछे
साहू मंगलं केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥
साधू मंगल केवली पन्नतो धर्म ते मंगल
चत्तारिलोग उत्तमा अरिहन्ता लोग उत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम अरिहन्त लोकमें उत्तम
जाणवा
सिद्धा लोग उत्तमा साहूलोग उत्तमा केवली
छू सिद्ध लोकमें उत्तम साधू लोकमें उत्तम केवली
पन्नत्तो धम्मो लोग उत्तमा चत्तारि शरणं
परूप्यो धर्म ते लोक में उत्तम च्यार शरणां

पवज्जामि अरिहन्ता शरनं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरूं अरिहन्तों का शरणां ग्रहण करता हूं सिद्धाका
शरणं पवज्जामि साहू शरणं पवज्जामि केवली
शरणं लेता हूं साधूका शरणहै केवली
पन्नत्तो धम्मो शरणं पवज्जामि। च्यारों शरणा
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूँ
एसगा अवर न सगो कोय जे भव प्राणी आदरे
अक्षय अमर पद होय।

इति।

अथ देवसी प्रायश्चित।

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउस्सगं
दिवसनों प्रायश्चित सुद्ध करवाने अर्थे करूंछुं काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथः पडिक्रमणां करनें की विधि।

प्रथम चौबीस्थो करणो जिणामें

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। २ तस्सुत्तरीकी पाटी। ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मनमें चितारकर एक नवकार गुणनों। ३ लोगस्सउज्जोगरे की पाटी। ४ नमोथुणं की पाटी।

१ प्रथम आवसग्ग सामाईक में।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते।

२ नवकार एक।

३ करेमि भंते सामाईयं।

४ इच्छामिठामी काउसग्गं।

५ तस्सुत्तरी की पाटी।

ध्यांनमें ६६ नन्नाणमें अतिचार।

आगमें तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकितका ५ अतिचार

वारे व्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरे कर्मदान।

यह लोग सह सपउग्गकी पाटी अतिचार ५ सलेखणांका।

अठारे पाप स्थानक कहणा।

इच्छामि ठामि आलिउ जो मैं देवसी आयारकउ ए पाटी कहणी।

एक नवकार कह पारलेणो।

॥ इति प्रथम आवसग समाप्त ॥

दूसरा आवस्सगकी आज्ञा।

लोगस्सकी पाटी।

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सगकी आज्ञा।

दोय खमा समणां कहणा।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सगकी आज्ञा।

उभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा।

८ आठ पाटी बैठाथकां कहणी जिणांकी बिगत।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी।

२ एक नवकार।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी।

४ चत्तारि मंगलकी पाटी।

५ इच्छामि ठामी पडिक्कमेउ जो मैं देवसी।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी।

७ आगमें तिविहे की पाटी।

८ दंसण श्री समकीत्तकी पाटी।

ये आठ पाटी कही, बारे ब्रत अतिचार सहित कहणा।

पांच संलेखणा का अतिचार कहणा।

अठारे पाप स्थानक कहणा।

इच्छामि ठामी पडिक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी कहणी तस्स धम्मस केवली पन्नतस्सकी पाटी, दोय खमासमणां कहणां।

पांच पदांकी वंदना कहणी।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणांकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवसग्गकी आज्ञालई कहै ।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोद्धनार्थं करेमिका-उसग्गं ।

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाईयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गंकी पाटी ।

५ तस्सुतरीकी पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणांकी परमपराय रीतिसे ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्सकी ध्यान

पखीनें १२ बारे लोगस्सको ध्यान ।

चौमासी पखी नें २० बीस लोगस्सको ध्यांन समत्स-रीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यांन ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवसग्ग समाप्त ।

छट्ठा आवसग्गकी आज्ञालेई कहणा तेहनी बिगत ।

गयेकालनूं पडिक्कमणों बर्तमान कालमें समता

आगमें कालका पच्चखाण यथा सक्ति करणां ।

सामाई १ चौवीस्थो २ बंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छऊं आवसग्गां मैं ऊंची निची हिणी अधिक पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणमें पहिला मैं तो सिद्धगई नाम धेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं दूजा नमोत्थुणं मैं सिद्धगई नाम धेयं ठाणं संपविकामी नमो जिणाणं ।
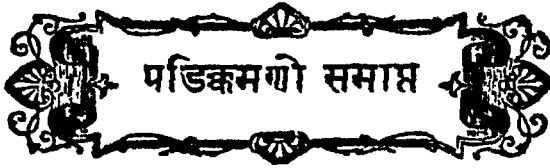
सत्तामलजी स्वांमीकृत

छन्द त्रोटक

मघवाहुंजसि रिझवारमुंनि, दुतिदिपरही कहैदेवदुनि।
सुररिझत होतधनाढ्यसही, गुरुदेवकृपासमएक नहीं ।।

अथःजिन आज्ञा ओलखावणको चौढालियो

दुहा ॥ केइ पाषंडि जैनरा । साधुनांम धराय ॥ तेपापकहै जिनआज्ञामझे । कुडाकुहेतलगाय ॥ १ ॥ आहारपांणी साधु भोगवे । तेश्रीजिन आज्ञासहित ॥ तिणमे प्रमादने अव्रतकहै । त्यांरी सरधाघणी बिपरीत ॥ २ ॥ बलि बसत्र पात्र कांमलो । इत्यादिक उपध अनेक ॥ तेजिन आज्ञास्युं भोगवे । तिणमें पापकहै ते बिना बिबेक ॥ ३ ॥ त्यांश्री जिनधर्म नहीं ओलख्यो । जिन आज्ञापिण ओलखी नांह ॥ तिणस्युं अनेक बोलांतणो पापकहै । जिन आज्ञारेमांह ॥ ४ ॥ कहै नदी उतरे तिण साधुने । आज्ञादेजिन आप ॥ आ प्रतक्ष हिन्सादेखल्यो । आज्ञाछै तोपिणपाप ॥ ५ ॥ इत्यादिक अनेक बोलांमझे । आज्ञादेजिनराय ॥ जठै हिंसाहोवेछैजीवरी । तठै पापलागेछैआय ॥ ६ ॥ इम-कहीनेजिनआज्ञामझे । थापेपापएकंत ॥ हिवेंओल-खाऊं जिनआगन्यां । तेसुणज्योमतिवंत ॥ ७ ॥

* ढाल पहली *

(भवियण सेवोरे साधसयाणाएदेशी ।)

जे जे कारज जिन आज्ञासहितछै। तेउपयोग सहितकरेकोय ॥ तेकारजकरतां घातहोवेजिवारी। तिणरोसाधुने पाप नहोयरे ॥ भवियणजिनआगन्यांसुखकारी ॥ १ ॥. जीवांतणोघात हुइ साधुथी। त्यांरोसाधुने पाप न लागे ॥ जिनआगन्यां पिणलोपी न कहिजे। वलि साधुरोव्रतने भागेरे ॥ २ ॥ आं दूचर्यवाली बात उघाडी। कार्चारेहिये केमसमावे ॥ जांजिनआग्या उलखी नहीं पूरी। ते जिन आग्यासेपापवतावेरे ॥ ३ ॥ नदी उतरे जब सुधसाधुने। आग्यादे श्रीजिन आप ॥ जोउनदी उतरतां पापहोवेतो। आग्या दे त्यांने पिणपापरे ॥ ४ ॥ छद्मस्थ साधु नदीउतरे जब। त्याने केवली आज्ञा दे सोय ॥ पोतेपिण केवली नदीउतरेछै। पाप हुसीतोदोयां नेहोयरे॥५॥ जे नदी उतरेछै केवलज्ञानी। त्यांने पापने लागे लिगार ॥ तो छद्मस्थने पाप किण विधलागे। आं दोयांरो एक आचाररे ॥ ६ ॥ छद्मस्तने केवली नदीउतरेजब। दोयांस्यु होवे जीवांरी घात ॥ जो जीवमुवा त्यांरो पापलागेतो। दोयांने लागे प्राणातिपातरे॥७॥ केवल

ज्ञांनी नदीउतरे त्यानें पाप न लागेकोय। तो छद-
मस्थ साधु नदीउतरे जब। त्यांने पिण पाप न
होयरे ॥ ८ ॥ कोइ कहै केवलीने तो पाप न लागे।
नदी उतरतां जोगरहै सुध ॥ पिण छदमस्थने पाप
लागे नदीरो। आप्रतचबात विरुधरे ॥ ६ ॥ जिण
विध केवली नदी उतरे जिम। छदमस्थ जो उतरे
नांहिं ॥ तो खामी छै तिणरे इर्या सुमतिमें।
पिणखामी नहीं कर्तव्य मांहिरे ॥१०॥ तेखामि पड़ेतै
अजांण पणेछै। इरिया वहि पडिक्कमणी थाप। वलि
इधकी खांमि जाणे इर्या सुमतिमें। तो प्राश्चित ले
उतारे पापरे ॥ ११ ॥ साधु छदमस्थ नदि
उतरे ते कर्तव्य। सावज म जाणोकोय ॥ जो
सावजहोवेतो संजम भांगे। विराधक रीपांत होयरे
॥ १२ ॥ आगे नदी उतरतां अनन्त साधाने
उपनोछै केवलज्ञांन ॥ त्यांनदी मांहि आउषो पूरो-
करीने। पोंहता पंचमोगति प्रधांनरे ॥ १३ ॥ केइ
कहैसाधुनदी उतरे त्यांरे। इतरी हिन्सारोछै आगार ॥
तिणरो पाप लागे पिणव्रत न भांगे। इमकहैते
मुढ़ गिवाररे ॥ १४ ॥ जो साधुरे हिंसारो आगार
होवेतो। नदी उतरतां मोक्षन जावे ॥ हिन्सारो
आगारने पाप लागे जब। चौदमों गुणठाणों न

आवेरे ॥ १५ ॥ कोइ कहै नदी उतरे जब साधुने । लागे असंख्य हिन्सा परिहार ॥ तिणरो प्राश्चित लियां विनसुध नहीं छै । इम कहै तिणरे हिय छै अंधाररे ॥ १६ ॥ जो नदि उतर्‍यांरो प्राश्चित बिनलीधां । ते साधु सुध नहीं थावे ॥ तो नदी मांहि साधु मरे ते असुध छै । ते मोक्षमांहि क्युंकर जावेरे ॥ १७ ॥ साधु नदी उतर्‍यां मांहे दोष हुवे तो । जिन आगन्यां देनाहीं ॥ जिन आगन्यां दे तिहां पाप नहीं छै । थे सोच देखो मनमांहिरे ॥ १८ ॥ नदी उतरे त्यारो ध्यान किसो छै किसी लेस्या किसा परिणाम ॥ जोग किसा अध्यवसाय किसा छै । भलाभुंडा पिछाणों तांमरे ॥ १९ ॥ एपांचुं भलाछै तो जिन आज्ञाछै ॥ माठामें जिन आज्ञा न कोय ॥ पांचुंमाठास्युं तो पाप लागेछै । पांचु भलास्युं पाप न होयरे ॥ २० ॥ छदमस्थने केवली नदी उतरे जब । लारे छदमस्थ केवली आगे ॥ छदमस्थ उतरे छै केवलीरी आज्ञास्युं । त्यांने पाप किसे लेखे लागेरे ॥ २१ ॥ जिन सांसणच्यार तिर्थ माहिं । जिन आगन्यां छै मोटी ॥ कोइ जिन आगन्यां माहिं पाप बतावे । तिणरी सरधा छै खोटीरे ॥ २२ ॥ दवरो दाधो जाय पड़े जल मांहि । पिण जलमांहि लागी लाय ॥ तो किसो

ठोड वी करे ठंडाइ। किसी ठोड सातहोवे तायरे ॥ २३ ॥ ज्यु जिण आज्ञा मांहि पाप होवेतो। किणरी आज्ञामांहे धर्मों ॥ किणरी आज्ञापाल्या सुधगति जावे। किणरी आज्ञास्यु कटे कर्मोंरे ॥ २४ ॥ छांटां आवेछे तिणमांहि साधु। मातरो परठे दिसां जावे॥ तिणरे छे पिणजिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे ॥ २५ ॥ साधु राते लघु बड़ी नीत दोनूं हीं। परठण जावे अछांहि ॥ बले सिज्झाय करें रातेथांनक बारे। जावे आवे अछायां मांहिरे ॥ २६ ॥ इत्यादिक साधु राते काम पड़े जब। अछायां आवेने जावे॥ तिणने पिणछे जिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे ॥ २७ ॥ राते अछायां अपकाय पड़ेछे। तिणरी घात साधु थीथाय॥ ओपिण न्याय नदी जिम जाणो। तिणने पाप किसी बिधथायरे॥ २८ ॥ नदी माहिं बहती साधवी ने। साधु राखे हात संभावे॥ तिणमाहिं पिण छे जिनजीरी आज्ञा। तिणमें कुंण पाप बतावेरे॥ २९ ॥ इर्या सुमत चालतां साधु सुं। कदा जीव तणी होवेघात॥ तेजीव मुवांरो पाप साधुने। लागे नहीं अंसमातरे ॥ ३० ॥ जोइर्या सुमत बिना साधु चाले।

कहा जीव मरे नवि कोय ॥ तोपिण साधुने हिन्सा छउं कायरी लागे । कर्मतणों बंध होयरे ॥ ३१ ॥ जीवमुवा तिहां पाप न लागे। नमुवा तिहां लागो पाप ॥ जिण आग्या संभालो जिण आग्या जोवो जिण आज्ञामें पाप म थापोरे ॥ ३२ ॥ जब कोइ कहै गृहस्थी हाल्यां चाल्यां बिण साधुने किम वहरावे ॥ हालण चालणरी तो नहीं जिन आज्ञा। चाल्यांबिण तो वहरावणों नावेरे ॥ ३३ ॥ बैठो होवे तो उठ वहरावे । उभो होवे तो बैठ वह-रावे ॥ बैठन उठनरी तो नहीं जिन आगन्यां । तो बारमों ब्रतकिम निपजावेरे ॥ ३४ ॥ जो जिन आज्ञा बारे पाप होवेतो । हालण चालणरो पाप थावे ॥ साधांने वहरायांरो धर्मते चौवड़े। कोइइसड़ी चरचा ल्यावेरे ॥ ३५ ॥ कोइ कहै चालणरी तो जिन आज्ञा नाहीं । तोहीचाल वहरायांरो धर्म ॥ जिण आगन्याविन चाल्यो तिणने । लागो नहीं पाप कर्मरे ॥३६॥ इणविध कुहेत लगावे अज्ञानी । धर्म कहै जिन आग्याबारो ॥ हिवेजिन आगन्यांमांहि धर्म सरधणरा । थेजावहिया मांहे धारोरे ॥३७॥ मन वचन कायारा जोग तीनूं हिं । सावद्य निर्वद्य जांण ॥ निर्वद्य जोगांरी श्रीजिनआज्ञा । तिणरी

करजो पिछाणरे ॥३८॥ जोग नाम व्यापार तणों छै। तेभलाने भुंडा व्यापार ॥ भला जोगांरी जिन आज्ञा छै। माठा जोग जिन आगन्यांबाररे ॥३९॥ मन बचन काया भला बतावो ग्रहस्थने कहै जिन रायो। ते कायाभणी किण बिध प्रवर्ता वे। तिणरो विवरो सुणों चित लायोरे ॥४०॥ निर्बद्य कर्तव्यरी छै श्रीजिन आग्या। तिणकर्तव्यने काया जोग जाणे॥ तिण कर्तव्यरो छै श्रीजिन आग्या। तिण कर्तव्यने करो आणीवाणरे ॥४१॥ साधांने आहारहातांस्युं बहरावे। उठ वैठ वहरावे कोय। ते बहरावणरो कर्तव्य निर्वद्य छै। तिण में श्री जिन आगन्यां होयरे ॥४२॥ निर्बद्य कर्तव्य ग्रहस्थो करेछै। त्याने आगन्यां दे जिनराय॥ ते कर्तव्य तो काया स्युं करसी। पिण नकहै थे चला वो कायरे ॥४३॥ निर्बद्य कर्तव्यरी आगन्यां दिधां। पाप न लागे कोय॥ हालण चालणरी आंगन्यां दिधां। ग्रहस्थ स्युं संभोग होयरे ॥४४॥ बेसो सुवो उभो रहो नै जावो। ग्रहस्थ ने साधु न कहै आम॥ दसमिकालकरे सातमें अध्यैन। सैंतालीसमीगाथा मेंतांमरे ॥४५॥ उभारो कर्तव्य बेठारो कर्तव्य। करणों कहै जिन राय। पिण

बैठन उठन रोनही कहै गृहस्थ ने। थे विचार देखो मन मांयरे ॥४६॥ निर्वद्य कर्तव्य री आगन्यां दिधां। निर्वद्य चाल वो तेमांह आयो कर्तव्य छोड़ने चालणारी आग्या देवे तो गृहस्थरो संभोगी थायोरे ॥४७॥ गृहस्थरे दुवार पद्यो कपड़ादिक। जब साधु सुं जाणीनावे मांहि ॥ जब कोई गृहस्थ भेलो करे कपड़ादिक। साधुने मारग देवे ताहिरे ॥४८॥ साधांने मारग देवे जावण आवणरो। ते कर्तव्य निर्वद्य चोखो ॥ जो कपड़ादिक रेकांम भेलो करे तो सावद्य काम छै दोखोरे ॥४९॥ तिणस्युं साधु कहै गृहस्थने। म्हांने जायगां दो जावामांहि ॥ पिण कपड़ादिक भेलो करो सां वटने। इसडीनकाडेवाहरे ॥५०॥ गृहस्थरो उपध करे आगो पाछो। बैसायवा सोयवादिकरे काम ॥ ते पिणकर्तव्य निर्वद्य जाणो। नहीं उपधउपर परिणामरे ॥ ५१ ॥ केइ श्रीजिन आगन्यां बारे अज्ञानी। धर्म कहै छै ताम ॥ ते भोला लोकांने भर्ममें पाड़े। लेइ अनेक बोलारो नाम रे ॥ ५२ ॥ श्रावकरी मांहों मांहि करे वियावच। बलिसाता पुछै ने पुछावे। तिणमें श्री जिन आणां मुलन दिसे। तिण माहे धर्म बतावेरे ॥ ५३ ॥

श्रावकरी मांहो माहेव्यावचकीधी । तिणदीयो सरी
ररो साज । छवकायारो ससलतिखोकिधो । तिण
स्युं आग्या न दे जिनराजरे ॥ ५४ ॥ गृहस्थीरी
व्यावच किधीतिणरे । अठाइसमुं अणाचार ।
साता पुछ्यांरो अणाचार सोलमुं । तिणमें धर्म
नहीं छै लिगार रे ॥ ५५ ॥ सरीरादिक ने श्रावक
पुंजे । मातरादिक ने परठेपुंजे । इत्यादिक
कारजरी नहीं जिन आज्ञा । धर्म कहै त्यांने सब
लो न सूजेरे ॥५६॥ सरीरपुंजे मातरादिक परठे ।
तेतो सरीरादिकरो छै काज । जो धर्म तणोंए
कार्य हुवे तो । आगन्यां देता जिनराजरे ॥५७॥
जो पुंजणों परठणोनकरेजावक । तो काया थिर
रखणी एक ठाम । पिण हस्तादिकने बिण चलायां
रहणी नावे तामरे ॥ ५८ ॥ लघुवडी नीत तणी
अवाधा । खमणी ठमणी न आवे ताम । पुंजे
परठे तोइ सावद्य कर्तव्य छै । जिन आज्ञारो न
विकामरे ॥५९॥ कदा थोडि बुध त्यांने समज न पडे ।
तो । राखणी जिण प्रतीत आगन्यां मांहे पाप
आज्ञा बारे धर्म । इसडो न करणी अनितरे ॥६०॥
जिण आगन्यां मांहे पाप कहै छै । ज्यारिमत
घणी छै माठी । जिण आगन्यां बारे धर्म कहै छै

त्यांरे आइ अकल आडी पाटीरे ॥ ६१ ॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहतां । मुरख मुल न लाजे । वले धर्म कहै जिन आगन्यां बारे । ते पण्डित पाषंडियां मे वाजेरे ॥ ६२ ॥ जिन आगन्यां मांहे पाप कहै छै । ते बुडे छै कर कर ताणों । वले धर्म कहै जिन आगन्यां वारे । तेतो पुरा छै मुढ अजाणोंरे ॥ ६३ ॥ समत अठाराने वर्ष इकताले । जेठ सुद तीजने सुक्रवारे । जिन आगन्यांउलखा वण काजे । जोड किधी छै पर उपगार रे ॥६४॥

॥ दुहा ॥ जिण सांसणमें आज्ञा बडी । उलष तेबुधवान । ज्यांजिण आज्ञा नविउलषी । तेजीव छै विकल समान ॥ १ ॥ दोय करणी संसारमें । सावद्य निर्वद्य जाण । निर्वद्यमें जिण आगन्यां । तिण सुं पामैपद निर्वाण ॥२॥ सावद्य करणी संसार नी । तिणमें जिन आगन्यां नहीं होय । कर्म बंधे छै तेहथी । धर्म मजाणों कोय ॥ ३ ॥ किहां २ छै जिण आगन्यां । किहां २ आगन्यां नांह ॥ बुध वंत करो बिचारणां । निरणों करो घट मांह ॥४॥

॥ ढालदुजी ॥

(हुं बलिहारि हो श्री पुज्यजी रेनामरी एदेशी)

कोइ करे पच्चखाण नौकारसी। तिणरी आगन्यांदो जिन आप हो॥ स्वामीजी॥ कोइ दान दे लाखां संसारमें। पुछ्यां आप रहो चुप चाप हो॥ स्वामीजी हुं बलिहारी हो। हुं बलिहारी हो श्री जिनजीरी आगन्यां॥ १॥ जिण आज्ञा सहित नौकारसी। कीधां कटे सात आठ कर्म हो॥ स्वा० कोइ दान दे लाखां संसार में। तेतो आपरो भाष्यो नहीं धर्म हो॥ स्वा०॥हुं॥ २॥ अन्तर महुरत त्यागे एक भुंगडो। तिणरी आगन्यां दो जिनराज हो॥ स्वा०। कोइ जीव छुडावे लाखां दाम दे। तठे आप रहो मौन साझ हो॥ स्वा०॥हुं॥ ३॥ अन्तर महुरत त्यागें एक भुंगडो। तेतो आपरो सीखायो छै धर्म हो॥ स्वा०। तिणस्युं कर्म कटे तिण जीवरा। उतकृष्टोपामे सुख परमहो॥ स्वा०॥ हुं॥ ४॥ कोइ जीव छुडावे लाखां दाम दे। तेतो आपरो सीखायो नहीं धर्म हो॥ स्वा०। ओ तो उपगार संसार नों। तिणस्युं कटता न जाण्यां आप कर्म हो॥ स्वा॥ हुं॥ ५॥ कोइ साधांने बहु

रावे एक तिणषलो। तिणरी आज्ञा दो आप साख्यात हो॥ स्वा०। कोइ श्रावक जिमावे कोडांग में। तिणरी आज्ञा नदो अंसमात हो॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ६ ॥ साधांने बहरावे एक तिणषलो। तिणरे बारमुं व्रत कह्यो आप हो॥ स्वा०। तिणस्युं आज्ञा दीधी आपतेहने। बले कटता जाण्यां तिणरा पाप हो॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ७ ॥ कोइ श्रावक जीमावे कोडानिवतने तेतो सावद्य कामों जाण्यो आप हो॥ स्वा०। उण छवकाय शस्त्र पोषियो। तिणने लागो छै एकंत पाप हो॥ स्वा० ॥ हुं ॥८॥ कोइ करे व्यावच श्रावकां तणी। तठे पिण आपरे छै मौन हो॥स्वा०। उण तीखो कीधो छै शस्त्र छव- कायनो। ते कर्तव्य जाण्यो आप जबुन हो॥स्वा० ॥ हुं ॥ ९ ॥ कोइ उघाडे मुख भणे छै सिधन्तने। कोडांगमे गुणे छै नवकार हो॥ स्वा०। तिणमें आपतणी आगन्यां नहीं। तिणमें धर्म न सरधुं लिगारहो॥ स्वा०॥ हुं ॥ १० ॥ उघाडे मुख गुणे छै नवकारने। तिण बाउकायमार्या असंख्य हो॥ स्वा०। तिणमें धर्म श्रधे ते भोला थका। त्यांरे लागा कुगुरांराडंक हो॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ११ ॥ जैणां स्युं गुणे एक नवकार ने। तिणस्युं कोड भवांरा

कटै कर्म हो ॥ स्वा०। तिणमें आप तणी छै आगन्यां। तिणरे निश्चे ही निर्जरा धर्म हो ॥ स्वा०॥ हुं ॥ १२ ॥ कोइ साधु नाम धरायने। प्रसंसे छै सावद्य दान हो ॥ स्वा०। त्यांभेष भांड्यो भगवानरो त्यांरे घट माहे घोर अज्ञान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥१३ मौन कही छै साधुने सावद्य दानमें। तेतो अन्तराय पडती जाण हो ॥ स्वा०। तिणरो फल तो सुत में बतावियो। तिणरी बुधवन्त करसी पिछाण हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ १४ ॥ प्रदेशी राजा कहै केसी स्वाम ने। म्हारे तो चढ़तो बैराग हो ॥स्वा०। म्हारे सात सहंस गांव खालसे। तिणरा करुं च्यार भाग हो ॥ स्वा०॥ हुं ॥ १५ ॥ एक भाग राख्यां निमते करुं। दूजो भाग करुं खजान हो । स्वा०। तीजो भाग घोडा हाथी निमत करुं। चौथो भाग करुं देवा दान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ १६ ॥ च्यारुं भाग सावद्य कामों जाणनें। मौनसाभी रह्या केसी स्वाम हो॥ स्वा०। जो उवे किणहीक में धर्म जाणता। तो तिणरी करता प्रसंसा ताम हो ॥ स्वा०। हुं ॥ १७ ॥ सावद्य कर्तव्य च्यारुं भाग राजरा। त्यामेजीवांरी हिंसा अत्यंन्त हो ॥ स्वा०। तिणस्युं च्यारू बराबर जाणने मौन साभी रह्या मतिवन्त हो॥ स्वा ।०। हुं ॥१८॥

जान देवा मंडाडूदान साल में। प्रदेशी नामे राजान हो ॥ खा०। सात सहंस हुंता गांव खालसे तिणरी चोथी पांतीरो देवा दान हो ॥ खा० हुं ॥ १९ ॥ च्यार भाग कर आप न्यारो हुवो। तिण जाण्यो संसार नो भाग हो ॥ खा०। तिण तीथ नकिधी तिणराजरी। रह्यो मुगतस्युं सनमुख लाग हो ॥ खा० ॥ हुँ ॥ २० ॥ ओ तो दान ओराने भोलायने। तिण पुछी नहिंसी बात हो ॥ खा०। चौव दे प्रकार रो दान साधने। तेतो राख्यो निज पोतारे हात हो ॥खा॥ हुं० ॥२१॥ चोथो भाग दान तालकि करी। नहीं राख्यो पोतारे हात हो ॥ खा०॥ ती नूं भाग ज्युं डूणने पिणथापीयो। छव काय जीवांरी जाणी घात हो ॥ खा० हुं ॥ २२ ॥ साडा सतरेसो गांव दान तालकि। दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव हो ॥ खा०। त्यांरे हांसलरो धान रंधा यने। दान साला मंडाड़ ठामठाम हो ॥ खा० ॥ हुं ॥ २३ ॥ टालवा गांव जाणीज्यो खालसे। तेतो चौथि आराराछा गांव हो ॥ खा० ॥ हांसल पिण आवतो जाणो ज्यो घणों। नेपे पणहुंती घणी अमाम हो ॥ खा० ॥ हुं ॥ २४ ॥ हांसल आयो हुवे एक एक गांवरो। दश सहंस मणारे उनमान हो

॥ स्वा० । दिन २ प्रते मठेरा पांच गांव रो ।
ऊणो पचास हजार मणां धान हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥
॥ २५ ॥ इण लेखे एक बरस तणो । पुणां दोय
क्रोडमम धान हो ॥स्वा०। अधिको ओछो तो आप
जाणीरह्या । अटकल स्युं कह्यो उनमान हो ॥स्वा०॥
हुं ॥२६॥ पाणी पांच क्रोड मणारे आसरे । पुणां दोय
क्रोड मण रांध्यां धान हो ॥ स्वा० । अग्न एक क्रोड
मण जाणज्यो । लुणछे लाखां मणारे उनमान हो
॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २७ ॥ नितधान हजारां मणरांधत ।
अगन पाणी हजारां मण जाण हो ॥ स्वा० । मणा
बंध लुण पिण लागतो । बाउकायरो बोहोत घम-
साण हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २८ ॥ फवारादिक अनेक
पाणी मझे । बलेबनस्पति पाणी मांय हो ॥ स्वा० ।
धान हजारांमन रांधता । तिहां अनेक मुवा
त्रसकाय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ २९ ॥ दिन २ प्रते मारे
छवकायने । बले अनंतजीवारी करे घात हो
॥ स्वा० ॥ त्यारी हिंसाणे पापगीणे नहीं ॥ त्यारे
हिंसा धर्मरो मिथ्यात हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३० ॥
एहवा दुष्ट हिंसा धर्मी जीवडा ॥ केइ जाणेछे
अज्ञानी साध हो ॥ स्वा० ॥ तिणरे घट मांहि घोर
अन्धार छै ॥ तेतो नेमा निश्चे छै असाध हो ॥ स्वा०

॥ हुं ॥ ३१ ॥ केइ जीव खुवायामें पुन्य कहै । केइ मिश्र कहै छै मुढ हो ॥ स्वा० ॥ ऐ दोनूं बूडा छै बापड़ा कर २ मिथ्यात री रुढहो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३२ ॥ जीव खाधांखुवायां भलो जाणीयां । तीनूं हीं करणां छै पाप हो ॥ स्वा० ॥ आसरधा परुपी छै आपरी । तेपिण दैवे छै अज्ञानी उथाप हो ॥स्वा०॥ हुं ॥ ३३ ॥ केइ जीव खुवावेछै तेहनां । चोखा कहै अज्ञानी प्रणाम हो ॥ स्वा० ॥ कहै धर्मने मिश्र हुवे नहीं । जिव खुवायां विण ताम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३४ ॥ जीव खावणारा प्रणाम छै अतिबुरा । खुवावणा रा पिण खोटा परिणाम हो ॥ स्वा० ॥ युहीं भोलाने नाखें भर्ममें । लेले परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३५ ॥ केइ कहै जीवांने माखां बिना । धर्म न हुवे ताम हो ॥स्वा०॥ जीव माखांरो पाप लागे नहीं । चोखा चाहिजे निज परिणाम हो॥ स्वा०॥ हुं ॥३६॥ केइ कहै जीवांने माखां विना । मिश्र न हुवे ताम हो ॥ स्वा० ॥ ते जीव मारणारी सांनी करे । लेले परिणामांरो नाम हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥३७॥ केइ धर्मने मिश्र करवा भणी । छवकायरो करे घमसाण हो ॥ स्वा० ॥ तिणरा प्रणाम चोखा कह्यांथकां । पर जीवांरा छुटे प्राण हो ॥स्वा०॥ हुं ॥३८॥ जिण ओलख

लीधी आपरी आगन्यां। ओलख लीधी आपरी मौन हो ॥ स्वा० ॥ तिण आपने पिण ओलख लीया। तिणरेटलसी माठी माठी जुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ३९ ॥ तिण आज्ञा नविओलखी आपरी। ओलखी नवि आपरी मौन हो ॥ स्वा०। तिण आपने पिण ओलख्या नवि। तिणरे वन्नसी माठी माठी जुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४० ॥ कोइ जिण आज्ञा वारे धर्म कहै। जिण आज्ञा माहि कहे पाप हो ॥ स्वा०। ते दोनूं विध वुडा छै वापडा। कुडो करकर अज्ञा नी विलाप हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४१ ॥ आपरो धर्म आपरी आगन्यांमभे। नहीं आपरी आज्ञा वार हो ॥ स्वा० ॥ जिण धर्म जिण आगन्यां वारे कहै। तेतो पुरा छै मुढ़ गिवार हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४२ ॥ आप अवसर देखनै वोलीया। आप अवसर देखी साभी मौन हो ॥ स्वा० ॥ जिहां आपतणी आगन्यां नवि। ते करणी छै जावकजवुन हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४३ ॥ भेष धार्यां सावद्य दान थापीयो। तिण दानस्युं दयाउथप जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले दया कहै छवकाय वचाविंयां। तिणस्युं दान उथपगयो ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४४ ॥ छवकाय जीवानै जीवा मारनैं। कोइ दान देवे संसाररे मांय हो ॥ स्वा०।

तिणरे घटमें छवकाय जीवांतणी। दया रही नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४५ ॥ कोइ दान देवे तिणने बरजने। जीव बचावे छवकाय हो ॥ स्वा० ॥ तेजीव वचायांदया उथपे। तिणस्युं न्यारा रह्यां सुखथा-यहो ॥ स्वा० ॥ ४६ ॥ छवकायने जीवांने मारे दान दे। तिण दान स्युं मुगत न जाय हो ॥ स्वा० ॥ वले फिर बचावे छवकायने। तिणस्युं कर्म कटे नहीं ताय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४७ ॥ सावद्य दान दियां स्युं दया उथपे। सावद्य दयास्युं उथपे अभै दान हो ॥ स्वा० ॥ सावद्य दान दया छै संसार नां। यांने ओलखते बुधवान हो ॥ स्वा० ॥ हुँ ॥ ४८ ॥ तीविधि २ छवकाय हणावो नहीं। आ दया कहि जिणराय हो ॥ स्वा० दान देणो सुपात्रने कह्यो। तिणस्युं मुगत सुखे सुखे जाय हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ४९ ॥ दान दया दोनूं मारग मोषरा। तेतो आपरी आज्ञा सहित हो ॥ स्वा० ॥ याने रुडीरित आराधिया। ते गया जमारो जीत हो ॥ स्वा० ॥ हुं ॥ ५० ॥ आप तणी आग्या ओलखायवा। जोड किधी नवां सहर मभारहो ॥ स्वा० ॥ समत अठारे नै वरस चमालीसे। माहासुद सातम ब्रहस्पति

वार हो ॥ स्वामी जी हुंवलिहारी हो हुंवलिहारी हो श्री जिनजीरी आगन्यां ॥ ५१ ॥

॥दुहा॥ श्रीजिन धर्म जिन आज्ञामझे। आज्ञा बारे नहीं जिन धर्म॥ तिणस्यु पापकर्म लागे नहीं। बले काटे आगला कर्म ॥१॥ केइ मुढ मिथ्याती इम कहे। जिण आज्ञा बारे जिण धर्म॥ जिण आज्ञा माहे कहे पाप छे। ते भुला अज्ञानी भर्म ॥२॥ जिण आज्ञा बारे धर्म कहे। जिन आज्ञा माहे कहे पाप ॥ तेकिण हीं सुतमें छे नहीं। युहिं करे मुढ बिलाप ॥३॥ कहे धर्म तिहां देवां आगन्यां। पाप छे तिहां करां नषेध॥ मिश्र ठीकाणे मौन छे। एह धर्मनो भेद ॥४॥ इसड़ी करेछे परूपणां। तेकरे मिश्ररीथाप ॥ तेबुडा खोटोमत बांधने। श्रीजिन बचन उथाप ॥५॥ केइ मिश्रतो माने नवि। माने हिंसामें एकन्तधर्म॥ तेपण बुडेछे बापडा॥ भारि करेछे कर्म ॥६॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञामझे। आज्ञा बारे धर्म नहीं लिगार॥ तिणमें साख सुतरी दे कहुं। ते सुण ज्यो विस्तार ॥७॥

---

* ढाल तीजी *

(जीव मारेते धर्म आछो नवि एदेशी)

आज्ञामें धर्म छै जिनराजरो । आज्ञा बारे कहै ते मुढरे॥ बिवेक बिकल सुध बुध बिना । ते वुडे छै करकर रूढरे॥ श्रीजिन धर्म जिन आगन्यां तिहां ॥१॥ ज्ञान दरसण चारत ने तप । एतो मोषरा मारग च्यारेरे ॥ यां च्यारां मे जिनजीरी आगन्यां । यांबिनां नहीं धर्म लिगाररे ॥श्री॥ २ ॥ यां च्यारां मांहला एक एकरी । आग्या मांगे जिनेश्वर पासरे ॥ तिणने देवे जिनेश्वर आगन्यां । जब उ पामे मनमें हुंलासरे ॥श्री॥३॥ यांच्यारां बिना मांगे कोइ आगन्यां । तो जिनेश्वर साझे मौनरे ॥ तो जिन आगन्यां बिना करणी करे । ते करणी छै जावक जबुनरे ॥श्री॥४॥ बीसां भेदां रूके कर्म आंवता । बारे भेदे कटे बन्धिया कर्मरे॥ त्याने देवे जिणेश्वर आगन्यां । ओहिज जिण भाष्यो धर्मरे॥ श्री ॥५॥ कर्म रूके तिणकरणीमें आगन्यां। कर्म कटे तिण करणी में जाणरे ॥ यां दोयां करणी बिना नवि आगन्यां । तेसगली सावद्य पिछाणरे॥श्री॥६॥देव अरि-हन्त ने गुरु साध छै । केवली भाष्योते धर्मरे ॥ ओर धर्म नहीं जिन आगन्यां । तिणसुं लागेंछै पापकर्मरे॥श्री॥७॥ जिन भाष्यामे जिनजीरी आगन्यां । ओरांरी

भाष्यामें ओर जाणरे ॥ तिणस्यु जीव सुधगत जावे नहीं। वले पाप लागेछे आणरे॥श्री॥८॥ केवली भाष्यो धर्म मंगलीकछे। ओहिज उत्तम जाणरे॥ सर्णो पणल्यो इण धर्मरो। तिणमें श्रीजिन आज्ञा प्रमाणरे ॥श्री॥६॥ ठाम २ सुत्र माहे देखल्यो। केवली भाष्योते धर्मरे॥ मौन साझे तिहां धर्म को नहीं। मौन साझे तिहां पाप कर्मरे ॥श्री॥१०॥मौन साझणियो धर्म माठो घणो। भेष धार्यां मरुप्यो जाणरे॥ खांचरवुडेछे वापड़ा। ते सुत्र रा मुढ अजाणरे ॥श्री॥११॥धर्मने सुक्ल दोनूं ध्यानमें। जिण आज्ञा दिधी बारूं बाररे॥ आर्त रुद्र ध्यान माठा बिहुं। याने ध्यावे ते आज्ञा बाररे॥ श्री ॥ १२ ॥ तेजु पद्म सुक्ल लेस्या भली। त्यांने जिन आगन्यां ने निर्जरा धर्मरे॥ तीन माठी लेस्यामें आ ग्या नहीं। तिणस्युं बन्धेछे पाप कर्मरे॥ श्री ॥ १३ ॥ च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या। च्यार सर्णा कह्या जिन रायरे॥ एसगलाछे जिन आगन्यां मझे। आज्ञा बिन आछी वस्तु न कायरे॥ श्री ॥ १४ ॥ भला प्रणाम में जिन आगन्यां। माठा परिणामां आ ज्ञा बाररे॥ भलापरिणामां निर्जरा निपजे। माठा परिणामां पापद्वाररे ॥श्री॥१५॥ भलां अध्यव साय में जिन आगन्यां। आज्ञाबारे माठा अध्यव सायरे॥ भला

अध्यव सायां सु निर्जरा हुवे। माठा अध्यव सायांसु पाप बन्धायरे॥ श्री॥ २६॥ ध्यान लेस्या प्रणाम अध्यव सायछे। च्यारु भला में आज्ञा जाणरे॥ च्यारु माठामें जिन आज्ञा नहीं। यांरा गुणारो कर जो पिछाणरे॥ श्री॥ १७॥ सर्व मुल गुणने उत्तर गुणे। देश मुल उत्तर गुण दोय रे॥ दोयां गुणां में जिनजीरी आगन्यां। आगन्यां बारे गुण नवि कोयरे॥ श्री॥ १८॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म छे। उवाइ सुगडायंग मांयरे॥ तिणमें तो जिन जीरी आगन्यां। सेष अनर्थमें आग्या नवितायरे॥ ॥ श्री॥ १६॥ सर्व व्रत धर्म साधां तणो। देशव्रत श्रावकरो धर्मरे॥ यां दोयां धर्म जिनजीरी आगन्यां। आग्या बारे तो बन्धसी कर्मरे॥ श्री॥ २०॥ उजलो धर्म छे जिन राजरो। तेतो श्रीजिन आज्ञा सहित रे। मुगत जावा अजोग असुध कह्यो। ते तो जिन आग्या स्युं बिपरीतरे॥ श्री॥ २१॥ आज्ञा लोप छांदे चाले आपरे। ते ज्ञानादिक धन सुं खाली थायरे॥ आचारंग अध्येन दुसरे। जो वो छटा उदेसा मांयरे॥ श्री॥ २२॥ आज्ञा सुं रुके ते धर्म मांहरो। एहवो चिन्तवें साधुमन मांयरे॥ आज्ञा बिन करवो जिहांहिं रह्यो। रुडो बोलवो पिण

नवि थायरे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते धर्म मां
हरो। और सर्व पारको थायरे। आचारंग छठा
अध्येन में। पहलि उदेस जोय पिछाणरे ॥ श्री ॥
२४ ॥ आगन्यां मांहि संजम नै तप। आगन्यां में
दोनूँ परिणामरे। आग्या रहित धर्म आछो नवि।
जिण कह्यो पराल समानरे ॥ श्री ॥ २५ ॥ आश्रव
निर्जरारो ग्रहण जुदो कह्यो। ते जाणसी जिन आ
ज्ञारो जाणरे। आचारंग चौथा अध्येनमें। पहले
उदेसा जोय पिछाण रे ॥ श्री ॥ २६ ॥ निर्वद्य धर्म
चतुर विध संघ छै। ते आग्या सहित वंछै अनु-
सन्तानरे। आचारंग चौथा अध्येन में। तीजे
उदेसे कह्यो भगवान रे ॥ श्री ॥ २७ ॥ तिर्थंकर धर्म
कीधोतिको। मोषरो मारग सुधवेसरे ॥ ओर
मोषरो मारग को नहीं, पांचमें आचारंग तीजे उदेस
रे ॥ श्री ॥ २८ ॥ जिण आज्ञा वारली करणी तणो।
उधम करे अज्ञानी कोयरे ॥ आज्ञा माहली कर-
णीरो आलस करे। गुरु कहै सिष्य तोने दोय
म होयरे ॥ श्री ॥ २९ ॥ कुमारग तणी करणीकरे।
सुमारग रो आलस होयरे ॥ ए दोनूँ हिं करणी
दुरगत तणी। आचारंग पांचमें अध्येन जोयरे
॥ श्री ॥ ३० ॥ जिण मारग रा अजाणने। जिण

उपदेश नों लाभ न होयरे ॥ आचारंग राचोथा अध्येन में ॥ तीजा उद्देसामें जोयरे ॥ श्री ॥ ३१ ॥ ज्यां दान सुपात्र ने दियो । तिणमें श्रीजिन आग्या जाणरे ॥ कुपात्र दानमें आगन्यां नहीं । तिणरी बुधवंत करज्यो पिछाण रे ॥ श्री ॥ ३२ ॥ साध बिना अनेरा सर्वने । दान नहीं दे माठो जाणरे ॥ दीधां भमण करे संसार में । तिणस्युं साध किया पच्चखाणरे ॥ श्री ॥ ३३ ॥ सुयगडांग नवमा अध्येन में । बीसमी गाथा जोयरे ॥ वले दिधां भागे व्रत साधरो । जिन आगन्यां पिणनवि कोयरे ॥ श्री ॥ ३४ ॥ पात्र कुपात्र दोनूं ने दिया । विकल कहै, दोयामें धर्मरे ॥ धर्म हुसी सुपात्र दानमें । कुपात्र ने दिया पाप कर्मरे ॥ श्री ॥ ३५ ॥ खेत्र कुखेत्र श्रीजिन वर कह्यो । चौथे ठाणे ठाणा अंग मांयरे ॥ सु खेत्रमें दियां जिन आगन्यां । कु खेत्रमें आग्या नवि कायरे ॥ श्री ॥ ३६ ॥ आहार पाणीने वले उपधादिक । साधु देवे ग्रहस्थने कोयरे ॥ तिणने चौमासी दण्ड नसीतमें । पनरमें उद्देसे जोयरे ॥ श्री ॥ ३७॥ ग्रहस्थने दान दे तिण साधुने । प्राश्चित आवे किधो अधर्मरे ॥ तो तेहिज दान ग्रहस्थ देवे । त्याने किण विध होसी धर्म रे ॥ श्री ॥ ३८ ॥ असंजम

छोड संजम आदस्यो। कुसील छोड हुवो ब्रह्मचार रे॥ अणाक्षल्पणीक अकार्य परहरे। कल्प आचार कियो अंगीकार रे॥ श्री॥ ३९॥ अज्ञान छोडने ज्ञान आदस्यो। माठी क्रिया छोडि माठी जाणरे॥ भली क्रियाने साधु आदरी। जिण आज्ञा स्युं चतुर सुजाण रे॥ श्री॥ ४०॥ मिथ्यात छोड सम्यक्त आदस्यो। अबोध छोड आदस्यो बोधरे॥ उनमार्ग छोड़ सुनमार्ग लियो। तिणस्युँ होसी आतमा सु-धरे॥ श्री॥ ४१॥ आठ छोड़ेते जिन उपदेस सुं। पाप कर्म तणों बंध जाणरे॥ जिण आज्ञा स्युँ आठ आदस्यां। तिणसुं पामै पद निर्वाण रे॥ श्री॥ ४२॥ ठाम २ सुत्र में देखल्यो। जिण धर्म जिण आज्ञा में जाणरे॥ ते मुढ मिथ्याती जाणे नहीं। युहीं बुडे छै कार कार ताणरे॥ श्री॥ ४३॥ हुं कहि कहिने कितरो कहु। आगन्यां बारे नहीं धर्म मुलरे॥ आगन्यां बारे धर्म कहै तेहना। सरधा कण बिना जाणो धुलरे॥ श्री॥ ४४॥

॥ दुहा॥ भेषधारी विगरायल जैनरा। ते कुड कपटरी खान॥ ते आगन्यां बारे धर्म कहै। त्यांरे घटमें घोर अग्यान॥ १॥ त्याने ठीक नहीं जिन धर्मरी। जिण आग्यारी पिण नवि ठीक॥ त्याने

परवार विवेक विकल मिल्या ॥ त्यामें बाजे पुजमे ढीक ॥ २ ॥ ते बडा उंठज्युं आगे चले । लार चले जेमकतार॥ बोहला बुडेछै बापडा। बडा बुढा रीलार ॥ ३ ॥ हिवे वले विशेष जिन आगन्यां । ओलखजो बुधवान ॥ तिणरा भाव भेद प्रगट करूं । ते सुण जो सुर्त दे कान ॥ ४ ॥

॥ ढालचौथी ॥

(जंबु कुंवर कहै परभव सुणो एदेशी)

साधु सामायक व्रत उचरे । तिणमें सावद्यरा पच्चखाण ॥ भविक जन हो ॥ तेहिज सावद्य गृहस्थ करे । तिणमें श्री जिण धर्म म जाण ॥ भविक जन हो ॥ श्री जिनधर्म जिन आगन्यां तिहां ॥ १ ॥ श्रावक सामायक पोसो करे । तिणमें पिण सावद्यरा पच्चखाण ॥ भ० । तेहिज सावद्य कामो कुटो करे । तिणमें पिण जिणधर्म म जाण ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री ॥ धर्म कहै साधु जिन आगन्यां मझे । आग्या बारै धर्म कहै ते मुढ ॥ भ० । तिण श्री जिन धर्म नओलख्यो । तिण झाली मिथ्यातरी रुढ ॥ भ० ॥ ३ ॥ श्री ॥ जिन धर्मरी जिन आगन्यां देवे । जिण धर्म

सीखावे जिणराय ॥ भ० । आज्ञा बारे धर्म किण सीखावियो । तिणरी आज्ञा देवे कुण ताय ॥ भ० ॥ ४ ॥ श्री ॥ केइ आगन्यां बारे मिश्र कहे । केइ धर्म पिण कहे आज्ञाबार ॥ भ० ॥ तिणने पूछिजे ओ धर्म किण कह्यो । तिणरो नाम तुं चोडेबताय ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री ॥ इण मिश्रने धर्मरो कुण धणी । तिणरी आज्ञा कुणदे जोड्यां हात ॥ भ० । देवगुरु मौन साभ न्यारा हुवे । इणरी उतपतरो कुण नाथ ॥ भ० ॥ ६॥ श्री ॥ कोइ बेस्यारा पुत्रने पुछा करे । थारि मा कुण ने कुण तात ॥ भ० । जब उ नांव बतावे किण बापरो । ज्युं आ मिश्रवालांरी छे बात ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री ॥ बेस्यांरा अंग जात नो उपनों । तिणरो कुण हुवे उदेरिजे बाप ॥ भ० । ज्युं आज्ञा बारे धर्म ने मिश्ररो । जिण धर्मरी करसी कुण थाप ॥ भ० ॥ ८ ॥ श्री ॥ बेस्यारे अंग जातनो उपनो । उण लषणो हुवे उदेरिने बाप ॥ भ० । जुं जिन आगन्यां बारे धर्म ने मिश्ररो । केइ करे छे माषरिड थाप ॥ भ० ॥ ९ ॥ श्री ॥ कोइ कहे म्हारी माता छे बांभडी । तिणरो हुं छुं आतम जात ॥ भ० । ज्युं मुर्ख कहे जिण आगन्यां बिना । करणी कीधां धर्म साष्यात ॥ भ० ॥ १० ॥ श्री ॥ बाप बिण

बेटो निश्चे हुवे नहीं । ज्युं जिण आग्या बिना धर्म न होय ॥ भ० । जिन आज्ञा होसी तो जिण धर्म छै । आज्ञा बिना धर्म न होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ श्री ॥ मा बिण बेटारो जन्म हुवे नहीं । जन्मे ते बांझ ने होय ॥भ० । ज्युं जिण आज्ञाविना धर्म हुवे नहीं । जिन आज्ञा तिहां पाप न कोय ॥ भ० ॥ १२ ॥ श्री ॥ गघु पंषी ने चोर दोनूं भणी । गमती लागे अंधारी रात ॥ भ० ॥ ज्युं भारि कर्मां जीव तेह-ने । जिण आग्या बाहर लो धर्म सुहात ॥ भ० ॥ १३ ॥ श्री ॥ काग निमोली में रति करे । भण्ड सूरा ने भीष्टो आवेदाय ॥ भ० । ज्युं काग भंड सूरा जेहवामानवी । रिझे आज्ञा बाहर ली करणी मांय ॥ भ० ॥ १४ ॥ श्री ॥ चोर परदारा सेवणकुसी लिया । तेतो सेरी जोवे दिन रात ॥ भ० । ज्युं आज्ञा बाहर धर्म श्रधायवा । उंधी कर कर अ-ज्ञानी बात ॥ भ० ॥ १५ ॥ श्री ॥ गुरुवादिकरी आ ज्ञा मांगे नहीं । तेतो अपछन्दा अवनित ॥ भ० । ज्युं केइ जिण आगन्यां विण करणी करे । ते पिण करणी छै बिपरीत ॥ भ० ॥ १६ ॥ श्री ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चितरा । छल सुं करे पर जीवांरोघात ॥ भ० । एहवा दुष्ट मिथ्र सरधा रा धणी । छल

स्युं घाले विकलांरे मिथ्यात ॥ भ० ॥ १७ ॥ श्री ॥
बिगरायल हुवां न्यात बारे करे । ते बिगरायल फिरे
न्यात बाहर ॥ भ० । तेहवो धर्म जिण आगन्यां
वार लो । तिणमें कदे मत जाणो भलीवार ॥भ०
॥ १८ ॥ श्री ॥ न्यात बारे ते न्यात मांहि नहीं । ति
णने नवि बैसाणे एक पांत ॥ भ० । ज्युं जिण आ
ज्ञा विना धर्म अजोग छै । किधां पुरीजे नहीं
मन खांत ॥ भ० ॥ १९ ॥ श्री ॥ जो आग्या विन
करणी में धर्म छै । तो जिन आज्ञारो काम न कोय
॥ भ० । तो मन मानी करणी करसी तेहने । सग-
ली करणी कियां धर्म होय ॥ भ० ॥ २० ॥ श्री ॥
जिण आज्ञा वाहर ली करणी कियां । पाप नहीं
लागे नै धर्म थाय ॥ भ० । तो किण करणी सुं पाप
निपजे । तिण करणी रो तुं नांव बताय ॥ भ० ॥
२१ ॥ श्री ॥ ज्ञान दर्शण चारित तप । ए च्यारुंहिं
छै आज्ञा मांय ॥ भ० । यां च्यारां मांहि तो धर्म
जिण कह्यो । यां विना ओर नांव बताय ॥ भ० ॥
२२ ॥ श्री ॥ इमपुछ्यां रो जाव न उपजे झूट बोलै
बणाय बणाय ॥ भ० ॥ विकला ने विगोवण पापीआ ।
जिण आग्या बारे धर्म अधाय ॥ भ० ॥ २३ ॥ श्री ॥
आगन्यां बारे धर्म कहै । ते पिण छै, आगन्यां वार

॥ भ० । इण सरधा सुं बुडे छै बापड़ा । ते भव भवमें होसी खवार ॥ भ० ॥ २४ ॥ श्री ॥ जिण आगन्यां बारे धर्म कहै । ते बिगरायल जैनरा जाण ॥भ० त्यांरि अभिंतर फूटी छै मांहली । ते अंधारे उगो कहै भाण ॥भ० ॥ २५ ॥ श्री ॥ श्रीजिन आगन्यां बिन करणी करे । तेतो दुरगतरा आगीवाण ॥भ०॥ जिण आज्ञा सहित करणी करे । तिणस्युं पामेपद निरवाण ॥ भ० ॥ २६ ॥ श्री ॥ आज्ञा बारे धर्म कहै तेहनी । जोड किधी छै षैरवा मझार ॥ भ० ॥ समत अठारे चालीस में । आसोजबिद पांचम था वर वार ॥ भ० ॥ २७ ॥ श्री ॥ श्रीजिनधर्म जिन आगन्यां तिहां ॥

इति जिन आज्ञा की चोढालियो

समाप्त ।
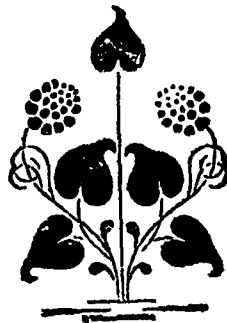
अथः श्रीपुज्य भीक्षणजीको स्मरण

कोइ अनुमति इम कहै। भजन नहीं जैन के मांय ॥ सुना घरको पाउणों। ज्युं आवे ज्युं जाय ॥१॥ खेतमें खात रलायने। हल देवे जुतराय ॥ खेत खडे चौकस करे। रूडी बाड बणाय ॥ २ ॥ जलस्युं सिंचै खेतने। बीज नहीं तिणमांय ॥ रुत आयां रोवे क्रषणी। लुण तां देखे लोग लुगाय ॥३॥ दान दया तप जप घणो। जैन धर्म के माय ॥ वीज भजन विना क्रषणी। करने सब खप अेलो जाय ॥ ४ ॥ केइ २ भोला लोकने। बांगा दे बहकाय ॥ देवे द्रष्टांत, प्रश्न कुडा। राखे फंदके मांय ॥५॥ जैन मति कोइ जैनमें। म्हांरी सुणो क्रषण करतुत ॥ वीज बावे साख निपजाय वा। शिवपुर अंगासुत ॥६॥ खेत धणीको जीव छे। काया खेत समान ॥ तपरूपीयो हल जोतने। षात रूपीयो दान ॥ ७ ॥ सागडी रूपीया सतगुरु। सम्यक्त बीजज नाथ ॥ दया रूपीयो जल पावतां। व्रतांरी बाड बणाय ॥ ८ ॥ खेत सीलु कर्म

काटवा ॥ चम्यां रुपणो कसोल्याय ॥ खाडू बाड संतोष ज्यु ॥ पांन पोट ज्यु पुन्या बंधाय ॥ ९ ॥ मेह अरिहंत ज्यु ध्यानछै। ध्यान रुपी योग्यान ॥ चारे रूप उपर निपना सुख संसार ना विविध बिविध असमान ॥१०॥ नाज रुपीया फल मुगतका । मोडा वेगा जास्यां मोष ॥ जैन जिस्यो क्रषण नहीं । म्हे घणां देख्या मत फोक ॥ ११ ॥ थे नहीं समजो बोधबीजमें म्हे भजां अरिहंत भगवान ॥ थारा गुर महिमां कहो में पिण लीधो जाण ॥ १२ ॥ गुरू गोवीन्द दोनूं खड़ा किसकै लागुं पाय ॥ बलिहा री सतगुरु तणी गोविन्द दिया ओलखाय ॥ १३ ॥ अरिहंत गुण नहीं ओलख्या । सतगुरु दिया दर-साय ॥ कहुं भजन महिमां सत गुर तणी । ते सुंण ज्यो चित्त लगाय ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥

श्री संत भिषण जीरो स्मरण करतां । भव दुख जावे सर्व भाज जी ॥ बासो बसे तो देव लोकां मांहि । पामे मुक्त पुरी नो राजजी ॥ श्रीपुज्य भिषनजी की स्मरण कीजे ॥१ ॥ भि कहै तां भिष व्रत लीधा ।

ष कहतां षीस्यांरस पीध जी॥ न कहैतां सावद्य काम निवास्या । जी कहैतां इन्द्रयां ने जीतजी ॥ श्री पुज्य ॥२॥ स्मरण चिन्तामण च्यार आषररो । तिणमें गुण अथागजी ॥ चक्री निधान ज्यु स्मरण साजे । तिणरो बीर कह्यो बड़ भाग जी ॥ श्री ॥ ३ ॥ सुत्र सिद्धांतमें नवकार भाख्यो । दोय पदामें आया स्वामजी ॥ आचार्य पदवीने सत गुर साधु । ज्यांरो रात दिवस रटो नामजी ॥ श्री पुज्य ॥ ४ ॥ च्यार मंगलीक उत्म सर्णा लिणा । श्री बीर गयाछे भाषजी॥ तीन प्रकारे बोले स्वामी । ज्यांरि आवसग सुत्र में साषजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५ ॥ घणा विघन भागे इण स्मरण स्युं । टल ज्यावे दुख होवे हगामजी ॥ कही कथा सुत्रकि मांहि लेउं थोड़ा सा नाम जी ॥ श्री पुज्य ॥ ६ ॥ लायमें बलतां सतगुर समस्या । नहीं वल्यो कूंज कांवार जी ॥ सोष्य होस्युं श्री नेम जिण दरो । तिणने देवता काढ्यो बाहार जी ॥श्रीपुज्य॥७॥ सेठ सुदर्शनमें संकट पडीयो । जब समरलीया जगनाथ जी ॥ बिघन टल्यो देखो अर्जनमालीरा । नहीं चल्या तिण पर हातजी ॥ श्रीपुज्य॥८॥ सिता सतीने अंजणा बे बनमें । उपसर्ग उपनां करुरजी ॥ संकट पड्यां सति सत गुर समस्या । तिणरो देव बिघन कियो दुरजी ॥

श्री पुज्य ॥९॥ सेठ सुदर्शणने स्मरण करतां । अभिया दिनो आलजी ॥ सूली फाट सिंघासण रचीयो । इसड़ो स्मरण सील रसालजी ॥ श्री पुज्य ॥ १० ॥ सती सुभद्रा ने निज सासु । दियो अण हुंतो आल जी ॥ तेलो करीने सती सत गुरु समर्या । देवी आइ ततकाल जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ११ ॥ राजुल रूपदेखी रहनेमी चलीया । ध्यान चुकाने दियो धिक्कार जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाक्षो धरीयो । पहुंता मुगत मभार जी ॥ श्रीपुज्य ॥१२॥ अरणकने कामदेव दोयाने । देवता दुख दिधा अपारजी ॥ तोपिण सतगुर स्मरण सैंठा । देव गया तिण स्युं हारजी ॥ श्री पुज्य ॥ १३ ॥ नन्दण मणीहारो डेडको हुंतो । तिणने चीथ्यो श्रेणिक रे घोड़ाणजी ॥ संथारो करीने सतगुर समर्या । उपनो दुधर विमाणजी ॥ श्री पुज्य ॥ १४ ॥ दल मेल्या तिहां सात नर्कांना । परसन चंद्राजान जी ॥ ध्यान स्मरण मन पाक्षो धरीयो । पाम्यां केवल ज्ञान जी ॥ श्री पुज्य ॥ १५ ॥ तीर्थंकर चक्रवरत इन्द्रादिक । ओहि स्मरण साधजी ॥ मुक्ति पधार्या तेहिज भाख्यो । ओही मन्त्र आराध जी ॥ श्रीपुज्य ॥ १६ ॥ मध्यम नर कोइ स्मरण साजे, ज्यांरे बध ज्यावे आव जी ॥ मध्यम जायगां प्यारी लागे । जांण क्यारी खी

ली गुलाबजी ॥ श्री पुज्य ॥ १७ ॥ उत्तम मध्यम रो नहीं कोइ कारण । कूल उंच निच ने मध्य जी ॥ स्मरण साधे तिणरे घटमें । जाणे चांदणो कर दीयो चंद जी ॥ श्री पुज्य ॥ १८ ॥ जिमकोइ जलने पय धोटावे । तिम २ चोखो होवे दुध जी ॥ कर्म घातक भडे हूण स्मरण स्युं । निर्मल चोखोज्यांरी वुधजी ॥ श्रीपुज्य ॥ १९ ॥ कपड़ेको मैल काटे साबुन स्युं । रत काम लरो आगजी ॥ कर्मां रो मैल छुटे स्मरण स्युं । मिट ज्यावे भव भव दाग जी ॥ श्री पुज्य ॥ २० ॥ सुल भ बोधी स्मरण साधे । अठे ही पामे ग्यान जी ॥ अठे नहीं पामे तो परभवमें पामे । इसडो स्मरण ध्यान-जी ॥ श्री ॥ पुज्य ॥ २१ ॥ स्मरण करतां जाणे सुख में । मीश्री पीधी गालजी ॥ सरीर वेदनां ध्यान स्मरणास्युं । जाणे वेठा सुखपालजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २२ ॥ पुज्य सरीषो भरत षेतमें । बीजी नहीं कोइ चीज जी ॥ स्मरण ब्रतामें समकित आपे । हलु कर्मी रह्या रीझजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २३ ॥ साध भिषण जीरो स्मरण करतां । पहुंचे भवजल पारजी ॥ जे नर नारीरा भाग्य वड़ाछे । वंदे सुरत दिदारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २४ ॥ परजानें प्यारा वासुदेव केशव । वीरवाला तीर्थं च्यारजी ॥ पतिव्रता विकसे पतिदेख्यां । ज्युं

समदृष्टी गुरु दिदारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २५ ॥ अलवरो जीव फूल डम्बरमें । सारंग ने सारंग करे कुकजी ॥ ज्यु समदृष्टीने गुरु दर्शणकी । सदा लागी रहे भुष जी ॥ श्रीपुज्य ॥ २६ ॥ अमृतफल सुवटाने मीठा । मोती मीठा मुरालजी ॥ समदृष्टी सतगुरु स्मरणस्युं । किधांहिं हर्ष अपारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २७ ॥ अमृत भोजन किधां ढपत । पछे कीसो कुकसरी लगन जी ॥ समदृष्टी सतगुर स्मरण स्युं । मुनिज्युं रहे मगनजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २८ ॥ मनवांछितफल हुण स्मरणस्युं । समरो भिषमजी साधजी ॥ हालत चालत उठत बैठत । चितमें रहो आराधजी ॥ श्रीपुज्य ॥ २९ ॥ बेल किया कोइ निरफल थावे । निरफल थावे कोइ बीजजी ॥ सतगुर स्मरण निरफल नाहीं । ज्युं सीता सतीरो धीजजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३० ॥ मध्यम बेल्यां मंत्र जपतां । तिणस्युंइ सुधरे काजजी ॥ साधु उत्तमको स्मरण कस्यांस्यु । निश्चेइ शिवपुर राजजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३१ ॥ काल दुखम मे बहोल कर्मी । आय लीयो अवतारजी ॥ सतगुर स्मरणस्यु केवल पामे । अटके दोय प्रकारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३२ ॥ काल सुखम मे हलु कर्मी । आय लीयो अवतारजी ॥ सत-गुर स्मरणस्युं केवल पामे । इसा भिक्षू अणगारजी

श्रीपुज्य ॥ ३३ ॥ अध्येन आठमें गीनाता सुत्रमें । गुरु गुणगावे दिन रातजी ॥ गोत तीर्थंकर तेहिज बांधे । केवल पिण उपजें साख्यातजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३४ ॥ उंच पदवी देव मानव गतमे । आद तीर्थं कार देवजी ॥ सर्व सुख पामे इण स्मरणस्युं । सारो भिषण जीरी सेवजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३५ ॥ इण स्मरण स्युं कटे भव भवरा । कर्म कटकदल फोजजी ॥ देखो सांवलिय मुनीराजरी सुरत । पुरोमनरी मोज जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३६ ॥ पाषंड प्रेलण हाराने विड-दांरा भारा । वर्ण सांवल इध दिदारजी ॥ लाली लोचन चाल हस्तोनी । पुज्य ओलखो इण उणीहार जी ॥ श्री ॥ ३७ ॥ पंच माहाव्रत पाले दोषण टाले । सूर वीरने धीरजी ॥ मुल गुण आचारज पूरा । आगे हुवाज्यु माहावीरजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३८ ॥ वीर स्मरणमें पुज्य स्मरणमें । फेर नही तील मातजी ॥ वीररी गादी श्रीपुज्य बिराज्या । सगली चोथे आरे-रीज्यु बातजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ३९ ॥ तिर्थ प्रवर्ताव्या ज्ञानरा गाढा । हीरारतांरी षाणजी ॥ भरत षेत्रमें सोज्या नही लाधे भिषु सरीषा बुधवानजी ॥ पुज्य ॥ ४० ॥ हुवाने वले होसी घणेरा । हिवडांतो दिसे नाहजी ॥ गुण घणां पिण एक जिमस्युं । कया कठा

लग जाय जी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४१ ॥ तीर्थ प्रतीपालाने ज्ञान रसाला । भविकां भंजन भीरजी ॥ अमृतबाणी जगमें बखाणी । मीठी मीश्री खीरजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४२ ॥ खीर खाड़ चक्र बरत नीदासी । रत्न करे चकचुरजी ॥ खीरज्यु स्मरण सम दृष्टीने । बल ज्यु चढे पोरस पूरजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४३ ॥ गाल दियो गर्व श्रीदेवीनो । बलदेख्यो तिण बारजी ॥ पोरस सम समदृष्टी धर्म दियो । अनुमतिनो गर्व गालजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४४ ॥ खीर खाड़ एक ब्राह्मण बांगे । बधियो बिषय बिकारजो ॥ खीरज्यु कूजन ब्राह्मणरी साथी । कूताज्यु कूडत गिवारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४५ ॥ सुवो मैनां पढ़ावि मानव गतमें । बाणी बोले बिबिध प्रकारजी ॥ साप्यात मैनाने कहे स्मरण कीजे । समजे नही मुड़ गिवारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४६ ॥ रात दिवस त्यांरो ध्यान लग रह्यो । अनुमतरो भंजन बिसेषजी ॥ निरफल जाणे कोइ सत्य स्मरणने । गाढी राखे टेकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४७ ॥ द्रढ़पणो राखो भवि जीवां । राखो स्मरण टेकजी ॥ रखे स्मरणसुं ढीला पड़ ज्यावोतो । अनुमति करसीथांरी ठेकजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ४८ ॥ भगवंत भजां अरिहंत सिध प्रभु । आचार्य उवझाय मुनीरायजी ॥ पांच पदारो स्मरण

साभा। थाने तो पिण खबर न कायजी॥श्रीपुज्य॥४९॥ च्यार पहारो चौबुर्जगढ। सतगुर पोल दुवारजी॥ पोल पायां विन गढ किम पामे। ज्युं इम गुरांको इधकारजी॥ श्रीपुज्य॥ ५०॥ गुरु स्तुती सुणो भवि जीवां। धारो स्मरण सील रसालजी॥ तिस्या अनंता इण स्मरणस्युं। दाख्या दिन दयालजी॥ श्रीपुज्य॥ ५१॥ एहवो महिमा गुर स्मरणरी। देवांरी जाणो बिसेषजी। जैनमें भजन नही इम मत कही ज्यो। छोड़दो कूडी टेकजी॥ श्रीपुज्य॥ ५२॥ अनु-मतांरो जैन धर्मरो। नही भजन प्रमाणजी॥ बानगी दीखाली एक जैन धर्मरी। अहो भजन पिछाणजी॥ श्रीपुज्य॥ ५३॥ रहो रहो पाषंडी इण जैन धर्ममे। मुगते पहुंता अनन्त अनेकजी॥ गुरुदेवांरे स्मरण बिना। मुगतन पहुंता एकजी॥ श्रीपुज्य॥ ५४॥ मृगतृषणा ज्युं स्मरण थारो। कण बिना थोथो बावे नाजजी॥ गुण बिना नांवस्युं मुगतने पामे। ज्यांरा कदेइन सुधरे काजजी॥ श्रीपुज्य॥ ५५॥ घुघुने दिवस नही सूजे। पांव रोगीने मीठो लागे खाजजी॥ निम पान नही कड़वो जहर चख्याने। गुण बिना भजन कर्म बस गाजजी॥ श्रीपुज्य॥ ५६॥ भगत भिषन जीरो श्रावक सोभो।

किधी च्यार तिरथ मन वारजी ॥ माला मोत्यांज्यु सतगुर स्मरण । हीराज्यु हिरदे धारजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५७ ॥ कुगत मिटावो सुगतजावो समरो भिषनजीसाधजी ॥ श्रावक सोभो किरत भाषि श्रीजीदुवार सुगामजी ॥ श्रीपुज्य ॥ ५८ ॥

इति संपुर्णम् ।
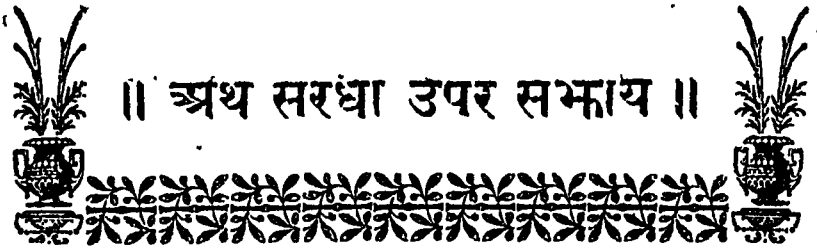
॥ अथ सरधा उपर सझाय ॥

देसी आरसी की ।

देव गुरु धर्म सुध आराध्यां । समकित होवे तंत सारसी ॥ यथा तंत दिल मांहि दरसावे । जिम मुख दिसे आरसी ॥ सरधा बिन प्राणी अेलो जनम युंही हारसी ॥ सरधा ॥ १ ॥ बरस छवमासी तप बहु । किधा जगन पद नवकारसी ॥ सुर सुख भोग रुल्यो चिहुं गतमें । नहीं आयो धर्म बिचारसी ॥ सरधा ॥ २ ॥ संका कंषा दुरगति लेज्यावे ।

ते नरदुर निवारसी ॥ साची सरधा जे नर धारे। ते नर आतम तारसी ॥ सरधा ॥ ४ ॥ कुगुरु संगत नर भव हारी। दुरगत मांय पधारसी ॥ भव भव मांहि रुले चिहुं गतमें। नहीं हुवे छुट कारसी ॥ सरधा ॥ ५ ॥ पढ़ पढ़ पोथा रह गया थोथा। संस्कृतने फारसी। विना विचारी खोटी भाषा वोले। ते किम पार उतारसी ॥ सरधा ॥ ६ ॥ सुध साधाने आल देईने। डूब गया काली धारसी ॥ कोइ सुध साधारी किरत वोले। ते नर जन्म सुधारसी ॥ सरधा ॥ ७ ॥ सुध साधांरी निन्दा कर कर आतम कीम उवारसी ॥ नरकां जावे माहा दुख पावे। परमा धांमी मारसी ॥ सरधा ॥ ८ ॥ इम सांभल उतम नरनारी। सीख सतगुर की धारसी ॥ सुध साधांरी कर कर सेवा। आतम कारज सारसी ॥ सरधा ॥९॥ सुध साधांरी सुधी सरधा लसला नन्दण सारसी ॥ सुधी सरधास्युं शिवगत जायां। आवा गमण निवा-रसी ॥ सरधा ॥ १० ॥ सुध श्रावकरा व्रतज पालो। दुरगत दुख विडारसी ॥ जन्म मरण जोख मिट जावे। पावे सुख अपारसी ॥ सरधा ॥ ११ ॥ मत्सर भाव साधांसुं राखे। वेगोइ पुन्य परवारसी ॥ इण भवमांहि निजरा देखो। वीटला हुवे बिकारसी ॥

सरधा ॥ १२ ॥ गुण विना सेवा करे साधांरी । नहीं सरे गरज लिगारसी ॥ कोइ हीण आचारी आपही डूबे । तिहां तुजकिम निस्तारसी ॥ सरधा ॥ १३ ॥ सुर सुख सेवे जी नर पावे । तप कर देही गारसी ॥ पंच आश्रव परहरो प्राणी । ममता मनरी मारसी ॥ सरधा ॥ १४ ॥ तथ्या तरे ने तरसी वाला । नहीं करे पाप लिगारसी ॥ उतम बयण धर सिर उपर । ते उतरे भव पारसी ॥ सरधा ॥ १५ ॥ उगणीसे बीस विद चवदस । मास कातीक सुख कारसी ॥ शहर राजगढ़ दिपमालका जोड़ करी तंत सारसी ॥ सरधा ॥ १६ ॥

॥ अथ अनाथी मुनीको स्तवन ॥

राय श्रेणिक वाड़ी गयो । दीठो मुनि एकंत ॥ रूप देखी अचरज थयो । राय पुछेरे कुण बीरसंत ॥ श्रेणिक रायहुं रे अनाथी निग्रंथ । मेंतो लिधोरे

साधुजी रा मंथ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हुंती । पितामुज पर वल धन ॥ पुत्र परवार भर पूरस्युँ तिणरो हुं कुंवर रतन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना उपनी । मो स्युं खमियन जाय । मात पिता भूरया घणा । न सक्यारे मुज वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे । खरच्या वहोला दाम ॥ तोपिण वेदना गई नही । एहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे । धरती दुःख अथाय । उपावतो किया घणा । पिणम्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ५ ॥ वन्धु पिण म्हारेहुंता । एक उदरना भाय ॥ उषध तो वहु विध किया । पिण क्षारीन लागी काय ॥ श्रेणिक ॥ ६ ॥ वहिनां पिण म्हारे हुंती । वड़ी छोटी ताय । वहुविध लुण उवारती पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरडी मन मोरडी । गोरडी अवला वाल । देख वेदना म्हायरी न सकीरे मुज वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंखां वहु आंसु घडे । सिंच रही मुजकाय ॥ खाण पाण विभुषा तजी । पिण म्हांरेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥९॥ प्रेम विलुधी पदमणी । मुजस्युँ अलगी न थाय ॥ वहुविध वेदना मे सही । वनिता रहीरे विल लाय

॥ श्रेणिका ॥ १० ॥ वहु राजवैद बुलाविया । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिणम्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ११ ॥ जुगमे कोइ किणरो नहीं । तब मे थयोरे अनाथ ॥ वितरागजीरे धर्म बिना । नाहीं कोइरे मुगतीरो साथ ॥ श्रेणिक ॥ १२ ॥ वेदना जावे म्हायरी । तोलेउं संजम भार ॥ इस चिन्तवतां वेदना गइ प्रभातेरे थयो अणगार ॥ श्रेणिक ॥ १३ ॥ गुण सुण राजा चिन्तवे । धन २ एह अणगार ॥ राय श्रेणिक समकित लीवी वान्दी आयोरे नगर मझार ॥ श्रेणिक ॥ १४ ॥ अनाथी जीरा गुणगांवता ॥ कटे कर्मांरी कोड गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्याने वन्दुरे वेकरजोड़ ॥ श्रेणिक ॥ १५ ॥
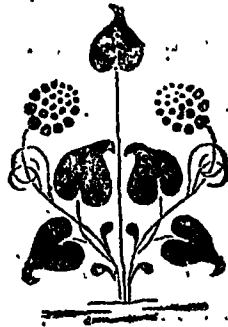
अथ जिन कल्पी साधुकी ढाल लीख्यते

जिन काल्पी काष्ट उदेरिने लेवे। परिसाहा सहै समपरिणामोंरे॥ आक्रोस विविध प्रकारना उपजे। तोइ उदेरिन जावे तिण ठामोंरे॥ सूरां वीरांरो ओसुध मारग॥ १॥ मास मास खमण कोइ करे निरन्तर। इतरा कर्म कटै एक छिन मेंरे॥ वचन कुवचन सहै सम भावे। राग द्वेषन आणे मुनि मन मेंरे॥ सू०॥ २॥ मास सवा नव जीव रह्यो गर्भमें। तोए दुःख कितरा दिन कारे॥ एम विचार सहै समभावे। सूर मुनि द्रढमनकारे॥ सू०॥ ३॥ लाभ अलाभ सहै समभावे। वले जीतव मरण समानोरे॥ निन्दा अस्तुति सुख दुःख समचित। समगीणे मान अपमानोरे॥ सू०॥ ४॥ बाइस तेतिस सागर तांइ। जीव बसियो नर्क मझारोरे॥ तो किंचित दुःखसुं सुंदलगीरी। एम बिमासे अणगारोरे॥ सू०॥ ॥ ५॥ मेघ सरिषा मोटा मुनिश्वर। कियो पादुप गमण संथारोरे॥ खोलीमें जीव छतां तन त्याग्यो। एकमास पहली गुण धारोरे॥

सू० ॥ ६ ॥ सालिभद्रने धनें सरीषा। ज्यारो सुख माल तन श्रीकारोरे ॥ त्यांपिण मास मास खमण तप किधा। वले पादुप गमण संथारोरे ॥ सू० ॥७॥ रोग रहित तिर्थंकर नो तन। तेपिण लेवे कष्ट उदिरोरे ॥ तो सहजांहीं रोगादिक उपना आइ। तो समा परिणामां सहै सूर बीरोरे ॥ सू० ॥ ८ ॥ इत्यादिक मुनि म्हामों देखी। ते कष्ट पड्यां नहीं काचारे ॥ अल्पकालमें शिव सुख पामें। सूर सिरोमणी साचारे ॥ सू० ॥ ६ ॥ नरकादिक दुःख तिव्र बेदना। जीव सहि अनन्ती बारोरे ॥ तो किंचित बेदना उपना माहामुनि। सहै आणी मन हर्ष अपारोरे ॥ सू० ॥१०॥ ए बेदनाथी हुवे कर्म निर्जरा। ए बेदन थी कटे कर्मोरे ॥ पुन्यरा थाट बंधे सुभ जोगे। वले हुवे निर्जरा धर्मोरे ॥ सू० ॥ ११ ॥ समचित बेदन सुखरो कारण। ए बेदनथी कटे कर्मोरे ॥ सुर शिवना सुख लहै अनोपम। वले हुवे निर्जरा धर्मोरे ॥ सू० ॥ १२ ॥ सम भावे सह्या होवे निर्जरा एकंत। असम भावे सह्या होवे पाप एकंतोरे ॥ ठाणा अंग चोथे ठाणे श्रीजिन भाष्यो। इम जाणी समचित सहै संतोरे ॥ सू० ॥ १३ ॥

इति संपूर्णम्।
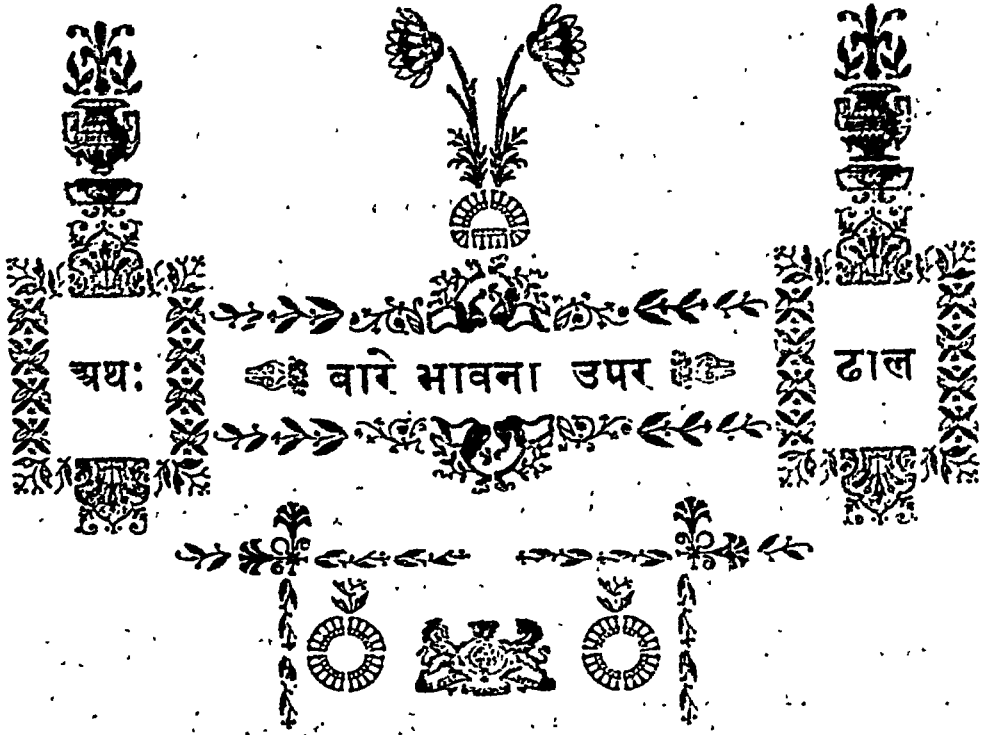
(नमिनाथ अनाथांरो नाथोरे एदेशी)

आदिनाथ अरिहन्त आख्यातोरे । बडो पुतर भरत विख्यातोरे ॥ अनित्य भावना भाइ साख्यातो । माहामुनि मोटका नित्य वन्दोरे ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर पोल प्रकारोरे । नर इंद्र सुरेन्द्र सारोरे ॥ नित्य नहीं सहु नर नारो ॥ माहा ॥ २ ॥ असर्ण भावना ऋषी अनाथीरे । एक जिन धर्म जीवरो साथीरे ॥ संजम पाली मुगत संघाती ॥ माहा ॥३॥ संसार भावना सालिभद्र भाइरे । अधिक वैराग मन आइरे ॥ संजम लेइ स्वार्थ सिध पाइ ॥ माहा

॥ ४ ॥ नमिराय ऋषेश्वर जाणीरे । एकत्व भावना उर आणीरे ॥ मुनि जाय पहुंता निरवाणी ॥ माहा ॥ ५ ॥ पंखीनो पर भावना भल भाइरे । कुंवर मृघापुत्र उर आइरे ॥ संजम लियो परवार समझाइ ॥ माहा ॥ ६ ॥ चोथा चक्री सनत कुमारोरे । असुच भावना भाइ अपारोरे ॥ राज छाड़ि संजम ब्रत धारो ॥ माहा ॥ ७ ॥ समुद्र पाल एलाची दोइ रे ॥ आश्रव भावना जोइरे ॥ दोनूं मुगत गया कर्म खोइ ॥ माहा ॥ ८ ॥ बागणी केशी हर केशीरे ॥ सम्बर भावना उर बैसीरे ॥ हर केशी मुगत बरेसी ॥ माहा ॥ ९ ॥ निर्मल निर्जरा भावना भाइरे । छव मासि कर्म खपाइ रे ॥ अरजन माली अनन्त सुख पाइ ॥ माहा ॥ १० ॥ लोक सार भावना लीव लागीरे । शिवराज ऋषेश्वर जागीरे ॥ प्रभुपे संजम लेइ बैरागी ॥ माहा ॥ ११ ॥ अठाणवे पुतर आयारे । आदेश्वरजी समझायारे ॥ बोध दुलभ भावना भाया ॥ माहा ॥१२॥ धर्मरुची ऋषिरायोरे । धर्म भावना ते भायोरे ॥ दया पाली स्वार्थ सिध पायो ॥ माहा ॥ १३ ॥ एबारे भावना जे भावेरे । ते नर माहा सुख पावेरे ॥ बेगो मुगत नगरमें जावे ॥ माहा ॥ १४ ॥ समत ्र्वेणवे बरस अठारोरे ।

कातीवद नवमी भोमवारोरे । जोड किधी मालवा गांव मझारो ॥ माहा ॥ १५ ॥

अथ सीलकी नव वाडकी ढाल ।

श्रीसतगुरु पाय नमी करी । श्रीजिन वरनी वाणीरे ॥ उतराध्येन सोलमे अध्येन । ब्रह्मचार्यांरी वाड वखाणीरे ॥ ब्रह्मचारि नव वाड विचारो ॥१॥ स्त्री पशु पंडक तिहां थानक । ब्रह्मचारी तिहां टालेरे । मुसा मंझारी ने दृष्टंते । प्रथम वाड इम पालेरे ॥ ब्र० ॥ २ ॥ स्त्री कथा करे नहीं मुनिवर । सुर नरनो मन डोलेरे ॥ निर चलि निंबुरी वात सुणंता । दुजी वाड इम वोलेरे ॥ ब्र० ॥ ३ ॥ पीठ फलग सेझ्यां नहीं वैठे । नारी वैठे तिण ठामो रे ॥ वाक टूटंता उसणता आटो । वडकाचर फल नामोरे ॥ ब्र० ॥ ४ ॥ नेह धरी नारी रूप निरखे । फरसे अंग उपंगोरे ॥ निजर झास्यो

सुरजथी देख्यां । चोथी बाड ब्रत भंगोरे ॥ ब्र० ॥५॥ न रहै सीलवन्त भितर अन्तर । न सुणे जांभारनो भमकोरे ॥ हांस बिलास रुदन सेवत । दृष्टन्त गाजे मोर ठमकोरे ॥ ब्र० ॥ ६ ॥ पुर्वला काम भोग मति चितारो । तिणस्युं आरत उपजे अधिकोरे ॥ अग्न बधे इंधणारी संगत । छाछ बटाउ दृष्टन्तोरे ॥ब्र०॥ ७ ॥ सरस आहार बिगै बली इधको । भोगव्यां बिष थाय बध तोरे ॥ सनिपात बधे दुध मिश्री पीधां । तिणस्युं बिगै लीजे तुं सदतोरे ॥ ब्र० ॥८॥ अति मात्र इधको जीमे । काम भोग बिषय रस जागे रे । सेररा ठांवमें दोय सेर उरे । तो आठमी बाड इम भागेरे ॥ ब्र० ॥ ९ ॥ चावा चंदन चरचे अंगा । आभुषण अति चंगोरे ॥ छगन मगन हुवे बेस बणावे । नवमी बाड ब्रत भंगोरे ॥ ब्र० ॥१०॥ रतन अमोलक इधक अनोपम । जिण तिणने देखा-वेरे ॥ रांकारे हातस्युं खोसी लेवे । ज्यु सील रतन नगमावेरे ॥ ब्र० ॥११॥ सील पालिते सुखीया होसी । अखी होसी नर नारीरे । सुत्र बचन जो सरधे संवला । तो मुगत जासी ब्रत धारीरे ॥ ब्र० ॥ १२ ॥ इति ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिषणजी स्वामींके गुणाकी ढाल ।

स्वाम भिक्षु प्रगटे। जगमांहि किरत थइरे ॥ श्रीजिन आणा सिर धरी। बर न्याय वाता कहिरे कहिरे स्वाम साचा अद्भुत बाचा कहिरे ॥ १ ॥ आगुंच उता ध्येनमें। हुण आर पंचम मंहिरे। जिन बिना शिवपंथ होसीं। संत तंत सहिरे॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ समत अठारा तेपना पछे। सुत्र संग वृध थइरे। बंक चुलिया मांहि वारता। तुं जोय प्रतच्छ सहिरे ॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ स्वाम पारश सारिषा। चिन्तामणी कर लहिरे ॥ भवदधि पोत उद्योत करवा। स्वाम सूरज सहिरे ॥ सहिरे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ स्वाम भिक्षू समरिया। उगणीस चवदे मंहिरें। बिदासर चौमासमें जय जश किरत थइरे ॥ थइरें ॥ स्वा० ॥ ५ ॥

जयाचार्य कृत

श्रीभिषणजी स्वामीके गुणाकी ढाल ॥

नन्दण वन भिक्षू गणमें बसोरी। हेजो प्राण जावे तोड़ पग म खीसोरी ॥ नन्दण ॥१॥ गण मांहि ग्यान ध्यान सोभेरी। हेजो दिपक मंदिर मांहि जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ भवनितकी देसना नदि-पेरी। हेजो गणिका तणे सिणगार जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ३ ॥ टालो काडरो भणवो न सोभेरी। हेजो नाक बिना मोती मुखडो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥ दुःखदाइ खुद्र जोवा सरीकोरी। हेजो नंदक टालो काड वमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ सांसण में रंग रत्ता रहोरी। हेजो सुर शिव पद मांहि वास बसो-री ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागबले भिषु गण पायोरी। हेजो रतन चिन्तामण पिण न दूसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥ गणपत कोप्यां गाढा रहोरी। हेजो समचित सांसण माहि हुलसोरी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ आड डोड चितमें म आणोरी। हेजो मोह कर्मरो तजदो न सीरी ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खेल खीलाद्यांरा याद करो री। हेजो अचल रहो पिण मतिरे सुसीरी ॥ नन्दण

॥ १० ॥ वार वार सुं कहिय तुनेरी । हेजी अडिग पणे थेतो गणमें वसीरी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणीसे गुण तीस फागुणरी । हेजी जय जश आणामें सुख बिलसीरी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

श्रावक सोभजी कृत

श्रीभिक्षूगणीके गुणाकी ढाल ।

मोटो फंद इण जीवररे । कनक कामणी दोय॥ उलझ रह्यो निकल सकुँ नहिंरे । दर्शणरो पड्योरे बिछोय ॥ स्वामीजीरा दरशण किण बिध होय ॥१॥ कुटम्बी ऋधस्युं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥ मंगलीक दर्शण श्रीपुजनारे । मुगत पहुंचावे सोय ॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसाररो सुख दुःख भोगव्यांरे । कर्म तणो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण वन जिसोरे । कर्म चिन्ता देवे खोय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया बोध बीजनेरे । हिरदे में दीज्यो पोय । परदेशां गुण बिस्तरेरे । ज्युं सोने में रतन जडोय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चोरी जारी आद ओगण तजोरे । इण भव परभव दोय ॥ खरची पुरब भव तणीरे । श्रीपुज

बिना कुण पुगोय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साचे मोतीज्युं वायक श्रीपुज्यनारे । हिरदे में लीज्यो पोय । ग्यान सागर आयां बिनारे । जीव मैल किम धोय ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ सोम दर्शण श्रीपुज्य नारे । हिरदेमें लीज्यो पोय ॥ सागर ज्युं गुण पुजनारे । गागर ज्युं कीम टालोय ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ गुण बिना दर-शण भेषनारे । कर २ डूबे सोय ॥ पुज बिना दर्शण किंरा करुंरे । आप समो नहीं कोय ॥ स्वा० ॥८॥ पाषण्ड जाडो हुण भरतमें रे । भिचनजी दियो रे बिगोय ॥ भिनो चिरज्युं जुवान मरोडनेरे । ज्युं चरचा मे लियारे निचोय ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ धुंवों भ्रमर घासनों रे । कस्तुरी संग लिपटोय ॥ ज्युंचित दरशण मांहिरो । आप हुसो लियोजी मनमोय ॥ स्वा० ॥ १० ॥ मीन कादे में तड फडेरे । कद मिलसी मुझ तोय ॥ ज्युं तड़ फड़े तुज आविकारे । कमल जेम कमलोय ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ कृषणीरो मनमेहथीरे । बादल बरसी सोय । पपइया मोर पुकारता । ज्युंम्हे बाट रह्यां सब जोय ॥ स्वा० ॥ दर्शण श्रीजी दुवार मेरे । सेवक दिपक जोय ॥ भाण भलो जद उगसी । सोभो चरणा स्युं कमल लगोय ॥ स्वा० ॥ १२ ।

॥ जयाचार्य कृत ॥

अथ मरियादा उपरढाल ।

मुणिन्द मोरा । भिषुने भारिमाल । वीर गोयम री जोडीरे । स्वामी मोरा ॥ अति भलीरे । मोरा स्वाम ॥ १ ॥ मुणिन्द मोरा । आप मांहि तथा गणमें जाण । सुध संजम जाणो तोरे ॥ स्वा० ॥ रहिवो सहीरे ॥ मोरा० ॥ २ ॥ मुणिन्द मोरा । ठाणास्युं रहिवारा पचखाण । वली अनन्त सिधारी साखेरे ॥ स्वा० ॥ समसहिरे ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ मुणिन्द मोरा । अवगण बोलणरा त्याग । गणमें अथवा बाहिररें ॥ स्वा० । विहुंतणेरे मोरा० ॥४॥ मुणिन्द मोरा । मुनिवर जे माहा भाग्य । एह मरियाद आराधेरे ॥ स्वा० । हित घणोरे मोरा० ॥ ५ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ तीजे पट ऋषराय । खेतशीजी सुख कारीरे ॥ स्वा० । मुनि पितारे ॥ मोरा० ॥ ६ ॥ मुणिन्द मोरा ॥ समदम उदधि सुहाय । हेम हजारी भारीरे ॥ स्वा० । गुणरत्तारे मोरा० ॥ ७ ॥ मुणिन्द मोरा । जय जशकरण जिहाज । दिपगणी दिपकसारे ॥ स्वा० माहामुनि रे ॥ मोरा० ॥

६ ॥ मुणिंद मोरा । गणपतिमें सिरताज । विदेह षैत्र प्रगटिबारे ॥ स्वा० ॥ माहाधुमीरे ॥ मोरा० ॥ ७॥ मुणिंद मोरा । अमियचंद अणगार । माहातपस्वि वैरागोरे ॥ स्वा० । गुणनिलोरे ॥ मोरा० ॥ ८ ॥ मुणिंद मोरा । जीत सहोदर सार । भीम जबर जयकारीरे ॥ स्वा० । अतिभलोरे ॥ मोरा ॥ ११ ॥ मुणिंद मोरा । कोदर तपस्वी करूर । रामसुख ऋषि रुडोरे ॥ स्वा० । राजतोरे ॥ मोरा० ॥ १२ ॥ मुणिंद मोरा । शिवदायक शिवसुर सतीदास सुखकारीरे ॥ स्वा० । गाजतोरे ॥ मोरा० ॥ १३ ॥ मुणिंद मोरा । उभय पिथल बर्धमान । साम राम युग बंधवरे ॥ स्वा० । नेमस्सुरे ॥ मोरा० ॥ १४ ॥ मुणिंद मोरा । हीर बखत गुण खाण । थीर पाल फते सु जपीयरे ॥ स्वा० ॥ प्रेमसुंरे ॥ मोरा० ॥१५॥ मुणिंद मोरा । टोकरने हरनाथ । अखय राम सुख रामजरे ॥ स्वा० । दूखहरे ॥ मोरा० ॥ १६ ॥ मुणिंद मोरा । राम संभु शिव साथ । अवान मोती जाचारे ॥ स्वा० । दमीश्वररे ॥ मोरा ॥ १७ ॥ मुणिंद मोरा । इत्यादिक बहु संत । बली समणी सुखकारीरे ॥ स्वा० । दिपतीरे ॥ मोरा० ॥ १८ ॥ मुणिंद मोरा । कालु माहागुणवंत । तीन बन्धव नो

मातारे ॥ स्वा । जीपतीरे ॥ मोरा० ॥ १९ ॥ मुणिंद मोरा । गंगा नै सिणगार । जैतां छोलां जाणीरे ॥ स्वा० । माहा सतीरे ॥ मोरा० ॥ २० ॥ मुणिंदमोरा । जोतां माहा जश धार । चम्पा आदि सयाणीरे ॥स्वा०। दिपतीरे ॥ मोरा० ॥ २१ ॥ मुणिंद मोरा । सांसण माहा सुखकार । अमर सुरी अदष्टायकरे ॥ स्वा० । दायकारे ॥ मोरा० ॥ २२ ॥ मुणिन्द मोरा । दववन्ती जैयन्ती सार । अनुकुल बली इन्द्राणीरे ॥ स्वा० । सहायकारे ॥ मोरा० ॥ २३ ॥ मुणिन्द मोरा । उगणी से पनरे उदार । फागुण सुध तिथि दसमीरे ॥ स्वा० । गाइयोरे ॥ मोरा० ॥ २४ ॥ मुणिन्द मोरा जय जश सम्पति सार । बिदासर सुख सातारे ॥ स्वा० ॥ पाइयोरे ॥ मोरा० २५ ॥

॥ छोगजी कृत ॥

श्रीपुज्यगणीके गुणाकी ढाल ।

(देशी असवारीकी)

गादी बीर गणेश्वर गहरा । भिक्षु मघ इधकारी ॥ समय बुज दधि सार विलोकी । प्रगट कियो । मग सारीजी ॥ महाराजा थांरी सोभत गण बन क्यारी ॥

सांसण पत जिन इन्द्र तणीपर । लागत छिव भवि प्यारी ॥ १ ॥ धर्म नागेन्द्र सभीबर सखरी । आपथया असवारी ॥ आण सैन्यांकर भाल अनोपम । पाखंड मत दियो पारीजी ॥ माहा २ ॥ गण वृध करण बरण शिव बांधी । बर मरियाद उदारी ॥ एक गणपतनी आणांमें रहिवो । मुनि मघ लग इकतारीजी ॥ माहा राजा थारी मरियादा सुखकारी ॥ बर भिक्षूना बयण आराध्यां उभय भवे हितकारी ॥ ३ ॥ कर्म जोग गण बाहिर निकसे । एक बेलण जे अविचारी ॥ तेह भणी साधु नही गीणवो । वले नहीं तिर्थ मझा- री जी ॥ माहा ॥ ४ ॥ इम बहु लीखत लीखी दृघ मालं । थाप्या गण सिणगारी ॥ गुण जश परिमल महक रही बर । गणी सुधर्म जिमथांरीजी ॥ माहा ॥ ५ ॥ सितांसुसादृश सीतलता । सांत दांत सुखकारी ॥ जंबु स्वाम जिसा पट तीजे । राय ऋषि ब्रह्म चारी जी ॥ माहा ॥ ६ ॥ पाट चतुर्थं जबर गणीजय । इधक कियो उजियारी ॥ बर मरियाद स्युं ओट ओट बार । उपम करी बिपतारीजी ॥माहा॥७॥ मुनि अज्या पुस्तक गण वृधी । दिन २ इधक तुमारी ॥ आदेज बयेण अधिक फुन अतिसय । अरिहन्त ज्युं इण आरीजी ॥ माहा ॥ ८ ॥ जो जिनदेखन हुंसहुवे दिल

तो देखो नीं जय दिट्टारी जो मन खंत करण प्रभ्भरी । तोगणी श्रुत कीवल धारीजी ॥ माहा ॥ ९ ॥ वीर गोयमरी जोड निरखणारी । हुवे भवि मन मझारी ॥ तो जय गणपत मुनि मघवा वर । पेखल्यो नयैन निहारीजी ॥ माहा ॥ १० ॥ सहु मुनि मंडण करण आणन्दन । मुनि मघराज नितारी ॥ वर गुण वृन्दण सुखकी कन्दण । पद युगराज प्रकारीजी ॥ महाराजा थारा । सिष्य बडा सुखकारी ॥ मतिवन्ता युगराज सुणिन्दरी जोग मुद्रा छिव प्यारी ॥ ११ ॥ विनय विवेक बिचक्षण वारु । मुनि अज्याहितकारी ॥ सतिय गुलाव तणीवर मझिमां । सतियांमें सिणगारीजी ॥ महाराजा थारी । सिषणी माहा सुखकारी ॥ पद युग राज तणी वर वहनी । गण वत्सल गुणसारी ॥ १२ ॥ उगणीसें वर्ष तीस माहाग वर । सुक्ल सप्तमी सारी ॥ वर गणीराज मरियाद द्रिढावत । छोग हर्ष हुंसियारीजो महाराजाथारी । मरियादा सुखकारी ॥ वर भिक्षूना बयण आराध्यां । उभय भवे हितकारी ॥

॥ इति ॥

श्रीपुज्य गणीके गुणाकी ढाल ।

(धीठाम धीठमि क्या विगाड्या तेरा परदेशी)

माहावीर गादी धर सोहै । भिक्षू गणी गुण वृन्दा ॥ जी निमल भणी युग नाण भाणसा । प्रगव्या जेम जिणन्दा ॥ भिक्षूगणीराज धर्या तंत पंथ तेरा ॥ लेवा शिवराज निरणय किया भलेरा। जी विवध मरियादा बरवहु बांधी आगम न्याव नवेडा ॥ भिक्षू ॥ १ ॥ एक वेंवण जे आद टोलाथी । निकसे दुरमति बरणा ॥ जी वे मुख नन्दक टालोकर त्रिहुं तिरथमें नहीं गीणना ॥ ज्ञानी गुणवन्ता न करणा सप्रसंगा ॥ सुगुणा मतिवन्ता जाणे तास भुयंङ्गा ॥ २ ॥ कलुष भाव गणपतना गणथी । आणे निपट निरलजा ॥ जी कुरब कायदो संबही खोवे । बांधे अपयश ध्वजा ॥ पुद्गल सुख बरवा समकित चर्ण गमावे ॥ लागे फल कडवा जगमें फिट फिट थावे ॥ ३ ॥ गणपतने गण थी गुणवन्ता । अनुकुल लीन सुचंगा ॥ जीमुक्ती फल भल माल सरीषा लागे विनय प्रसंगा ॥ सांसण बन रमीयां मिटे जन्म मृत्यु फेरा ॥ गणी आणांमें बेयां देवे मुगत गढ डेरा ॥४॥ भिक्षू भारिमाल नृप इन्दु । चौथे जय माहाराजं ॥ जी आछी जिनमग ओप चढाइ माहावीर सम आजं ॥ गणाधिप गणपत तुम

चरणे चितमेरा ॥ दिजे शिव सम्पत सर्ण लियामें तेरा ॥ ५ ॥ शशि सम सोम प्रकृत सुखमालं । अति सय धर युगराजं । जी सतियां मांहि सति सीरोमण। गुलाब कुंवर सिरताजं ॥ मुनिराज सतियां धरी सिस जय सीको ॥ युगराज मुणिन्द मघराज तणी ग्रहो सीखो ॥ ६ ॥ उगणीसे गुण तीस माहाग सुद। बिदासर रंगरेला। जी मरियादा मोत्सव दिन निका चिहुं तिरथां ना मेला ॥ भिचू गणीराज धरया तंत पंथ तेरा ॥ ७ ॥

इति ॥

॥ मोतीजी स्वामी कृत ॥

श्रीपुज्य गणीराजके गुणाकी ढाल ।

पंचम आरे मझार ॥ हो सुखकारीरे सुगणा ॥ भिचू प्रगटे भविजन ॥ भवो दधि तारबारेलोय ॥ आगम वच अनुसार ॥ हो सुखकारी रेसुगणा ॥ मानु जिन जिम जाहिर । जगत उधारबारे लोय ॥ १ ॥ तुम बाणी हे जाणी अमिय समान ॥ हो० । सु० । सु० । गुण खाणी हित आणीरे । धारयां हिया मझेरे

लोय ॥ अजर अमर सुखदान ॥ हो० । सु० । सु० ।
मन वंछित कारज । सारे ते सहु सभोरे लोय ॥ २ ॥
रटतां जिहां तुम नाम ॥ हो० । सु० । सु० । कटता
पुद्गल प्यासारे । फटता कर्म रिपुरे लोय ॥ पटता
शिव सुख धाम ॥ हो० । सु० । सु० । छटता पुदगल
प्यासारे । घटता जे वपुरे लोय ॥ ३ ॥ साठे भिच्
कियोहै संथार ॥ हो० । सु० । सु० । सात पोहर
लग पालीरे । परभव पांगखारे लोय ॥ तसु पट गरु
मल सार ॥ हो० । सु० । सु० । जंबु स्वाम तणी पर ।
न्टपशशि संचखारे लोय ॥४॥ चतुर्थथये जय जयवन्त ॥
हो० । सु० । सु० । मघराजा युगराजारे । सरद शशि
जिसोरे लोय ॥ सतीय गुलाबांजी गुण तंत ॥ हो० ।
सु० सु० । भाद्रवे सुक्ल त्रयोदशी । मन आणन्द इसोरे
लोय ॥ ५ ॥
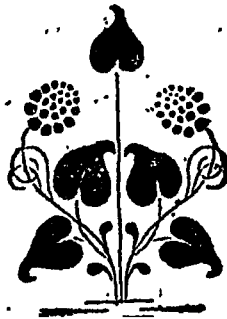
श्रीकालु गणीराजके गुणाकी ढाल

श्रीकालु गणिन्द समररे ॥ ए आंकडी ॥ पंचम आरके धराधुर जिनसम। प्रगटे भिच्छू मुनिवररे ॥ पुज्य तणी प्रतीत राखकर। मुगत पंथ पग धररे ॥ धररे२ धररे ॥ श्रीकालु ॥ १ ॥ भिच्छू सिधान्त मांहि फरमायो। ठाम ठाम जिनवररे ॥ तेहिज नाम आय अवतरिया। दिपां उर गणी वररे ॥ वररे २ वररे ॥ श्रीकालु ॥ २ ॥ तसु पाटोधर इघ मुनिश्वर। नृप शशि पट पुसकररे ॥ युग पट जीत जवर जोगेन्दा। सरपट मघ अघ हररे ॥ हररे २ हररे ॥ श्रीकालु ॥ ३ ॥ पटथट षट क्रिया अति माणिक। सप्तम डाल समररे ॥ जवर आचा-रज हुवा भरतमें। तसु आणा सिरधररे ॥ धररे२ धररे ॥ श्रीकालु ॥ ४ ॥ वसु पट स्वाम कालु गुण सागर। आगर जिम बुधि धररे ॥ शशि सम विमल गंभीर दधिसम। तसु नमण करजोडी कररे ॥ कररे२ कररे ॥ श्रीकालु ॥५॥ मानव नों भव दुलभ जेहनी। आसा करत अमररे ॥ पुन्य उदय सतगुरनी

संगत । आण मिल्यो अवसररे ॥ सररे २ सररे ॥ श्री कालु ॥ ६ ॥ करण दरश सफर्स चरण मुज । मन अभिलाषा कररे ॥ पिण अघ उदय नहोसकी प्रभु । होसीते दिवस जबररे ॥ जबररे २ जबररे ॥ श्रीकालु ॥ ७ ॥ शशि निध षट सप्त अरध कार्ती सम । लछमी दिन सुखकाररे ॥ हस्त मुख हर्ष सुंगावि । अलप बुधि अनुसररे ॥ सररे २ सररे ॥ श्रीकालु ॥ ८॥
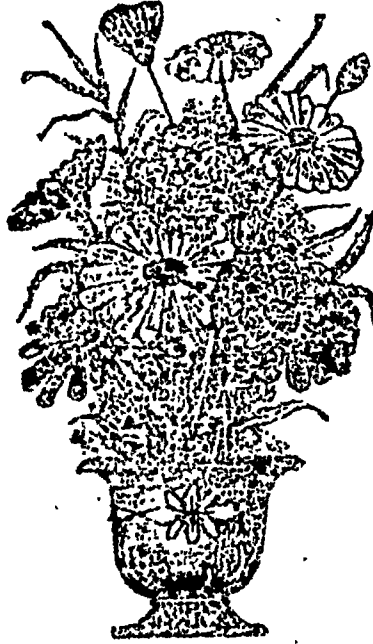
(अवतो सुरत दीखावोजी जोडीरा भरतार एदेशी)

स्वामी म्हारा दूणहिज पंचम आर। भविजन तारण भिच्चू प्रगटे भरत मझार॥ प्रगटे भर्थ मझार॥ सादृश जिनवर जिम अवतारहो॥ प्रगटे भर्थ मझार। सादृश जिनवर जिम अवतार॥ देखो तेरा पंथ तंत सार। हुं वलिहारी वारंवार॥ थिर मन कारके सेवो कालु गण सिणगार॥ १॥ स्वामी म्हारा तसु पट द्दष मुणिन्द। तृतीय पट नृप डून्डु सोहै। जिम उडूगणमें चंद॥ जि० २ ज्यांरो तपतो तेज दिनन्द हो। जि० २ गाजे हरिवर जेम गणिन्द। ज्यांरो नाम लियां निस्तार॥ थिर॥ २॥ स्वामी म्हारायुग जय

जश सुखकार । शर पट मघ अघ हरियांजी । क्षमा खड्ग कर धार ॥ क्ष० २ रस पट माणिक गण सिण गारहो । च० ज्यांरि महिमा अगम अपार । हुं नित बन्दु बार हजार ॥ थिर ॥३॥ स्वामी म्हारा पर्वत पट डालचंद । बसुपट पे थट छाजेजी । काल गणइन्द ॥ का० २ माता सती छोगांजीरा नंद हो । का० ज्यांने सेवे सुर नर बृन्द । ज्यांरो तेजस्वी दिनकार ॥थिर॥४॥ स्वामी म्हारा गुण षट तीस उदार । उपम षट दश सोहै जी । मन मोहै नरनार ॥ म० २ ज्यांरि अष्ट सम्पदा सार हो । म० ज्यांरि बाण सुधामृत धार । ज्यांरे गुणको छेह न पार॥थिर॥५॥स्वामी म्हारा सायर जेम गंभीर । रविवत तेज सवायोजी । मेरु नी पर थिर ॥ मेर अतिसय ओपत जिम माहावीर हो । मे० बाणीनिर्मल गंगनो नीर । किरती छाइ लोकमझार॥ थिर ॥ ६ ॥ स्वामी म्हारा गुण को अन्त न पार । अमर प्रतिज्यो सहंस्र जिह्वा कर । गायां नविलह पार॥गा०२तो म्हारी कुण चिकार हो॥गा० म्हारे आप तणो आधार । नित उठ ध्याउं सांझ सवार ॥ थिर ॥ ७ ॥ स्वामी म्हारा दाश अरज अवधार । चतुर मास फरमावोजी । चंदेरी शहर मझार ॥ चं० २ सण २ हर्षे बहु नरनार हो । चं० थांरि बाणी सुण

सुखकार। भविजन भवसें उतरे पार॥ थिर ॥ ८ ॥ स्वामी म्हारा शशि निध पट अरिधार। फाग मंजु चित चायो। तिथी प्रथम चंद्रवार॥ ति० २ काढू लाडणुं शहर मझार हो। ति० महालु हिरदय हर्ष अपार। गाइ अल्प बुधी अनुसार॥ थिर ॥ ६ ॥

श्रीकालुगणी के गुणाकी ढाल।

(सोहीरे सयाणा अवसर माजे एदेशी)

श्रीभिक्षु पट अष्टमें छाजे। कालु गणिन्दा सिंह जिमगाजे ॥ गुण पट लिसे सोभत स्वामी। अष्ट सम्पदा बहु विध पामी ॥ महेर करो मुज नगरी स्वामी। करो चौमासो अन्तर जामी ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ शशि सम सींतल वदन तुमारो। रवि. सम तेज प्रताप तिहारो ॥ पातिक दुर पुलायो स्वामी। तुम दरशण थी शिव सुख पामी ॥ महे ॥ २ ॥ क्षमा खड्ग लियो प्रभु निको। देखी पाषंडि पडगया फिको ॥ कल्प तरु सम नाथ हमारो। सेवा वंछित फल दातारो ॥ महे ॥ ३ ॥ प्रभुकि चरण कमल कुं भेटे। भव सागर रुलतां ने मेटे ॥ प्रभुकी सीख सदा सुखकारी। सेवा पातिक दुर निवारी ॥ महे ॥ ४ ॥

मही निध गुणतर वर्ष सु सारो । चैत कृस्न पञ्चमी गुरुवारो ॥ फूल फगर नेमी गुण गावे । रिझमें चतुर मासो चितचावे ॥ महेर करो मुज नगरी स्वामी करो चौमासो अन्तर जामी ॥ ५ ॥

॥ माहा सत्यांजी माहाराज श्री कान कंवरजी कृत ।

श्रीकालु गणिराज के गुणकी ढाल ।

पंचम अर्को प्रगम्यारे । पंचम अर्को प्रगम्या । कांइ भिखू भविजन कुतारो ॥ निमल अनोपम युगल नाण स्युं । मिथ्या तिम्र मिथ्यो सारो ॥ अजी मिथ्या तिम्र मिथ्यो सारो ॥ अजी श्रीजिन सीको सिरधारी ॥ स्वाम भिखूनी मरियाद अछी है । सुख पावे तिरथ च्यारो ॥ १ ॥ बसु पाटो धर दिप तारे । ब० । कांइ कालु गणी गुण जिहाज स्वामी ॥ इधक उजागर गुण निध सागर । अवतरिया अन्तरयामी ॥ अजी अव० । अजी नमण करूं मैं सिरनामी ॥ पर्बल पण्डिताइ देख गणिन्दकी । अहो २ भवि अचरज पामी ॥ २ ॥ समोसरण रचना भणीरे । स० । कांइ

संसकृतमें बाचंदा ॥ काव्य कोश टीका फरमावें। भवि जन सुणसुण हुल संदा ॥ अेजी भवि० । अेजी वहा वहा मुख कोगां नंन्दा ॥ सभा सुधर्मी सक्र तणी पर । वाक्य सुधा घन बर्षंदा ॥ ३ ॥ सांसण नन्दण बन जिसोरे । सां० । कांइ काम कुंभ जिम सुख दाइ ॥ चिन्तामणी सम चिन्ता चुरक । किर्त लता रहीछाइ ॥ अेजी किर्त० ॥ अेजी मुगती देइ सर्गे आइ ॥ दिनदयाल गरीब निवाजा । दया मया रखीय सारी ॥ ४ ॥ सतियां मांहि सोभतारे । स० । कांइ जेठाजी सती सुखकारी ॥ समत उगणीसे । बर्ष अडसठे गुणगाया मेधर प्यारी ॥ अेजी गुण० ॥ अेजी मरियादा मोहोत्सब भारी । दिन क्रांती बधो सवाइ तपज्यो गणि वर ध्वतारी ॥ ५ ॥

श्रीगुलाब कंवरजी माहासत्यांजी माहाराज के गुणाकी ढाल।

स्मरण सुखकारीरे । करो नरनारीरे ॥ सतीरे गुलाब ॥ गुण गुलक्यारीरे । फैल्यो जश भारीरे ।

सतीरे गुलाव ॥ ए आंकड़ी ॥ सतीतणो स्मरण करोरे ।
उगन्ते प्रभात ॥ स्मरण कयां संकट मिटे । ज्यांरा
विघन दुराटल ज्यायरे ॥ स्मरण ॥ १ ॥ मुख सतीको
इसो सोभतो । जाणे पुनम चंद ॥ जीवतड़ांरा नयैन
ठरे । कांइ उपजे घणो आणन्दरे ॥ स्मरण ॥ २ ॥
सती सिरोवण गुण निलारे । ज्ञान गुणाकी जिहाज ॥
वीरमुख आगल चंद्रमाला । पुज मुख आगल हुंता-
परे ॥ स्मरण ॥ ३ ॥ एकवेर स्मरण करे सती तणोरे ।
भव २ में गुण थाय ॥ उठ परभाते भजन करे ज्यांरा ।
पाप दुराटल ज्यायरे ॥ स्मरण ॥ ४ ॥ सतियांमे सारां
सीरेरे । सती सीरे गुलाब ॥ गुण देखी कुरवबधा-
रियो । ज्यारि किरत फेली चिहुं दिश मांयरे ॥
स्मरण ॥ ५ ॥ गण पतनी आज्ञा भणीरे । सतीपाले
साहा सीख ॥ भविजनने प्रतिबोधिया । सती कर
लियो सुगतनजिकरे ॥ स्मरण ॥ ६ ॥ समत उगणीसे
बयालीसमेंरे । माहा सुद बिज गुरुवार ॥ सती तणा
गुण गाविया । आमापुरी शहर मझाररे ॥ स्मरण ॥७॥

अथः आषाढ मुनिको व्याख्यान ।

दुहा । सांसण नायक सुख करु । वंदु विरजिणंद । सेवकने सुर तरु समो । पुरण प्रमानन्द सहुको जिन वर उपदिशे । दान सील तप भाव । धर्म मुल एहोज धुरा भवसागरको न्याव ॥२॥ भाव विसेषि भविकजन । एहमें अधिक सुजाण । भाव सहीत तप जप करे । तोपहुंचे निर्वाण ॥ ३ ॥ भाव विना भक्ती किसो । भाव विनासी दीख । भाव विना भणवो किसो । भाव विनासी सीख ॥ ४ ॥ इण पर भावे भावना । जिम आषाढ मुनिस । कर्म मेल खैरु करी । केवल लह्यो जगीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

राणा पुरो रलियामणोरे लालए देशी ॥ दक्षिण भरत माहि भलोरे लाल पुर्व दीश प्रधान ॥ सुख कारीरे ॥ राजग्रही रलियामणीरे ॥ लाल ॥ इन्द्रपुरी उपमान । सु । राज ॥ १ ॥ सोहै चोरासी चौहटारे

लाल। व्यापी कुप आराम। सु। अहो निसी जिहां रहै देवतारे लाल। तिहां रहिवा विश्राम। सु ॥२॥ लोक सकल सुखिया वसैरे लाल। धनकरी धनंद समान। सु। ले लाहो लक्ष्मी तणोरे लाल। पुरुषतिके पुन्यवान ॥ सु ॥ ३ ॥ अरिहन्त देवांरी आसतारे लाल। श्रावक कुल सिणगार। सु०। धर्म धुरंधरमें धुरारे लाल। छे द्वादश ब्रत धार ॥ सु ॥ ४ ॥ नालंदे पाडे वसैरे लाल। तिहां श्रावकानी जोड़। सु। श्रीमुख वीर परसंसियारे लाल। घर साढी बारा कोड़। सु ॥५॥ पर्वत च्यारछे पाखतीरे लाल। बिभार बिपुलगीरी जाण। सु। उदय सोहन रत्न गीरीरे लाल। नाम जिसातिहां बखाण। सु ॥ ६ ॥ सालभद्र धनो तिहांरे लाल। एकादश गणधार सु। कर अणसण आराधनारे लाल। पुंहता मोष मजार॥ ७ ॥ लाम्बी हात छीयाल छेरे लाल। प्रगट प्रसिध मुसाल। सु। चौदे चोमासा तिहां कियारे लाल। श्रीवीर जिणन्ददयाल। सु। ८ ॥ पहली ढाल पुरिथईरे लाल। अलबेला नी जात। सु। मान सागर कहे सांभलोरे लाल। नगरी तणो अवदात। ॥ सु ॥ ९ ॥

दोहा। ग्राम नगर पुर विचरितां। छाडी मन

अहंकार ॥ पंच सया स्युं परवस्था । धर्म रुची अणगार ॥ १॥ समय सत्य तिण अवसरे । राज ग्रही उद्यान॥ तास शिष्य आषाढ़ मुनि । लब्दी गुण भंडार ॥ २ ॥

ढाल दूजी ।

तीन बोलां करी जीवनेजी अल्प आउ ।

मुनिवर वहिरण पांगस्था ॥ सखी ॥ लेइ सतगरु आदेश । छठतणो छे पारणो ॥ सखी ॥ नगरीमें कियो प्रवेशरे । मुनिवर नव जोबन बेसरे । सोभे सिर लुंचित केशरे । चिंत लोभ नहीं लव लेशरे । मन मोहन गारोरे साधजी ॥ १ ॥ पतली उढी पछेवडी । सखी । मुनिवर अंग सुरंग । मयंगलनी पर मालतो । सखी । निर्मल गंग तरंगरे । जाणे लाग्यो चारित्र स्युंरंगरे । रुपेकरीजेम अनंगरे । जाणे छोड्यो प्रमादनो संगरे ॥ २॥ भमरतणी पर बहुभमे । सखी । लह मुनिवर सुध आहार । सुर तपे सिर आकरो । सखी । पिंड भरे जल धाररे । ऋषि उपशम रस भंडाररे । जाणे जीत्या बिषये बिकाररे । अति पञ्च माहाव्रत धाररे ॥ ३ ॥ मुनिवर आयो वहिरवा । सखी । गाथा पतिने गेह । दीठो मुनिवर दीपतो ।

सखी। चिमकी चतुरा तेहरे। आयो मुनिवर अम गेहरे। हर्ष करी पुरित देहरे। मोदक दीधो धरि नेहरे ॥ ४ ॥ मोदकले मुनिवर चल्यो। सखी। चिन्तवे चित मझार। एमोदक मुज गुरु भणी। सखी। किधो एह बिचाररे। मुनि लब्धतणो भंडाररे। किधो तिण रूप उदाररे। बलि आयोदुजी बाररे।५। ओभी मोदक लेचल्यो। सखी बली चिन्तवे मुनिराय। एविद्या गुरु कारणे॥ सखी।। थिवर रूपबली थायरे। अति गलीत पलीत थई कायरे। लड़ थड़तामुके पायरे। तीजी बेलां तिहां जायरे ॥ ६ ॥ डोसो देखी दुबलो। सखी। देख थई दलगीर। बहरावे करुणा करी ॥ सखी। जाय रह्यो एकतीररे। बली चिन्तवे मन बड़ बीररे। इणमे लघु शिष्यनो सीररे। गुरु पासे भणे जिमकीररे ॥ ७ ॥ कुक बहुबो बामणो। सखी। चाम चरण कर हीण। काणी कोची आंखड़ी।। सखी। गीड रह्या ले लीनरे। दंतुर किया अति खीणरे। तीण रूप रच्यो अति दीनरे। बोले मुख अति प्रवीनरे ॥ ८ ॥ चोथी बेलां आवियो। सखी। तिणद्विज घरने बाररे। पडी लाभ्या प्रेमेकरी ॥ सखी। मोदक सुध आहाररे। लेइ मुनिवर किध विहाररे ॥ लब्धे किया भेष अपाररे। नटवे दीठा तिण वाररे

॥ ९ ॥ उंचा महल थि उतस्यो । सखी । नट बांद्या मुनिराय । जे जोइयते लीजिय । सखी ॥ जो कछु आवे दायरे । नटवो निज मंदिर जायरे ॥ पुत्रीने कही समझायरे । सुरतरु सम ए ऋषि रायरे । १० । जो नटवो हुवे आपणो । सखी । तो भरिय धन कुप । राज लोक रीझेबहु ।सखी। रीझे भला भला भुपरे । मुनिवरनो अकल सरूपरे । लब्द करी नवनवा रूप रे । एहने मोहरी चुंपरे ॥ ११ ॥ बीजी ढाले ढल कती सखी । मीठी राग मल्हार । मान सागर कहै सांभलो ॥ सखी ॥ सांभलतां सुख काररे । हिवे नटुवी करे बिचाररे । मुनि चिन्तामणि अनुहाररे । पामीजे पुन्य प्रकाररे ॥ १२ ॥

दोहा । बीजे दिवसे बहरवा । आयो उहि जगेह । नटवी दिठी नयण भर । पडी लाभे धरि नेह ॥१॥ आगी उभी आयने । जाणी चमकी बीज ॥ मुनिवर मन संसय पड्यो । एह रुपकी रीज ॥ २ ॥ रूपे रंभा सारषी । इन्द्राणी अनुहार ॥ कि पदमण पातालकी । घड़ी आप करतार ॥ ३ ॥

ढाल तीजी।

बामणडी जोग मोहियो एदेसी।

भवन सुन्दरी जयसुन्दरी अति सोहैरे। मनमोहैरे। मुनि वरको जाण। मुजरो नयणांको ॥ करजोडी आगल रही। मुख बोलेरे २। बोले अति मीठी बाण। मुनिवर मोह्यो माननी ॥ १॥ ज्यांसिर सोहै राषड़ी। सिरगुंथ्योरे २। गुंथ्यो अति चंग बोणी भुयंगम सारषी। विच करतोरे २ तिहां राज अनंग ॥ २॥ टीको नीको नीलवटे। मुख सोहरे २। पुनमनोचंद। दंत जिसा दाड़िम कुली। जिहां सोहैरे अमृतनो कन्द ॥ ३ ॥ आंख कमलनी पांखड़ी। गल सोहैरे २। एकावली हार। नाकि नकबेसर भलो। कुच सोहैरे २ श्रीफल अनुहार ॥४॥ बांहि सोहै बोरखा। कर सोहैरे सोहनकी चुड़। कानां कुण्डल कनकमे। डूगावातेरे २ मत जाणो कूड ॥ ५ ॥ कट मेखल सोणी तटे। कट चरणारे२ पहरयो अति चंग। पाये गुघर घम घमे। मुलकन्तीरे करे नव नवारंग ॥६॥ नयण वयण नारीतणा। तेकुष्यारे २। करवा कु-चोट। मुनिवर मृग तन भेदियो। अतिदिधीरे नयण फंदी ओट ॥ ७ ॥ नयण बयण सर सारखा। अति नाख्योरे २ तिहां भर भर मुठ। भेदालक तन भे-

दियो । जाय लागोरे । तेनहोंसके उठ ॥ ८ ॥ भवन सुन्दरी जय सुन्दरी। समभाविरे२ एतीजी ढाल । मान कहै समझ्यांपछै । धन्यासरीरे २ । राग विशाल ॥९॥

दोहा । करजोडी विनती करे । सु ण सरनेही साध ॥ घर घर भिष्या मांगने । कहोनी कुण फल लाध ॥१॥ इसी सीख किम मानिय । लही मानव अवतार ॥ जिण ए भोगन भोगव्या । किण लेखे अव-तार ॥ २ ॥

ढाल चौथी ।

रामचन्द्रके बागां चांपोमोररइरी ।

सुण सनेहा संत । कामण अरज करेरी ॥ थे गीरवा गुणवन्त । घर २ कांय भमोरी ॥ १ ॥ याकुण दिधी सीख । योवन दिख्या ग्रहीरी ॥ घर २ मांगो भिष । कहो कंहि सिध लहिरी ॥ २ ॥ किणरे धुतारी धुर्त । चितड़ो चोर लियोरी ॥ वली कियो अवधुत । फिर फिटकार दियो री ॥ ३ ॥ फीरो उवराणे पाव । सुण आषाढ मुनिरी ॥ सुखोलुखो खाय । तिहां कहां सिध सुणीरी ॥ ४ ॥ पहीरि माला वेश सोचन कछु कियोरी । मस्तक लोच्या

कीस । देही दुख दियोरी ॥५॥ लुल लुल लागुं पाय । साहिब कह्यो करोरी ॥ थे सहुने सुखदाय । हमसें प्रीती करोरी ॥६॥ परणो जोबन बेश । नर भव सफल करो-री ॥ सुध बिना कैश । कामण चित धरोरी ॥ ७ ॥ सुण सस्नेहा स्वाम । भेष परो तजोरी । थेहम आतम राम । मंदिरसेंज सजोरी ॥८॥ फूल बिछाई सेज । नवर भांत भणीरी ॥ करे हीरणादि स्युंहेज पुरो चित रली री ॥ ९ ॥ तुम हम मिलवा कोड । मंदिर आय बसी री ॥ जासी जोबन छोड़ । बेठा हात घसोरी ॥ १० ॥ डूम नटवी जल पंत । चरण आय लगीरी ॥ नेह निजर नीरखंत । देखी प्रीत जगीरी ॥११॥ कामणने सम-झाय । मुनिवर बात कहिरी॥ गुरकुं पुछुं जाय। आविस तुरत सहिरी ॥ १२ ॥ मान सागर कविराय । चोथी ढाल भणीरी ॥ कामणनेबस थाय । हिवे आषाड मुनि री ॥ १३ ॥

दुहा । बाट जोवे मुनीवर तणी । सतगुरु नयण निहाल ॥ एहवे आषाड़ मनिवरु । तिहां आयो तत काल ॥१॥ बहु असुरा आविया माथे चढियो सुर ॥ सतगुर शिष्यने पुछियो । बोले शिष्य करुर ॥२॥ घरर भिष्या मांगवी । घणो सन्तायो भिष । सिर सुर्य पग ल्यांतपे । तपावली तुम सीख॥३॥ ए उगाए । सुमती

एह तुमारो भेष ॥ सद्यान जावे खीण २ खारा वयण विशेष ॥ ४ ॥ बोल वांधी हुं आवियो । करी नटवी संकेत ॥ रह्यो न जावे भोग विन । नटवी वांध्यो हेत ॥५॥ हमने तुम आदेश दो । तोनटवी घर जाय ॥ भोग भलेरा भोगउं । हम कुंथयो उछाय ॥ ६ ॥

ढाल पंचमी ।

इण सरवरीयरीपाल उभादोय राजवीहो लाल उ० ॥

पभणे सतगरु सीख । सुणो शिष्य । वावलाहो ॥ लाल सु० । पर रमणीरे काज । थया किम आकुला हो । लाल थ० ॥ १ ॥ पंचमाहाव्रत धार । हुस्यो तुम किम घटे हो० ॥ जाप जपे तुम नाम । लियां पातिक कटे हो० ॥ २ ॥ रत्न चिन्तामण हाथ । दाष कहो कुण ग्रहे हो० ॥ गेवरघुमे वार । गधो कुण संग्रहे हो० ॥ ३ ॥ वर छांड़िजे प्राण । हुता सणमें वलोहो० ॥ चारित्र रत्न नछोड़ । मकर नारी वलो हो० ॥ ४ ॥ तपकर आतम सोष । इन्द्री वस कि जीय हो० ॥ संजम विधस्युं पाल । वहुत जश लिजीय हो ॥ ५ ॥ नगमे सतगुरु सीख । कहै गुरु शिष्य भणी हो० ॥ मुझमन एहिज मोज । ग्रहे बसवा तणी

हो ॥ ६ ॥ हमकुं द्यो आदेश । शिष्य कहै वली २ हो ॥ जिण कुल मदरा मांस । तिहां रहिजोटलीहो ॥७॥ देखीस मदरा मांस ।भषण करती सहीहो ॥ तजस्युं त तक्षिण तेह । तिहां रहिस्युं नहींहो ॥ ८ ॥ हिवे आषाड़ मुणिन्द । आयो नटवा घरे हो० ॥ भवन सुन्दरी जयै सुन्दरी । बिहुँ उछव करे॥६॥ जो मदरा नैमांस । तणो टालो करोहो० ॥ तो तुम हम घर वास । बोल मानो खरोहो ॥ १० ॥ दोनूंई मानी बात । बोल निश्चय करीहो ॥ जो तुम लोपांकार । साहिब जाज्यो फिरीहो ॥११॥ परणावी निज तात । भवन जय सुन्दरीहो ॥ भोगवे भोग रसाल । कवल संधोकरी हो ॥ १२ ॥ हांस विलास । बिनोद बिबिध सुख मानताहो ॥ मानव भव अवतार । सफल कर जाणताहो ॥ १३ ॥ एक दिवस आषाड़ । चल्यो न्टपती सभाहो ॥ तेड़ो आव्यो दुत । सुकन हुवा भला हो ॥ १४ ॥ लेई सामग्रहो साथ । नाटक करवा भणी हो ॥ प्रमदा पुठे छाक । पीये मदरा तणी हो ॥ १५ ॥ नाटक जीप आषाड़ । आयो घर आपणे हो० ॥ राजानो लई सुपसाय । सहु जै जै भणे हो ॥ १६ ॥ दिठो बनिताबेस । बिकल मद छाकणी हो ॥ चिर रहित पडी जाण । भुम पर डाकणी हो ॥

१७ ॥ मुल स्वभाव नजाय । जतन बहुला करेहो ॥ श्वानन्नी बांकी पुंछ । सरल कहो कुण करेहो ॥ १८ ॥ सोतन जाय कोड । उषद बहु कीजिय हो ॥ कागनहोवे खेत । साबण बहु दीजिय हो ॥ १९ ॥ छाडि संजम बेस । इसी नारी बही ॥ पंचमी ढाल रसाल । विशाल घणी कही ॥ मान सागर आषाड़ । ग्रहे रहिसि नहीं हो लाल ॥ ग्रहे रहीसे नहीं ॥ २० ॥

दोहा । खरी सीख दिधी हुंती । पिण कामण लोपीकार ॥ हिवे रहिवो जुगतो नहीं । निश्चे नेव वहार ॥ १ ॥ बिकाल रुप नारी मड़ी । छोडी चाल्यो जाम ॥ छाक गद्रमदरा तणी । नारी लाजी ताम॥२॥ कंथा क्रोध न कीजिय । अवला भाषे आम ॥ कीडी स्युंकटकी कीसी । थेहम आतम राम ॥ ३ ॥ पलो भाल उभीरही । जाय सखी भरतार ॥ ओलाखीणो लाडलो । कब मेले करतार ॥ ४ ॥ प्राण पहली घरणी हती । अब क्रिमदिजे छोड ॥ कतवारीरे सुत ज्युं । जिहांतुटे तिहां जोड़ ॥ ५ ॥

ढाल छठी ।

पीण गइरे म्हारी पीण गई ।

प्रीत लगी केसरिया कन्त । कहे म्रगा नैनी सुण गुण वन्त ॥ तोस्युं प्रीत लगी ॥ १ ॥ पीतकी रीत न

जाणे कोय। जे जाणे कुलवन्ती होय॥ तो० ॥ २ ॥ एकरसु पीउ घरमे आय। लालन मोरो बिरहो मिटाय ॥३॥ तुंमुझ प्रीतम प्राणाधार। तुझ बिन सुनो सयल संसार ॥४॥ तुंपिहर तु सासर जाण। तुं परमेश्वर तुं रहमाण॥ ५ ॥ बलतो कहै आषाढ़ मुनिश॥ मोमन कीरी पुणी जगीश ॥ ६ ॥ म्हे निज गुरुकुंदिधी पुठ। कह कहावत आयो उठ॥ ७॥ अबहुं लेस्युं संजम भार। मैंनिज गुरनी लोपीकार॥ ८ ॥ हुं अपराधी कठीन कठोर। बिमुख थयो गुरुजीको चोर॥ ९॥ मे किधी चारित्र नी हाण। नहीं राखी गुरुजीरी काण॥ १०॥ गुरुदीवो गुरु प्रतक्षदेव। हिवे हुं कार स्युंगुरुजीकी सेव॥ ११ ॥ कोप तजो नणदीरा वीर। कामण सुं कांइ तोड़ो हीर॥ १२ ॥ कहोजी हमने कवण धार। ये तो मुकोछो निरधार॥ १३ ॥ मुनिवर जंपे सुण हे नार। सात दिवस रहिस्युं घर बार॥ १४॥ मे लवस्युं तुझधननी कोड़। पछे नम स्युंगुरुबेकर जोड॥ १५ ॥ छठी ढाले अर्थ सुचंग। मान सागर कही मन रंग॥ १६ ॥

दुहा। लेइ सभाइ सहु चल्यो। नृप पास ऋष राज॥ नाटक नृत संगीत रस। जुगत दिखाउं आज॥ १ ॥ कुंवर सभाया पांचसे। आरिसा आवा

स ॥ वीणा ताल मृदंग ध्वनी । राग बंध हुयोरास ॥२॥ लब्द करी लोकांविचे । आणे नव नवा रूप ॥ देख अचम्भो आषाढनो रीझ्यो चितमें भुप ॥ ३ ॥

ढाल सातवीं ।

रे लाला पुन्य पदारथ उलखो ।

रिध करी चक्र वरतनी तिहां भरत थयो ऋष आपरे ॥लाला॥ षटषंड आण मनावतो । हिवे मांड्यो नव २ व्यापाररे । धन्य धन्य आषाढ मुनिसरु ॥१॥ धन आषाड़ मुनि सरु । हिवे माड्यो नाटक जाणरे ।लाला॥ भरत तणे अही नाणस्युं । जाणेंपास्याकेवल ज्ञानरे ॥ ॥२॥ गज रथ घोड़ा पायका । वलि अन्तेउर परिवाररे ॥ लाला ॥ वतीस सहंस नरेसरु । लब्द करी किधातयाररे ॥ ३ ॥ भुषण अंग वणाविया वलि रूप कूमाररे ॥ भुवन आरिसे में रच्या । तिहां नाटक ना धूँकाररे ॥ ४ ॥ न्हावण मंडप नृपति । भुषण करी बेंठादुररे ॥ एक आंगुल रही मुद्रका । तिण सोभा अधिक सनुररे ॥ ५ ॥ कायादिसे कार रमी । पर सोभत देहरे ॥ आभरण करी सोभे । विन भुषण मंदीदेहरे ॥ ६ ॥ अस्थि रुधर मांसस्यु करसी । भसलीषत बहुला आमरे ॥ अंतरगत आलोचता । मलमुत ना बहु ठामरे ॥ ७ ॥ भरत

तणी पर भावना। भावंतालह्यो केवल नाणरे॥ कुंवर तीके प्रति बुझिया। केवल थयातीण अवसानरे॥ ८॥ आइ सांसण देवता। अनुक्रमे चारित्र पालरे साधुमुगत पहुंता जाणने॥ जेहनी लोक बधे सूभ वाणरे॥ ९॥ इणपर भावना भाविय जिम भाई अषाड़ मुन्दिरे॥ ते मुगत तणा सुख पावसी। गुंण गावे सुर नर बन्दरे॥ १०॥ सतरे से तीसिसमे। श्रीनगर भेरुंदा जाणरे॥ सातमी ढाल सुहामणी। कवि मान सागर सुभवाणरे॥ ११॥

अथः सामायकरा बतीसदोष।

१० दश दोष मनसुं लागे ते कहे छे।

१ विवेक राखीने सामायक करणी कही छे
२ जगतमें जश कितींअर्थेनहीकरणीकरेतोदोषलागे
३ इण लोकरी बन्छा घालीने सामयक न करणी
४ सामायकमें गर्व अहंकार नहीं करणो
५ सामायकमें बैठा मनमें भय न ल्यावणो
६ सामायकमें बैठा संसारीकामकोसंकल्पनहीकरणो
७ फल प्रते संदेह नही करणो (मै सामायक करूं छुं फल कदहोसी

८ सामायकमेंबैठाकोइखोटाबचनकहैतोरीसनकरणी
९ बिनय सहित सायायक करणी कहीछै
१० भक्ती रहित सामायक न करणी करे तो दोष लागे

१० दश दोष बचन सुं लागे ते कहे छै

१ सामायकमें कठोर कुबचन बोलणो नहीं
२ सामायकमेंबैठाबचनबिचारीनेनिर्वद्यभाषाबोलणी
३ सामायकमें बैठा रागकरीसरागगीतगावाणोनहीं
४ सामायकमें बैठा बिना बतलायां बोलणो नहीं
५ सामायकमें बोलणो पडैतो थोडो निरदोष बोलणो
६ सामायकमें बैठा कलहकारी कथा करणी नहीं
७ सामायकमें बैठा हांसी कितोल ख्याल न करणो
८ सामायकमें बैठा ऊंचा साद नहीं बोलणो
९ सामयकमें उपयोग सहित भणणो गुणणो करणो
१० सामयकमें बिकथा करणी नहीं धर्म कथा करणी

१२ बारे दोष काया सुं लागे ते कहेछै

१ दोनूं पग ऊंचा करने सामायकमें नहीं बैठणो
२ एक पग ऊंचोकरीने सामायकमें नहीं बैठणो
३ सामायकमें बैठा च्यारु दिशातमासोजोवणोनहीं
४ सामायकमें सावद्य काम करणो नहीं
५ सामायकमेंबैठाउसीसारोभींतप्रमुखरोसारोमलेणो

६ सामायकमें अंग उपयंग गोपवी नै राखणा

७ सामायकमें बैठा आलस मोडणो नहीं

८ सामायकमें बैठा आंगुल्यांमें कडकानहीं०)काढणा

९ सामायकमें शरीरको मयल उतारणो नहीं

१० सामायकमेंधरतीबिनादेख्यांपुंज्यांहाथपगनहींधरणो

११ सामायकमें हात पग चंपावणा नहीं दुजापासि

१२ सामायकमेंबैठानिद्रालेणीनहींविकथाकरणींनहीं

ए सामायक ना बतीस दोष कह्याते टालीने सामायक करे

इति सामायक रा बतीस दोष समाप्त।

अथः श्री अरिहन्त भगवानकी चौतीस

अतिसय

१ केस मांस रोम नख बधे नहीं सोभनीक रहै

२ निरोग शरीर हुवे लेप लागे नहीं

३ लोही मांस गायना दुध सरीषा उजला हुवे

४ श्वासोश्वासमेंकमलनीसुबासनासरीखीसुबासनाहुवे

५ आहारनिहारकरताचरमचक्षूनोधणीदेखसकेनहीं

६ आकाश मारगमें चक्रचाले

७ आकाश मारगमें छत्र चाले

८ आकाश मार्गे श्वेत चमरांको जोडो चाले

९ आकाशमार्गेपादपिठसहितफटिकसिंहासणचाले

१० आकाश मार्गे इन्द्र ध्वजा चाले

११ आशोक वृक्ष फल फूल सहित छायां करे

१२ पीठ पाछे भगवन्तने भामंडल दे दिपमान दिपे

१३ एक जोजनतांइ भुंमी भाग सुंवों रमणीक हुवे

१४ मारगमें कांटा सुंवा पड्या हुवेते उंधापडे

१५ छउं ऋतु सुखकारी होवे विचरे जठे

१६ एक जोजनमें सुगंध पवन करी धरती पुँजीजाय

१७ एकजोजनतांइपंचवर्णाफूलांकाढोकढौंचाअचितहोवे

१८ एक जोजन तांइ सुगंध पाणीनों छिडकाव होवे

१९ (अमनोज्ञ) अणगमताशब्दरूपरसगंधस्पर्शउपशमें

२० (मनोज्ञ) गमता शब्द रुप रसगंधस्पर्शप्रगटहुवे

२१ एक जोजन तांइ भगवन्त नीवाणी विस्तरे

२२ अर्ध मागधी भाषाकरीने व्याख्यान करे

२३ आर्यअनार्यदोपदचौपदआपअपणीभाषामेंसर्वसमजे

२४ भगवंत ना समोसरणमेंआपसमेंवैरभावउपजेनहीं

२५ वादी वाद करणने आवे तेहातजोडीनेविनयकरे

२६ जो कदा वादी विनयनहींकरेतोतेमाहाकष्टमेंपडे

२७ पचीस जोजन तांइ टीडीनो उपद्रव नहीं होय

२८ पचीस जोजन तांइ स्वचक्रते देशाधिपति सैन्यांनो भय न हुवे

२९ पचीस जोजन तांइ परचक्र तेपराया राजानीसैन्यां नो भय नहीं हुवे

३० पचीस जोजन तांइ मरी मिरघी रोग न उपजे

३१ पचीस जोजन तांइ अतिघणो मेह नहीं होवे

३२ पचीस जोजन तांइ वर्षा नो अभाव न होय

३३ पचीस जोजन तांइ दुकाल न पडे भगवन्त विचरे जठास्युं

३४ पचीस जोजन तांइ आगलो रोग उपशमे नवो उपजे नहीं

इतिं श्रीअरिहन्त भगवानकी चौतीस अतिशय समाप्त ।

श्रीसिद्ध भगवानकी पैंत्रीस वाणी ।

१ संस्कार सहित वचन मुख स्युं उचारण करे

२ उंचा शब्द स्युं प्रगट अच्चरचरवड़ासुधवचनबोले

३ ग्रामीण बचन बोले पांडूर वचन बोले मुखस्युं

४ गंभीर उंडाश्वरसुं उंचाशब्दस्युं बोले

५ बोलतां थकां वाणीमें परछन्दा उठे

६ सरस कहतां रस सहित वचन मुख थी बोले

७ राग स्नेह रहित वचन बोले मुख थकी

८ सुत्र पाठ थोडो अने तेहनो विस्तार घणो करे

९ पुर्व पर वचन विरुध मुख थकी नहीं बोले

१० जुदा भिन भिंन अर्थ संदेह टालीने वचन कहे

११ व्याख्यान सांभलण हाराने सन्देह उपजे नहीं

१२ अनेरा वादीने वचन दोषण देइने पराभवे

१३ सांभलणहारानोमनहरेअनेरेठीकाणेचितजावेनहीं
१४ देशकाल देखीने बचन बोले जोग्यतापणे
१५ अर्थ करीने अति घणो विस्तार करेते मिलतो करे
१६ जीवादिक बस्तनो बिचार कहै ते मिलतो कहै
१७ पद कहै ते आगले पदनी संपेक्षाय कहै
१८ बारता रूपबचनकहैतेहथीबालकपिणसमझेतिमकहै
१९ अति सरस मधुर भाषा बोले घणी स्वरुप
२० उपदेस कहतां थका कोइनो मर्म बचन नहीं बोले
२१ धर्म रूप उपदेस देतां थकां धर्म कथाही कहै
२२ बस्तनो प्रकाश करे तेहनो बिस्तार करीने कहै
२३ पारकी निन्दा आपणी स्तुति बचन मांहे बोले नहीं
२४ मध्यस्थ बचन बोले स्लाघा लहै
२५ शब्द कारक लिंगथी असुध न कहै बचन
२६ तेहना बचन सांभलणहार चमत्कार पामें चितमें
२७ व्याख्यान अति घणो उंतावलो नहीं बांचे
२८ भगवन्त ना मुखनी बाणी रोगादिक दोषण रहित
छै सुणने वालाने
२९ भर्म बिनाकी भाषा भाषण करे
३० जे पदार्थ बर्णवे तेहिज बिशेष सरूपथी संक्रमे
३१ बचन बोलेते बाचनारनो अपेक्षाय बचन बोले
३२ अर्थ पदार्थ जुदा भाषण करे

३३ सत्य साहासीक बचन सदा कहै धर्म कहैता सरम न पामें

३४ उछाह करीं सहित बचन बोले मुखथकी

३५ जीवादिक बस्त प्रकाश करता बचन बोले

इति श्रीसिद्धभगवानकी पेंतीस बाणी समाप्त।

अथः पांच मण्डलाका दोष।

संजोग मेलि तो दोष लागे ॥१॥ प्रमाणस्युं दूधको लेवे तो दोष लागे ॥२॥ सरस आहार सराय सराय लेवे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ निरस आहार विसराय विसराय लेवे तो दोष लागे ॥ ४ ॥ छव कारण बिना आहार करे तो दोष लागे ॥५॥

छवकारण आहार करणोते कहै छे।

षुदा बेदनी खमणी नहीं आवे तो आहार करणो ॥ १ ॥ व्यावचरे वास्ते आहार करणो ॥२॥ इर्या पालवारे वास्ते आहार करणो ॥ ३ ॥ संजम पालवारे वास्ते आहार करणो ॥४॥ प्राण घणादिन राखवारे वास्ते आहार करणो ॥ ५ ॥ धर्म जागरणारे वास्ते आहार करणो ॥ ६ ॥

छवकारण आहार नहीं करणो

रोग उपजतो जाण आहार नहीं करे ॥ १ ॥ उपसर्ग उपजे तो आहार नहीं करणो ॥ २ ॥ दया पलती नहीं दिसे तो आहार नहीं करणो ॥ ३ ॥ ब्रह्मचर्य पलतो न दिसे तो आहार नहीं करे ॥ ४ ॥ तपवास्ते आहार नहीं करणो ॥ ५ ॥ संथारे वास्ते आहार नहीं करे ॥ ६ ॥

अथः दशाबिधि यति धर्म

खंती १ मुत्ती २ अजवे ३ मदवे ४ लाघवे ५

छमारो करवो निरलोभता सरलताइ मदनकरे भद्रीकहलका पणोराखे

सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चेइय ९ ब्रह्मचर्यवासे १०

सत्यवचन सतरेभेदे बारेभेदे ज्ञानवन्त सीलपाले संजमपाले तपकरे

अथः सतरे भेद संजम ।

पृथ्वी काय संजम ॥१॥ अप्पकाय संजम ॥ २ ॥ तेउकाय संजम ॥ ३ ॥ वाउकाय संजम ॥ ४ ॥ वन-

स्पतिकाय संजम ॥ ५ ॥ बेइन्द्री संजम ॥६॥ तेइन्द्री संजम ॥७॥ चोइन्द्री संजम ॥८॥ पंचेन्द्री संजम ॥ ९ ॥ अजीवकाय संजम (बस्त्र पातरा लेवे पलेवे मेले जयणा स्युं (१० पेहा संजम (बहुमोला बस्त्र नहीं राखे कल्पते सवाय (११ उपेहा संजम (कालोकाल पलेहणाकरे (१२ अवहट संजम (आज्ञा माहेला कारजमें जोग बरतावे (१३ अपमेगणा संजम (जयणा स्युं पुंजे परठे लघुनित बडीनित (१४ मनसंजम १५ बचन संजम ॥ १६ ॥ काया संजम ॥ १७ ॥

अथः बयालीस दोष ।

१६ सोले दोष उदगमणका श्रावकरे जोगसुं लागे।

आधाकर्मी भोगवेतो दोषलागे॥१॥ उदेशी भोगवेतो दोष० ॥ २ ॥ पुतीकर्म ॥ ३ ॥ थापीतो ॥ ४ ॥ मिश्र ॥ ५ ॥ पाहुणो आगो पाछो ॥ ६ ॥ अनाराथी उजालोकरे ॥ ७ ॥ मोलको लेवीनेदेवे ॥ ८ ॥ उदारो लेवीनेदेवे ॥ ९ ॥ सदलो बदलो करे ॥ १० ॥ स्हांमो आण्यो भोगवे ॥११॥ छांदो कीवाड़ खोलीनेदेवे ॥१२॥ उंची अवखी जायगा स्युं उतारीनेदेवे ॥ १३ ॥ निमले पासे खोसीनेदेवे ॥ १४ ॥ सीरकी वस्तु बिना पुछ्यांदेवे ॥ १५ ॥ आधणमें अधिको उरे ॥ १६ ॥

१६ सोले दोष उतपातका साधु श्रावक

दोनाके जोगसुं लागी ।

धायनी पर लेवे ॥ १ ॥ दुतनी परे लेवे ॥ २ ॥ निमत भाषीनेलेवे ॥३॥ जातजणाइनेलेवे ॥४॥ गरीबी गाइनेलेवे ॥ ५ ॥ वैद्गरी करीने लेवे ॥ ६ ॥ क्रोध करीने ॥ ७ ॥ मानकरीने ॥ ८ ॥ मायाकरीने ॥ ९ ॥ लोभकरीने ॥१०॥ पहलो पछै दातारका गुणकरीने ११॥ विद्याकामण करीने ॥१२॥ मंत्र बैदगरो करीने ॥१३॥ गोली चुरण करीने ॥१४॥ सोभाग्य दो भाग्य करीने॥१५॥ गर्भपड़ाइने लेवे तो दोष लागे ॥ १६ ॥

१० दश दोष येषणाका साधुके जोगसुंलागे

संका सहित लेवे तो दोष लागे ॥ १ ॥ सिचत हात खरड्यो हुवे ॥ २ ॥ सचित उपर मेल्यो लेवे तो दोष लागे ॥ ३ ॥ सचितकरी ढाक्यो हुयो लेवे ॥४॥ सचितकि संगटे आप्यो लेवे ॥ ५ ॥ आंधे पांगले खने स्युं लेवे ॥ ६ ॥ सचित अचित भेलो लेवे ॥ ७ ॥ शस्त्र पुरो नहीं परगम्यो हुयो लेवे ॥ ८ ॥ नाखतो द्रव्य आप्यो लेवे ॥ ९ ॥ आंगणो ततकाल नो नींप्यो होवे तो लेवे तो दोष लागे ॥ १० ॥

इति बयालीस दोष समाप्त ।

अथः बावन अणाचार ।

१ उदेशीक आहार (साधुरे अर्थें रांधीने आपे ते लेवे तो अणाचार लागे

३ नित पिंड एकघरसुं आहार लेवे तो अणाचार लागे ।

४ म्हांमो आण्योडो आहारादिक लेवे तो अणाचार लागे

५ रातो समयमें आहार पाणी लेवे भोगवे तो अणा चार लागे

६ स्नान प्रमुख करे तो अणाचार लागे

७ सुगध तेल फूलेल भोगवे तो अणाचार लागे

८ माला फूलादिक नी भोगवे तो अणाचार लागे

९ वीं झणा करीने वायरो लेवे तो अणाचार लागे

१० आहार पाणीदिक रात्रे बासी राखे तो अणा चार लागे

११ गृहस्थीरा भाजन ठांवमें जीमे तो अणाचार लागे

१२ राजपिंड राजा छत्रधारीकी घरको आहार लेवे तो अणाचार लागे

१३ सदावरत (दानसालाका आहार) लेवे तो अणा
चार लागे
१४ तैलादिकनो मर्दन करे तो अणाचार लागे
१५ काष्ट प्रमुखसुं दांतण करे तो अणाचार लागे
१६ गृहस्थने सुख दुःख नीवार्ता पुछेतोअणाचारलागे
१७ दर्पण (काच) मे मुख देखे तो अणाचार लागे
१८ जुवो खेलै तो अणाचार लागे
१९ सारी पाशा चौपड़ खेलै तो अणाचार लागे
२० माथे उपर कपड़ो बिना कारण ओढ़े तो तथा
माथे छत्र धरावे तो अणाचार लागे
२१ वैदगी करे तो अणाचार लागे
२२ पगामें पगरखी पहरे तो अणाचार लागे
२३ अग्निनो आरम्भ समारम्भ करे तो अणाचार लागे
२४ सय्यातर (साधुने रहनेवास्ते थानक देवे) तेहने
घरको आहार भोगवे तो अणाचार लागे
२५ माचा पिलंग ढोलिया उपर बैठे सुवे तो अणा
चार लागे
२६ शरीर रोग प्रमुख थी बीमार थइ होवे १ तथा
तपशी होवे २ तथा शरीर माहे असगती होवे ३
ए तीन कारण बिना गृहस्थीरे घरे बैठे तो अणा
चार लागे

२७ शरीरे पीठी चोलवे तो अणाचार लागे

२८ गृहस्थरी व्यावच करे तथा गृहस्थस्युं करावे तो अणाचार लागे

२९ पोतेकी जातीकी ओलखणा करी पेट भराइ करे तो अणाचार लागे

३० मिश्र हुवो पाणी (जे बासण विषे पाणी उकालवा मुक्यो छे ते बासण ना निचा भागने विषे तथा विचला भागने विषे अने उपरला भागने विषे ए तीनूं जागे अग्नि लागी नथी तीनूं जागे पाणी उनोथयो नथो हूसो मिश्र पाणी लेवे तो अणाचार लागे

३१ रोगे पिड्यो थको गृहस्थ नी व्यावचने संभारीने सर्णाग्रह तो अणाचार लागे

३२ मुलो प्रमुख खावे तो अणाचार लागे

३३ आदो प्रमुख खावे तो अणाचार लागे

३४ सेलडी ना कटका काचा भोगवे तो अणाचारलागे

३५ कंद भोगवे तो अणाचार लागे

३६ मुल भोगवे तो अणाचार लागे

३७ फल भोगवे तो अणाचार लागे

३८ बीज भोगवे तो अणाचार लागे

३९ संचल लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४० सिन्धो लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४१ रोम लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४२ समुद्रको लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४३ खारी लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४४ सिन्ध देशनो पर्वत थी निपज्यो कालो लुण भोगवे तो अणाचार लागे

४५ धुप खेवे तो अणाचार लागे

४६ जाणकार बमण करे तो अणाचार लागे

४७ गुंज जगां धोवे तो अणाचार लागे

४८ जुलाब झाड़ भोगवे तो अणाचार लागे

४९ दांतण करे दांत रंगावे तो अणाचार लागे

५० आंखां काजल आंजे तो अणाचार लागे

५१ तेल मालिस करे तो अणाचार लागे

५२ शरीर नी सुश्रुषा करे तो अणाचार लागे

इति बावन अणाचार समाप्त।

अथः बहु सुर्तीने सोले ओपमा।

संखकी ओपमा ॥ १ ॥ अश्वकी ओपमा ॥ २ ॥ सुभटनी ओ० ॥ ३ ॥ हाथीनो ओ० ॥ ४ ॥ वृषभनी ओ० ॥ ५ ॥ सिंहनी ओ० ॥ ६ ॥ बसुदेवरी ओ० ॥७॥ चक्रवरतनी ओ० ॥ ८ ॥ सक्रेन्द्रनी ओ० ॥ ९ ॥ चंद्र-

मानीओ०॥१०॥सुर्यनी ओ०॥११॥कोठारीनीओ० ॥१२॥ जंबु सुदर्शणनी ओ०॥१३॥सीता नदीनी ओ०॥१४॥ मेरु गीरी नीओ०॥१५॥ स्वयंभुरमण समुद्रनी ओपमा ॥१६॥

अथः अष्ट संपदा

आचार संपदा ॥ १ ॥ शरीर संपदा ॥ २ ॥ सुत संपदा ॥ ३ ॥ वचन संपदा ॥ ४ ॥ विनय संपदा ॥५॥ मतसंपदा ॥६॥ उपयोग संपदा ॥७॥ सुगुरु संपदा॥८॥

चवदे स्थानक समुर्छिम मनुष्य उपजे ।

वड़ीनित (दिसां जाविजठे) ॥ १ ॥ लघुनित (पेशाबमें) ॥ २ ॥ लोहीमें ॥ ३ ॥ राधमें ॥ ४ ॥ विर्यमें ॥ ५ ॥ खेल खंखारमें ॥ ६ ॥ श्लेष्म (नाकरा मैलमें ॥ ७ ॥ वमनमें ॥ ८ ॥ पीत पड़े तेहमें ॥ ९ ॥ विर्यरा पुदगल आला हुवे तेहमें ॥१०॥ स्त्री पुरुषरा संजोगमें ॥ ११ ॥ मुवाजीवरा कलेवरमें ॥ १२ ॥ असुचमें ॥ १३ ॥ कादेमें ॥ १५ ॥

इति।

स्वामी भिषणजी कृत ।
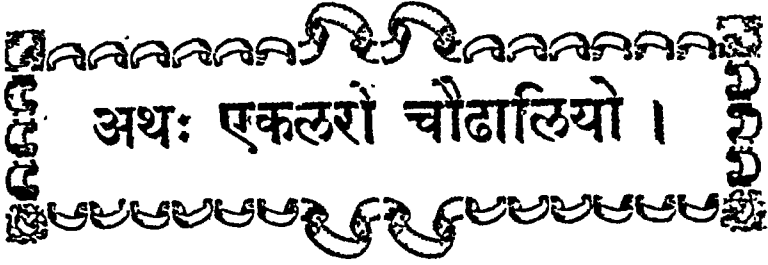
अथः एकलरो चौढालियो ।

दोहा । आरंभ जीव गृहस्थी फिरे त्यारी नेश्राय ॥ अन्य तीरथी पासथादिक । तेपिण तेहवा थाय ॥१॥ बेरागी घर छोड़ने । राचे विषय रसरंग ॥ रागद्वेष व्याकुलथका । करे व्रतनो भंग ॥ २ ॥ ते रति पामे पाप कर्ममें । सावद्य सरणो मान गण छोडि हुवे एकला । कुड कपटरी खान ॥ ३ ॥ न्यात लजावे पाछली । वले भेष लजावणहार ॥ एहवा मानव एकल फिरे । धींग त्यांरो जमवार ॥४॥ ते घणा भेलो रहे सके नहीं । ते एकलड़ा थाय ॥ कुण २ दोष तिणमें कह्या । ते सुणज्यो चितलाय ॥ ५ ॥

ढाल १ लीं ।

कर्म जोगे गुरमाठा मिलीया ॥ एदेशी ॥

कोइ आप छांदे फिरे एकला । ते जिन मारगमें नहीं भला ॥ साध श्रावक धर्म थकी टलिया । संसार समुद्र मांहे रुलिया ॥ १ ॥ एकलो देख लोक पुछा

करे। तोघणो क्रोध करीने तिणस्युं लड़े॥ वलीं बांदे नहीं जब मान बहे। करडा बचन तिणनेरे कहे॥ २॥ कपटाइ घणीछे एकलतणी। सुवमें भाष्यो तीभवन धणी॥ वली लोभ घणोछे बहुल पणे॥ श्रीवीर कह्योछे एकल तणे॥ ३॥ बहु आरंभने विषे रक्त घणो। संचोकरे बहु पाप तणो॥ नटवि अर्थे भोगतणो। बहु भेषधर माहा अधपणो॥ ४॥ घणा प्रकारे करे धुरतपणो। संके नहीं करतो कर्मरिणो॥ अध्यवसाय मनरो अतहीघणो। माठो बर्तेछे एकल तणो॥ ५॥ बहु कोहि माणे माया लोभ पणो। रती नरे सढ़े संकए घणो॥ ए आठ ओगण घटमें बरतो। हिन्सादिक आश्रवनो अरथी॥६॥ वली साधुनो लिंग लिया बहे। कर्मे ए बांध्यो इम कहे॥ हुं छुंधुर चार तियो आचारी। सतरे भेदे संजम धारी॥ ७॥ रखे कोई देखे अकारज करतो। आजीवका अर्थी रहे डरतो॥ अज्ञान प्रमाद स्युं दोष भस्यो। निरंतर मुढ मोह कुप पस्यो॥ ८॥ जिनधर्म न जाणे आप छांदे रह्यो। त्यांने कर्म बांधणने पंडित कह्यो॥ पाप कर्म स्युं अलगा रहे नहीं। त्यांने संसारमे भमण कही॥ ९॥ आचारंग पांचमें अध्येन भाष्यो। पहली उदेसे जिनदाख्यो॥ ए चिरत कह्या छे एकल

तणा । इण अणुसारे अत ही घणा ॥ १० ॥ एहवा अपछंदा अवनितो । त्यां छोडि जिणधर्म तणी रीतो ॥ निरलज भागल विपरीत । किम आवे त्यांरी प्रतित ॥ ११ ॥ उसन्नांदिक पांचुं रेभणी । सुत्रमें वरज्याछै त्रिभवनधणी ॥ ए तो मोषमारग राछे फंदा । एहवाछै जैनतणा जिन्दा ॥ १२ ॥ त्यां छोडि लोकीक तणी लजिया । संका नहीं आणे करता कजिया दोषण काढ्यां तो तपता रहै। आया परिसा ते केम सहै ॥ १३ ॥

दोहा । ठाणा अंग मांह कह्यो । एकलरो विवहार ॥ आठ गुणा कर सहितछै ते सुण ज्यो विस्तार सरधामें सेंठोघणो नसके देव डिगाय । सत्यवादी प्रगन्या सूरछै । बले बोले नहीं अन्याय ॥ २ ॥ सुत ग्रहवा सत्त घणी । मर्यादावन्त बखाण ॥ बहु सुरती नवमा पूर्वतणी । तीजी आचार वत्थु नो जाण ॥ ३ ॥ पांचमें पांचु समर्थी । शरीर तप एकल प्रणो जाण । सबे कारी सेंठो घणो । समर्थ शरीर बखाण ॥ ४ ॥ कालहकारी छठे नहीं । सातमें धिरज ताह ॥ अनुकुल प्रतिकुल उपशर्ग सहै । आठमें विर्य उछाह ॥५॥ ए आठगुणा सहितछै । तोकरणो उग्र विहार ॥ ते पिण गुरु आज्ञा दियां । फिरे एकल मल अणगार ॥६॥

आठगुण बिन एकल फिरे। ते अविनीत मुढ़ अयाण॥ वले आचारंगमें नषेधियो। ते सुण ज्यो चतुर सुजाण ॥ ७ ॥

ढाल २ जी

(त्याने पाषंडि नीहुवे जिन कह्यारे ए देशी)

एकलने मुनिवर री भाव नषेधियोरे। अविनीतनें कह्योछे गण बिगाड़रे॥ दुष्ट प्राकमरी थानक ते हमेरे। दुष्ट कह्यो तिणरी विवहाररे॥ अविनीतने रहणो निषेध्यो एकलोरे॥ १ ॥ धुरसुं तो लोपी अरिहन्त आगन्यांरे। एक तो आहिज मोटी खोडरे॥ वले नांव धरावे एकल साधरीरे। तेतोछै जिन सांसणमें चोररे॥ अ० ॥२॥ सुत अव्यक्त नेवय अव्यक्तपणोरे। तिणरी चौभंगी मनमे धाररे॥ यां दोनूंही बोलांमें काचो नहोरे। तो नचित रहो एकल अणगाररे॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ कोइगण मांहे रहता पडियो चुकमेरे। तिणनेगुर हितस्युं दिधी सीखरे। अव्यक्त क्रोध तणे बस आयनेरे। बचन न बोले गुरुने ठीकरे॥अ०॥४॥ सगला साधु तो दूमहिज चालतारे। त्याने सीखावण नदेकांयरे॥ हुंपणा मांहि तो रहसकुं नहीरे। ओघट घाट घणी मनमांयरे॥ अ० ॥ ५ ॥ अभमानी

आपण पो मोटो मानतोरे । प्रबल मोह मांहि मुर्भा यरे ॥ कार्य अकार्य सुध सुझे नहीरे । विवेक विकल ते एकल थायरे ॥ अ० ॥ ६ ॥ गामाणुं गामविचरता तेहनेरे । घणी अबाधाउपजे आयरे ॥ अबाधा एकलने षमणीदोहिलीरे । षमवारो जागे नहीं उपायरे ॥ अ० ॥७॥ वीर कह्यो म्हारा उपदेसथीरे । तोने शिष्य एकल पणो म होयरे ॥ आतो अज्ञा तिर्थंकर देवनीरे । गमण मत छोडो सुत्र जोयरे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आचारंग पांच मांध्येनमेरे चोथे उदेसे एहवा भावरे ॥ उपसर्ग थी आवाधा उपजे तेहनेरे । विवरो कहुंछुं तिणरोन्या यरे ॥ अ० ॥ ९ ॥

दोहा । श्वाश खांस ताव तेजरो । रोगउपजे अनेक बिध आय ॥ वले गरढा पणो आयांथकां । बिवध पणे दुःख थाय ॥ १ ॥ वले प्रणाम चलबिचल हुवे । किणरी हटक न थाय ॥ ज्यां एकल पणो आ दस्यो । त्याने परभवचिन्त नकाय ॥ २ ॥ जो साधांरी संगत रहै । तो वधेघणो बैराग ॥ आप छांदे एकल फिरे । जाय संजम थी भाग ॥ ३ ॥ भागणारा उपाय छे अतिघणा । तेपुरा कह्या न जाय ॥ पिण कहुं थोडिसी वानगी । ते सुण ज्यो जित लाय ॥ ४ ॥

ढाल ३ जी ।

धिग २ मोह विटम्बणा एदेशी ।

ताव चढ़े करे आकरो । वाचारुकी बोल्यो न विजायोरे ॥ लिषा अतुलवाय भड़कियो । उणरेकुण सखाइ थायोरे ॥ धिग २ अव्यक्त एकलो ॥१॥ कदा कर्म जोगे कुतड़ो डसे । तो ठले मातर कुणजायोरे ॥ डामरु जानबालादिक हुवां । उणरेकुण आहारपाणी ल्यायोरे ॥ धि० ॥ २ ॥ जब कोइ कायर सिथांवता । आप छांदे करे मन जाण्योरे ॥ भुष लिषारा पीड़िया । खावे गृहस्थीरो आण्योरे ॥ धि० ॥ ३ ॥ कोइ आर्त ध्यान मांहे मरे । नर्क तिर्यंचमे जायोरे । उतकृष्टो अनन्ता भवभमे । चिहुं गतगोताखायोरे ॥ धि० ॥४॥ स्त्री आय बकारियां । लाग ज्यावे तिण चालेरे । विटल हुआ ने होसीघणा । किणरीलज्या सील पालेरे ॥ धि० ॥ ५ ॥ विषे अत्यंत पिद्यांयका । वेश्यादिकने घरे जायोरे ॥ माठी भावना भाविया । कुण आणे तिणने ठायोरे ॥ धि० ॥ ६ ॥ अकार्य करतो संकि नहीं । थोड़ा सुखांरे काजेरे ॥ मात चावी हुवां लोकमें । कने बेसण वाला पिणलाजेरे ॥धि०॥७॥ डूमजाणी नर नारिया । एकल दुर तजीजेरे ॥ घर हाण हांसी हुवे लोकमें । डूसड़ो काम न किजेरे ॥

धि॰ ॥ ८ ॥ क्यां स्युं प्रकत पाछि मिले नहीं । क्यां स्युं न मिले सभावोरे ॥ दुःख वांधो हुवे एकला । केइ करे घणा अन्यायोरे ॥ धि॰ ॥९॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । वले कुड़ कपटरो चालोरे ॥ ते गणछोडि हुवे एकला । ओरां सिरदे आलोरे ॥ ॥ धि॰ ॥ १० ॥ क्यां स्युं पोते आचार पले नहीं । पिण समकितराखे चोखोरे ॥ गण छोडि हुवे एकला । नहीं काढे ओरांमे दोषोरे ॥ धि॰॥११॥ पछे मोह कर्मउदै हुवां । कुड़ कपट चलावेरे । फिरती भाषा वोले घणी । अणहुंता अवगुणगावेरे ॥धि॰॥१२॥ गामां नगरां विचरतां । लोक पुछे हर कोइरे ॥ थे साधां मांस्युं निकली । आतमा कांय विगोइरे ॥ धि॰ ॥ १३ ॥ जव केइक वोले पाधरा । केइ वोले आल पंपालोरे ॥ केइ क्रोध करी महा प्रजले । केइ मुंह करे विकरालोरे ॥ धि॰ ॥ १४ ॥ केई दोषण ढांके आपरा । ओरांमें वतावे चुकोरे ॥ पुछ्यां न वोले पाधरा । पुजाअधारा भुखोरे ॥ धि॰ ॥१५॥ केइक लाला लोलो करे । आहारादिकरा लपटीरे॥ पुरो निकाल काढे नहीं । असा छै एकल कपटीरे ॥ ॥ धि॰ ॥ १६ ॥ आय साधाने वनणा करे । महा माठा परिणामोरे ॥ विनो नमाइ करे घणी । एक

पेट भरणारे कामोरे ॥ धि० ॥ १७ ॥ समझु नरनार बान्दे नहीं। आज्ञा लोप एकलो देखोरे ॥ आहार पाणी न दे भावस्युं। तो हुवे साधांरो द्वेषीरे ॥धि०॥ तेछल छिद्र जोंवतो रहै। दुष्ट प्रणामादिन काढेरे ॥ च्यार तिर्थ स्युं तपतो रहै। मोषतणी व्रत बाढेरे ॥ ॥ धि० ॥१९॥ दग्ध बीजकरे आकरो। ओरांरे घाले संकोरे ॥ भर्ममें नाखि लोकने। असोछै एकल बंकोरे ॥ धि० ॥२०॥ चित भरमो फिरतो रहै। तिण साची समकित नावेरे ॥ कदाच ज्यो आइ हुवे। तो थोड़े मांह गमावेरे ॥ धि० ॥२१॥ मांगने खाणी पारको। बले कने साधुको भेषारे ॥ सरधा राखि निर्मली। कोइक विरला देखोरे ॥ धि० ॥२२॥ च्यार तिर्थने ओर लोकमें। फिट २ सगले कहाणोरे ॥ जो अवगुण आणे आपमें। साची सरधारा ए अहनाणोरे ॥ धि० ॥२३॥ बले अवगुण काढे तुरत तेहनो तोही कुलष भाव नहीं आणेरे ॥ अभिन्तर समकित परगमी। तेतो मोटा उपगारी जाणेरे ॥ धि० ॥ ॥२४॥ बोध सम्यक्त पायो ज्यांकने। त्याने दिठां हर्षत थायोरे ॥ विनै भगत करे घणी। तो साची सरधा दिसे तिणमांयोरे ॥ धि० ॥ २५ ॥ साध साधवि ने सरधा तणा। पुंठ पाछै गुणगावरे ॥ एकण धारा बोलतां। प्रतीत इणविध आवेरे ॥ धि० ॥ २६ ॥

दोहा । भला कुलरी बिगड़ो तीका । जीवे वि राणा साथ ॥ ज्युं साधु बिगड्यो आचार थी । किण बिध आवे हात ॥ १ ॥ आज्ञा लोपी कृतगुरुतणीं । तिणने ओरमा छै गलिहार ॥ आप छान्दे एकला फिरे । ज्युं ढोर फिरे कलिहार ॥ २ ॥ बिगड़ा धानरी पाखती । बैठां दुरगंध आय ॥ ज्युं एकल री संगत कियां । बुध अकल पत जाय ॥ ३ ॥ जो एकल ने आदर दिये । तो बधे घणो मिथ्यात ॥ फूट पड़े जिनधर्म में । तेसुणजो विख्यात ॥ ४ ॥

ढाल चौथी ।

(धन्य २ मेतारज मुनि एदेशी)

जिण सांसणमें आगन्यांबडो । आतो बांधिरे श्री भगवन्तपाल ॥ ए तो सजन असजन भेला रहै । छांदे चालेरे प्रभुबचन संभाल ॥ बुधवन्ता एकल संगत न कीजिय ॥ १ ॥ छांदो रुध्यां विण संजमन निपजे । उताध्ये नरे चौथा अध्येन मांह ॥ गाथा आठमी मांहि कह्यो । एतो जोवोरे चोडे सुतरो न्याय ॥ ॥ बु० ॥ २ ॥ छांदो रुंध्यां बिण संजम निपजे । तो कुण चालेरे परनी आज्ञा मांय ॥ सहु आपमते हुवे एकला । षीणमें भेलारे षीणमें बिखर जाय॥बु०॥३॥ जो आपमते हुवे एकला । तो सांसणमेंरे पड़ जाय घमडोल ॥ एहवा अपछंदारी करे थापना । ते भेद

न पायोरे भुलां रह गइ भाल ॥ बु० ॥ ४ ॥ बैराग घटे तिणरी पाखतो । कोउणरी संगतरे आवे मुल मिथ्यात ॥ कि साधां सुं उतर जाय आसता । साचो श्रध्यांरे एकलरी बात ॥ बु० ॥ ५ ॥ भिड़कावे साधांरी समदायथी । आपसमें रे बोले बिरुवा बैण ॥ बले छिद्र दाबे एक एकने । साध दिठांरे बले अंतर नयैण ॥ बु० ॥ ६ ॥ नकटादिक चोरकुसिलिया । बधी चावेरे आप आपणी न्यात ॥ ज्युं भाग लने भागल मिलें । घणो हरषेरे कर मनोगत बात ॥ बु० ॥ ७ ॥ चोरी जारी खुन अकारज कियां । राजा प्रकड़ेरे सिर छेदे घोड़ ॥ बले देशनिकालादि काढियां । त्याने राखेरे भील मैणादिक चोर ॥ ॥ बु० ॥ ८ ॥ ते बिगाड करे तिण देशनो । भील मैणारे त्याने आणी साथ । दुःख उपजावे रेत गरीबने । धन लेज्यावेरे त्यांरी कर कर घात ॥बु०॥९॥ त्याने असणादिक आदर दियां । लफरो लागेरे भाग्यां राजारी आण ॥ कदा राय कोपे तो धन खोसले । जीवां मारेरे तिणरा एफल जाण ॥ बु०॥१०॥ इणही दिष्टंते साधांरे समदायमें । दोष सेव्यांरे साध काढे गणवार ॥ ते आप छांदे एकला रहे । कि भागलरे आगे पाछे फिरे लार ॥ बु० ॥ ११ ॥ तेतो साधांरा ओगण बोलता फिरे । मुख मीठोरे खेले अंत

रघात ॥ ओछी बुधवालाने विगोवता । कुड़ीकथ णीरे कुड़ीकर कर बात ॥ बु० ॥ १२ ॥ त्यांरी भाव भगत संगत कियां । तिण भांगीरे श्रीजिनवर आण। तेती दुःख पामे इण संसारमें । उतकृष्टोरे अनन्ता जन्म मर्ण जाण ॥ बु० ॥ १३ ॥ चोरने आहार आदर दियां । अहलोकरे धनजीवरो विणास ॥ भेषधारी भागल एकल तणी । संगत किधांरे बंधे कर्म तणीरास ॥ ब० ॥ १४ ॥ उसन्ना कुसिल्याने पासत्था । अपछंदारे संसतादिक जाण ॥ त्याने तिरथमें गिणवा नहीं । कर लीज्योरे जिन वचन प्रमाण ॥ बु० ॥ १५ ॥ एतो हेलवा निन्दवा जोगछे। खोटकरणोरे त्यारि गिनातामें साख ॥ त्यांरो संग परचो करणो नहीं । सुत्रमेंरे भगवन्त गया भाष ॥ ॥ ब० ॥ १६ ॥ आतो अनन्त संसारे आरे कियो एहलोकरे परलोक हुसी भंड ॥ त्यांने आहार पाणी उपध दियां । तिणने आवेरे चौमासीरो दण्ड ॥ ॥ ब० ॥ १७ ॥ भेला बैठ सीझाय करणी नहीं । नहीं करणोरे त्यांरे साथ बिहार ॥ यांरो संग परचोकरतां थकां । ज्ञानदर्शणरे चारित्ररो बिगार ॥ ॥ ब० ॥ १८ ॥ एतो चरित्र कह्यो एकलतणो । भवजीवानेरे प्रतिबोधण काज ॥ इम सुणरने नर नारिया । सतगुर सेव्यांरे पामे मुगतनोराज ॥ब०॥१९॥

इति श्री एकलरो चौढालियो समाप्त ।

शुद्धाशुद्ध पत्र।

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२	१७	तुंही	तुंही
२	२०	दसमी	दशमी
४	१	जिस्तवन	जिनस्तवन
५	१८	घ्यायने	ध्यायने
७	६	जिन	जन
१०	१६	द्वेग	द्वेष
१२	५	वंबीत	वंछित
१२	१८	श्रेणी	श्रेणी
१३	६	तोड़ो	तोड़ी
१५	७	लागोछोजो	लागीछोजी
१६	१६	संगमे	संगम
२७	१४	अग्र:	अघ:
३२	१२	अजीवाका	अजीवका
३३	१	लैण पुर्न	लैनपुन्न
३३	१५	आत्र	आश्रव
३३	१६	घ्राण	प्राण
३४	१०	घ्राण	प्राण

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
३७	३	अन्तराहित	अंतरहित
४०	६	भांगा १२	भांगा ९
४४	६	धर्मांस्तिकाय	धर्मास्तिकाय
५०	२१	जोव	जीव
५५	१४	जीव निर्जरा	जीव संवर निर्जरा
५८	१७	एकको	एकके
७८	२०	उगणीस	तेवीस
८४	७	वंधे	वधे
८५	४	आश्रत	आश्रव
९८	१४	निवद्य	निर्वद्य
१०५	१	द्रव्यता	द्रव्यतो
१०५	१६	रहित	सहित
१०६	१	रहित	सहित
११०	१०	आदरावा	आदरवा
११०	१५	आनरवा	आदरवा
१२३	१०	ओदरिक	ओदारिक
१२८	११	ल्पयोपम	पल्योपम
१३२	६	उत्तकुरुकां	उत्तरकुरुका
१५०	२०	आलाउ	आलोउं
१५१	४	तस्म	तस्स
१५२	१५	अनेक क्रिडा	अनंग क्रिडा

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
१६४	१४	धम्मामंगलं	धम्मोमंगलं
१७३	८	त्वारो	त्वांरो
१७८	१	काँघी	किधी
१८३	१	जान	दान
१८३	६	किघी	किधी
१८४	४	क्रोड़मम	क्रोड़मण
१८५	११	युही	यु'ही
२०१	२	पुन्या	पुन्य
२०१	४	विविघ	विविध
२०२	८	उत्म	उत्तम
२०३	१७	इद्रादिक	इन्द्रादिक
२०६	१०	दूध	दूध
२०६	२०	होमी घणेरा	होसी घणेरा
२०६	२१	जिमस्यु	जिभस्युं
२०७	२०	प्रमु	प्रभु
२१४	१३	भस्तुति	स्तुति
२२६	७	दवदन्ती	दवदन्तो
२३२	१०	पटघटपट	पट पट घट
२३८	१५	सुगत	सुगत
२४१	२१	विचरितां	विचरतां
२५२	८	मुनिसक	मुनिसक

पृष्ठांक	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२५३	६	मुन्दि।	मुनिन्द
२५४	५	बोलिगो	बोलणो
२५४	७	गीतगावाणो	गीत गावणो
२५६	१२	मामधी	माघधी
२७४	१७	पुजा श्रधा	पुजा श्लाघा
२७६	१५	कोजिय	कौजिय
२८७	१	भाल	भोल

पाठकों से सविनय प्रार्थना है की पेज नम्बर २५७ में भुलसे श्री सिद्ध भगवानकी पैंतीस बाणी छप गइ है उसे पाठकगण श्री अरिहन्त भगवानकी पैंतीस बाणी पढ़ें और अपनी पुस्तक में भुल शुद्धा-रलें।

पेज नं २२४ में अथः मरियादा उपर ढाल छपी हैं उसे मुनिगुण वर्णनकी ढाल पढ़ें।

सत्तमलजी स्वामोक्त

श्रीडाल गणी के गुणाको ढाल

(चलोरी सखी छवि देखनकु रथमें चढ़े रघुनन्दन आवत है एदेशी)

पेखोरी भविजिन राज समी। गणी राज छटा दरसावत है ए आंकडी॥ भिक्षू सप्तम पाटे सोहत। मघवा सम गणी राज कहावत है॥ पेखोरी ॥ १ ॥ तात कनइया मात जडावें। तसुनन्दण मन भावत है॥ पेखोरी ॥ २ ॥ थिर सुमेर गम्भिर स्वयंभु। बचमहाबिर सोधरावत है॥ पेखोरी ॥ ३ ॥ वाण सुधाम्रृत वायत स्वामी। भवि सुण सुण हर्षावित है ॥ ४ ॥ भविजन पेखत गणी तुम, आनंद देखत। तनुलोम लोम हुलसावत है॥ पेखोरी ॥ ५ ॥ कल्प तरु सम नाथ हमारो। सेवंत वंछित पावत है ॥ पेखोरी ॥ ६ ॥ उगणीसे पेंसठ पट मोत्सवमें। सत्तमल गुण गावत हैं॥ पेखोरी भविजिन राज समी गणी राज छटा दरसावत हैं ॥ ७ ॥ इति समाप्त ॥

सवैया

रुप अनुप सवैं जगछादित वाणी सुधासम है मनमानी।
तेज दिवाकर है जगमोहन साहर्ना वाच सदा सुभध्यानी॥
देव तरु सम दीन दयालजी बंछित पुरण हैं सुभ ज्ञानी।
दीन ऊधारण पोतें सु जाहिर डाल गणीन्द वडोवरदानी॥

इती

प्रस्तावना

मैंने जो यह पुस्तक श्रावक ईसरचन्दजी चोपड़ा मु० गंगाशहरवालों के कहने से स्वामीजी श्रीभीक्षणजी कृत चर्चाके बोलोंके थोकड़ा व पूज्य गणीराज के गुणोंके स्तैवन सझ्याय ढाल छन्द सवैया वगैरः संग्रह करके मेरी बुद्धि प्रमाण व श्रावक नथमलजी बोथरा की सहायता से यथार्थ रीति सुधार कर भव्यजीवों के सीखने व पढ़ने के लिये "जिनज्ञान दर्पण" छपवाकर प्रगट करी है सो जो कोई भूल चूक रही हो उसे गुणीजन शुद्धकर पढ़ें पढ़ावेंगे। आशा है कि मेरी तुच्छ बुद्धि की तरफ ख्याल न करेंगे। जयणायुत पढ़ें पढ़ावें अगर मेरी भूल से श्रीजिनेश्वरदेव के वचनों के विरुद्ध वचन भूलसे छपा हो तो मुझे मिच्छामि दूकडं।

आपका हितेच्छु—

श्रावक महालचन्द बयद।

पुस्तक मिलने के पते :—

भैरुंदान ईसरचन्द चोपड़ा
मु० गंगाशहर, जि० बीकानेर।

भैरुंदान ईसरचन्द चोपड़ा
नं० २ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता।